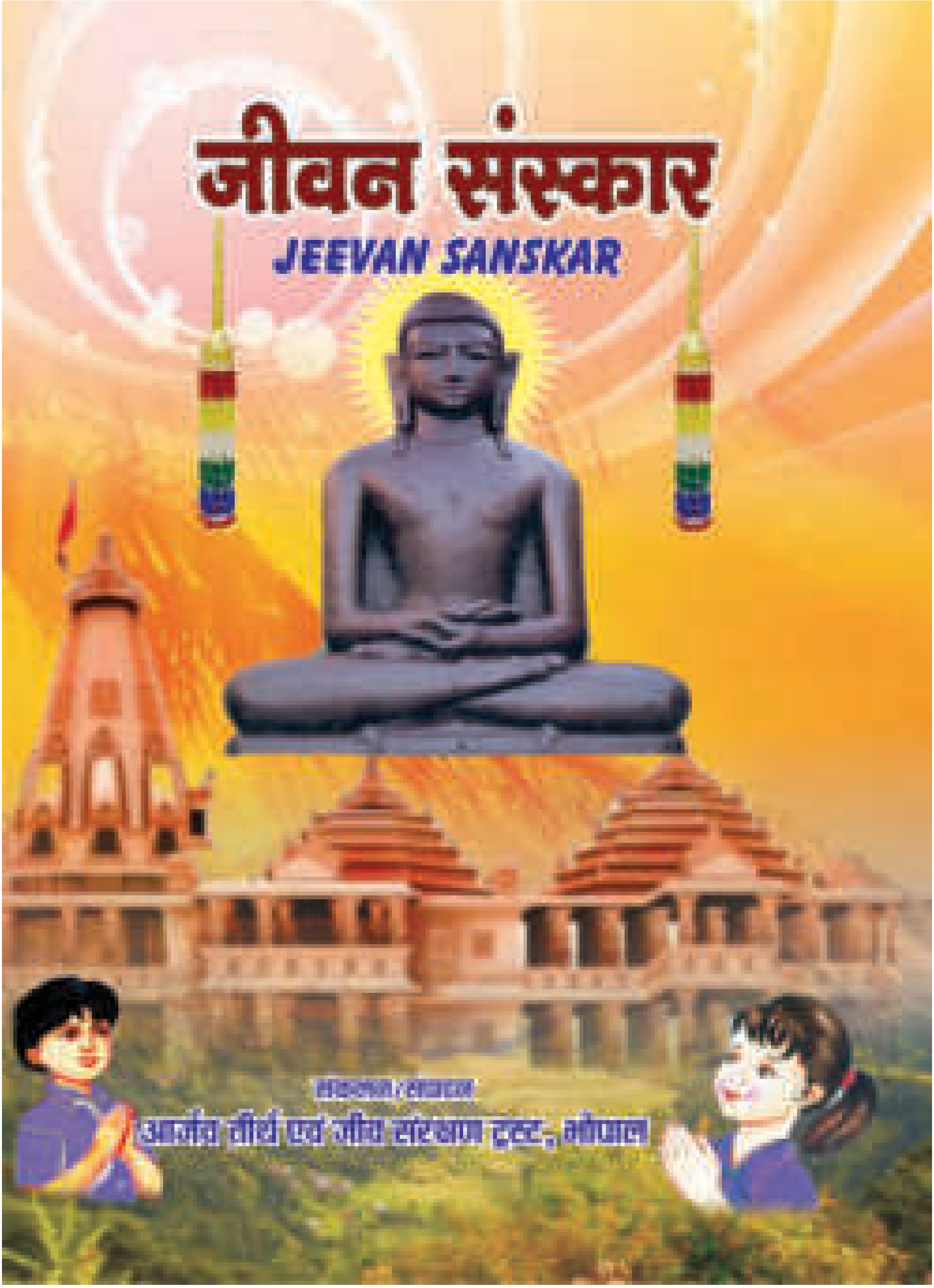

जीवन संस्कार
JEEVAN SANSKAR
आर्जव तीर्थ एवं जीव संरक्षण ट्रस्ट, भोपाल

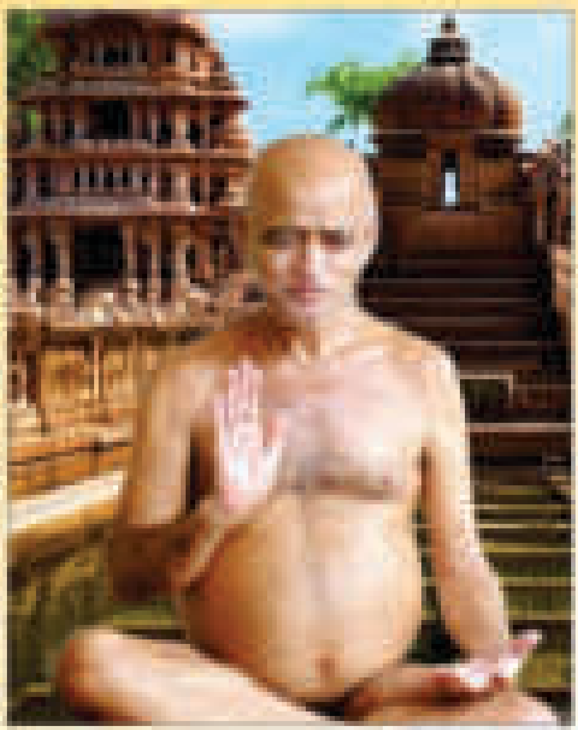

आचार्य प्रवर श्री १०८
विद्यासागरजी महाराज

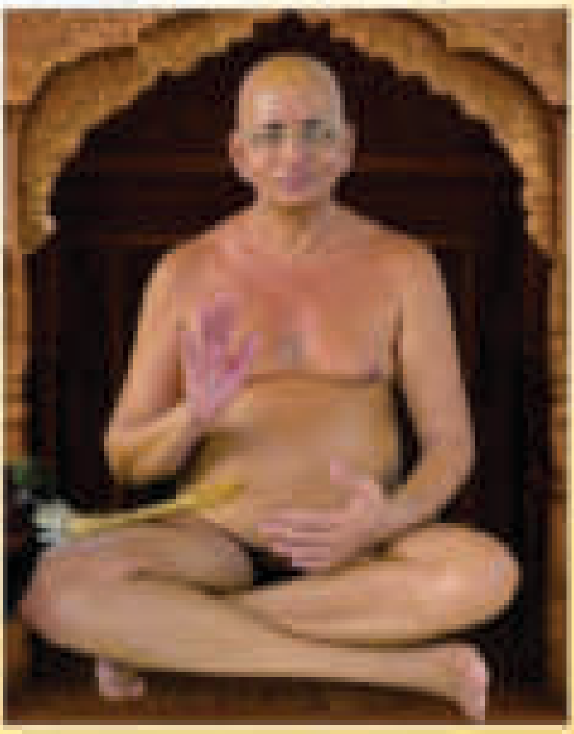

धर्म प्रभावक आचार्यश्री १०८
आर्जवसागरजी महाराज

जीवन संस्कार

संकलन/संपादन
भाव विज्ञान पत्रिका संपादक मण्डल

जीवन संस्कार

आशीर्वाद : आचार्य प्रवर श्री विद्यासागर जी महाराज एवं संघस्थ साधुबृंद

प्रेरणा व संयोजना : परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित धर्म प्रभावक आचार्यश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज

संकलन संपादन : भाव विज्ञान पत्रिका संपादक मण्डल

संस्करण अष्टम : 2023

पावन संदर्भ : पावन वर्षा योग 2023, अशोकनगर (म.प्र.)

मुद्रक : पारस प्रिन्टर्स
207/4, सांईबाबा काम्प्लैक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल
फोन : 0755-4260034, 9826240876

प्रकाशक व प्राप्ति स्थान : आर्जव तीर्थ एवं जीव संरक्षण ट्रस्ट
4, लाईस कैम्पस, लक्ष्मी परिसर, नहर के पास
बावड़ियाकलाँ, भोपाल-462039
मो. : 7049004653, 9425011357, 9425601161,
9425601832, 7222963457
ई-मेल : aarjavteerth@gmail.com
: bhav.vigyan@gmail.com

जीवन संस्कार हेतु वेबसाइट एड्रेस: www.aarjavvani.com

मूल्य : पुनः प्रकाशन हेतु योगदान

विषय सूची

1.	प्रस्तावना	1
2.	धर्म निरपेक्ष नहीं सम्प्रदाय निरपेक्ष	3
3.	जैन धर्म व पाठशाला के नियम	6
	भाग- 1 - पाठ संस्कार	7
4.	वंदन गीत – हे प्रभु ज्ञान	8
5.	मंगलाचरण- प्रभु, गुरु वंदन	9
6.	कविता संस्कार – पाठशाला जाना	10
7.	कविता संस्कार – मां धर्म की पुस्तक	10
8.	प्रार्थना – दिनचर्या	11
9.	प्रार्थना – प्रभु पतित पावन	12
10.	प्रार्थना – वीर प्रभु की	13
11.	प्रार्थना-भोले भाले भगवन मेरे	14
12.	प्रार्थना – प्रातः उठकर	15
13.	कविता संस्कार – दो एकम् दो	16
14.	कविता संस्कार – नम्बर इज दा वन	17
15.	कविता संस्कार – जैन गान	18
16.	कविता संस्कार – ज्ञानी का ध्यानी का	19
17.	कविता संस्कार – णमोकार महामंत्र	20
18.	कविता संस्कार – मंगल क्या कहलाता है?	21
19.	कविता पाठ – अक्षर ज्ञान	22
20.	कविता पाठ – अंग्रेजी गिनती	23
21.	कविता पाठ – इन्द्रिय ज्ञान	24
22.	कविता पाठ – धर्म की रेल	25
23.	कविता पाठ – अहिंसा बोल	25
24.	कविता पाठ – प्रभु दर्शन	26
25.	कविता पाठ – गति ज्ञान	27

विषय सूची

26.	कविता पाठ – स्वस्थ शरीर, A.B.C., कभी न इतनी बात भुलाना	28
27.	कविता पाठ – धार्मिक उद्घोष	29
28.	धर्म पाठ – हमारे नारे	30
29.	धर्म पाठ – तीर्थंकर परिचय	31
30.	भावना गीत – प्रायश्चित्त-भावना, क्षमा-प्रार्थना	32
	भाग - 2 - पाठ संस्कार	33
31.	मंगलाचरण – चौबीस जिनवर, महावीराष्टक स्तोत्रम्	34
32.	प्रार्थना – ओम् मंगलम्	36
33.	गुरु समर्पण – नव प्रभात की....., गुरुवर पनाह में......	37
34.	प्रार्थना – जीवन हम आदर्श	38
35.	प्रार्थना – भावना दिन रात, मातृभूमि गान	39
36.	मंगलाचरण-परमेष्ठी स्वरूप	40
37.	दर्शन पाठ – दर्शनं देव देवस्य	41
38.	कविता पाठ – सच और सेवा	42
39.	सुप्रभात स्तोत्र	43
40.	कविता पाठ – सात दिनों की शिक्षा	44
41.	कविता पाठ – पांच पाप	45
42.	कविता पाठ – चार कषाय	46
43.	कविता पाठ – कषाय के दु:ख	47
44.	कविता पाठ – क्या कहते हैं अंक	48
45.	कविता पाठ – तीर्थंकरों के चिन्हों से शिक्षा	49
46.	कविता पाठ – खेल में जादू	52
47.	कविता पाठ – दिन में भोजन	52
48.	कविता अंग्रेजी – चौबीस तीर्थंकर	53
49.	जिनवर-स्तुति..., सिद्धों की श्रेणी में, समाधि-भक्ति	58
50.	बारह भावना, श्रेय भावना...	61

विषय सूची

51.	वंदन गीत- गुरुवर के दर्शन भये, धन्य मुनीश्वर	64
52.	धर्म पाठ – देव भक्ति का फल	65
53.	धर्म पाठ – गुरु भक्ति का फल	65
54.	धर्मघोष – अहिंसा उपदेश	66
55.	धर्मघोष – हैं तैयार	67
56.	पाठशाला गीत – हमारी पाठशाला	68
	भाग - 3 - पाठ संस्कार	70
57.	प्रार्थना – मिलता है सच्चा सुख	71
58.	मंगलाचरण – वंदन गीत	72
59.	भजन – जीवन के किसी....	73
60.	प्रार्थना – वीतराग सर्वज्ञ हितंकर	74
61.	गोमटेश स्तुति	75
62.	प्रार्थना – हे शान्त सन्त	76
63.	कविता पाठ – अष्टद्रव्य	77
64.	कविता पाठ – कभी न खाना	78
65.	कविता पाठ – मेरा संकल्प	78
66.	कविता पाठ – अष्ट मूल गुण	79
67.	कविता पाठ – छुक-छुक रेल	80
68.	कविता पाठ – पानी का धन	80
69.	कविता बोध – बोल सको तो	81
70.	कविता बोध – अभक्ष्य त्याग, आहार शुद्धि	81
71.	कविता बोध – छोड़ो ये टी.वी., फास्ट फूड नहीं	82
72.	कविता बोध – इनसे यह सीखो	83
73.	काव्य बोध – हम मोक्ष पायेंगे	84
74.	काव्य बोध – जग से पार उतरना है	85
75.	काव्य बोध – नयी परम्परा	86

विषय सूची

76. काव्य बोध – हार नहीं होती 88
77. धर्मपाठ – सच्चे देव शास्त्र गुरु 89
78. जैन भव्यात्माओं के कर्त्तव्य 90
79. देव दर्शन का माहात्म्य 92
80. देव दर्शन विधि 93
81. देव दर्शन का उद्देश्य व भावना 95
भाग - 4 - पाठ संस्कार 96
82. प्रार्थना – मेरी भावना 97
83. मंगलाचरण – चौबीसी का रंग व मोक्ष परिचय 97
84. वंदन गीत – आये हैं मेरे गुरुवर..... 98
85. वंदन गीत – समता को धारने वाले 99
86. प्राकृत भक्ति – पंच महागुरु भक्ति 101
87. दर्शन स्तुति – अति पुण्य उदय 102
88. प्रतिक्रमण – (जैन श्रावक योग्य) पापों का पश्चात्ताप 103
89. धर्म पाठ – चतुर्विध संघ 110
90. धर्मपाठ – पूजा का फल 111
91. धर्म पाठ – गुरु उपास्ति 112
92. धर्म पाठ – गुरु सेवा का फल 113
93. गुरु भक्ति – सिद्ध व श्रुत भक्ति 114
94. गुरु वंदना – आचार्य भक्ति 115
95. अद्याष्टक स्तोत्र 116
96. सामायिक – सम्यक् ध्यान 117
97. सामायिक – सामायिक विधि 118
98. सामायिक – साम्य भावना 121
99. बारह भावना – राजा राणा.... 123
100. समाधि भावना – दिन रात मेरे 124
101. भक्ष्य पदार्थों की मर्यादाएँ 125

विषय सूची

102.	प्रतिदिन के नियम	126
103.	सूतक विधि	127
104.	शाकाहार व अहिंसावाणी	128
105.	नारी के कर्त्तव्य	131
106.	रजस्वला स्त्री के कर्त्तव्य	132
107.	अहिंसा सूत्र-गान	138
108.	विद्यासागर वंदनाष्टक	140
109.	शान्तिसागर विनयाञ्जलि अष्टक	142
110.	वीतराग भजन - करते रहें गुणगान	144
111.	वीतराग भजन - रोम रोम से निकले	144
112.	वीतराग भजन - जब कोई नहीं आता, ऐसे मुनिवर	145
113.	गुरु समर्पण - श्रद्धा हमारी भाषा	146
114.	गुरु समर्पण - संत साधु	147
115.	गुरु समर्पण - परम दिगम्बर	147
116.	गुरु समर्पण - आत्मशक्ति से	148
117.	स्तोत्र- वीतराग स्तोत्र	149
118.	स्तोत्र- परमानन्द स्तोत्र	150
119.	गुरु समर्पण - उड़ा जा रहा है...., दुनियां में ऐसा कहाँ......	151
120.	शिक्षा गीत - निज घर आये, जिया कब तक....	152
121.	शिक्षा गीत - पाना नहीं जीवन को	152
122.	शिक्षा गीत - ये तो संसार, गुरुवर तेरे चरणों	153
123.	जिनवाणी वंदन - वीर हिमाचल तें, तीर्थंकर की	154
124.	जिनवाणी वंदन - सांची तो गंगा	155
125.	जिनवाणी वंदन - जिनवाणी मोक्ष नसैनी	155
126.	भजन- तुम्हें छोड़कर	156
127.	जिनवाणी स्तुति-जिनवाणी जग मैया..... माता तू दया......	157
128	शास्त्र भक्ति - जिनवाणी माता..........., हे शारदे माँ	158
129.	मॉडल प्रश्नपत्र	159

एसो पञ्च णमोयारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ मंगलं ।।

चत्तारि मंगलं
अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा
अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि
अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि
साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

प्रस्तावना

डॉ. अजित जैन, भोपाल

विगत वर्षों से संत शिरोमणी आचार्य प्रवर श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज के सानिध्य में चातुर्मास, शीतकालीन, ग्रीष्मकालीन आदि अवसरों पर तमिलनाडु, कर्नाटक, महाराष्ट्र, म.प्र., उ.प्र., झारखंड, दिल्ली, राजस्थान, गुजरात आदि राज्यों के विभिन्न जिलों में आरम्भ की गई नई अथवा पुरानी पाठशालाओं को निकट से जानने के अवसर मिले। उससे लगा कि जैन धर्म के इतिहास (History), संस्कृति (Culture), दर्शन (Philosophy), कर्म सिद्धांत (Karma Theory) के विषय में उत्सुकतापूर्वक जानने व पढ़ने का सर्वश्रेष्ठ एवं सुलभ स्थान पाठशाला है। पाठशाला में बचपन से ही अमूल्य संस्कारों के बीज का वपन किया जा सकता है।

आज की शिक्षा लौकिक ज्ञान तो प्रदान करती है, किन्तु प्रकृति एवं समाज के प्रत्येक व्यक्ति में संवेदनशीलता जागृत नहीं कर पाती है। संवेदन शून्य व्यक्तित्व उच्च शिक्षित होने के बाद भी धर्म, समाज और राष्ट्र के लिए उपयोगी साबित नहीं हो पाता है। परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व के प्रत्येक व्यक्ति तक संस्कार प्रवाहित होना चाहिए। संस्कार कोई बन्धन नहीं है, वह तो प्रेरणा देने वाली शक्ति है। संस्कार और जीवन शैली दोनों का अर्थ एक ही है और दोनों का लक्ष्य भी एक ही है कि सुखपूर्वक सार्थक जीवन जीना। शिक्षा और संस्कार दोनों का जोड़ा है। शिक्षा से ज्ञान प्राप्त होता है और संस्कार से जीवन को अर्थ मिलता है। संस्कार प्रवाह केवल बच्चों के लिए ही आवश्यक नहीं है। संस्कार बड़ों के लिए भी आवश्यक है। संस्कारित माता-पिता के ही संस्कारित बच्चे होते हैं। संस्कार का झरना यदि ऊपर से प्रवाहित हो तो वह बच्चों के हृदय को गहराई से प्रभावित करता है। शिष्टाचार और संस्कार में अन्तर होता है। केवल व्यवहार में शिष्टाचार हो सकता है, किन्तु सुसंस्कार से शिष्टाचार का पालन तो होता ही है, साथ ही हृदय में प्रसन्नता, विवेक, उत्साह और सफलता का संचार भी होता है।

आचार्यश्री से ''बचपन का संस्कार'' विषय पर प्रवचन सुनने का मौका मिला। संस्कार बचपन में दिए जाते हैं न कि पचपन में। संस्कार कौन देता है? किसको दिए जाते हैं? यह प्रवचन सभी के दिलों में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन लाने वाला था। बचपन में दिया गया थोड़ा-सा संस्कार भी बहुत बड़ा फल देता है। आज की युवा पीढ़ी सुसंस्कारों के अभाव में व्यसनों के गर्त में जा रही है तथा आधुनिकता की चकाचौंध में एवं टी.वी. में कई गन्दे सीरियल आदि को देखकर दिशाहीन हो रही है। ऐसे समय पर यह प्रवचन निश्चित ही चमत्कारिक परिवर्तन अवश्य लाएगा। इसी उद्देश्य से

बचपन का संस्कार को पाठशाला के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने के लिए यह कृति मानव को सही-सही दिशा बोध देने में अमृत के समान लाभदायक सिद्ध होगी, ऐसी मंगल भावना है।

हमारी समिति द्वारा प्रकाशित 'भावविज्ञान' पत्रिका में भी 'घर-घर में चले पाठशाला' इस उद्देश्य से 'भावविज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता' प्रस्तुत की जाती है जो अनेकान्तमय ज्ञान में वर्धन में अत्यन्त उपयोगी है साथ ही इस कृति में लोक प्रचलित कविताएँ और आचार्यश्री द्वारा रचित नेक जीवन, तीर्थोदय काव्य, आर्जव कविताएँ आदि कृतिओं से एवं नैतिक शिक्षा-रेवाड़ी, धर्मोदय प्रकाशन-सागर, आचार्य ज्ञानसागर छात्रावास-सांगानेर तथा जिनवाणी संग्रह आदि से विषय सामग्री का संग्रह किया गया है। समिति इन सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है।

नई पीढ़ी में संस्कारों का उदय करने के लिए ऐसी पुस्तक की आवश्यकता महसूस की गई जिससे जैनधर्म से संबंधित सभी आधारभूत ज्ञान उपलब्ध हों और बच्चे खेल-खेल में उत्सुकतापूर्वक संस्कारित हो सकें। साथ ही इस पुस्तक में पाठशाला को सुचारू रूप से संचालित करने की सभी जानकारी उपलब्ध हो सके। इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु परम पूज्य आचार्यश्री आर्जवसागर जी महाराज द्वारा प्रदत्त इस अद्भुत कृति का ''जीवन संस्कार'' नाम सार्थक है। सभी जैन साधर्मी (आबालवृद्ध) बन्धु भी इस कृति से ज्ञानार्जन कर सकते हैं। इत्यलं!

आचार्यश्री के चरणों में सविनय कोटि-कोटि नमोस्तु।

श्रुतपञ्चमी 2011 — भगवान महावीर आचरण संस्था समिति, भोपाल

- आचार्य श्री विद्यानन्द जी

अन्याय न करें, न होने दें

भारत धर्म-प्रधान देश है। प्राचीन काल में यहाँ जो राजा होते थे, वे प्रजापालक और धर्म रक्षक कहलाते थे। प्राचीन वाङ्मय में ऐसे उल्लेख मिलते हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि राजा को भी कुछ परम्परागत मर्यादाओं का पालन करना होता था। जैसे ऋषियों के आश्रम में राजा भी शस्त्र लेकर नहीं जा सकता था, आखेट नहीं कर सकता था। वह आश्रम की पवित्रता की रक्षा करता था। इसी कारण मुनियों के आश्रम में राजा अत्यन्त विनयपूर्वक, शस्त्र और राजचिह्न उतारकर जाता था। राजा चाहे किसी संप्रदाय से संबंधित हो, वह अन्य संप्रदाय वालों के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार और अन्याय नहीं करता था और न ऐसा होने देता था। वह समस्त प्रजा को अपने पुत्र के समान समझता था और उसके साथ पुत्र के समान व्यवहार करता था। इस परम्परा का निर्वाह वहाँ भी होता था, जहाँ राजसत्तात्मक प्रणाली थी। यह एक आदर्श परम्परा थी, जिसे आज की भाषा में संप्रदाय-निरपेक्ष कहा जा सकता है।

जनक : समता के

वाल्मीकि रामायण, रामायण-काल की दर्पण कहलाती है। उसमें अध्यात्मवेत्ता राजा को सम्प्रदाय-निरपेक्ष परम्परा पर निम्नलिखित शब्दों में प्रकाश डाला गया है।

ब्राह्मणा भुञ्जते नित्यं, नाथवन्तश्च भुञ्जते।
तापसाः भुञ्जते चापि, श्रमणाश्च ते भुञ्जते ।।

(वाल्मीकि रामायण, 14-12)

(राजा जनक के महलों में) ब्राह्मण भी भोजन करते हैं, नाथधर्मी (तीर्थंकर क्षत्रिय) भी भोजन करते हैं, तापस भी भोजन करते हैं, और श्रमण (दिगम्बर मुनि) भी आहार लेते हैं।

इसका आशय यह है कि किसी भी सम्प्रदाय का कोई साधु राजा जनक के महलों में जाता था, उसके साथ राजा जनक सम्प्रदाय के विकल्प में न पड़कर नृपोचित सम्प्रदाय-निरपेक्ष कर्त्तव्य का ही निर्वाह करते थे।

राष्ट्रधर्म सर्वोपरि

इसके पश्चात् हम महावीर-युग में पहुँचते हैं। भगवान महावीर वैशाली गणराज्य के क्षत्रियकुण्ड नगर में उत्पन्न हुए थे। इस गणराज्य में अष्टकुलों के नौ गुण सम्मिलित थे। इस गणराज्य के प्रायः सभी निवासी (प्रेसीडेंट) और महावीर के नाना महाराज चेटक, क्षत्रियकुण्ड के गणपति और महावीर के पिता राजा सिद्धार्थ तेईसवें जैन तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के अनुयायी थे। जब महावीर घोर साधना और तपस्या द्वारा वीतराग और सर्वज्ञ-सर्वदर्शी हो गये और प्राणिमात्र के कल्याण के लिए उपदेश देने लगे, तब वैशाली के लोग भगवान महावीर को चौबीसवाँ तीर्थंकर मानकर उनके अनुयायी बन गये। इस प्रकार वैशाली की जनता जैनधर्मानुयायी थी; किन्तु वैशाली गणराज्य ने जैनधर्म को कभी राष्ट्रधर्म घोषित नहीं किया।

स्वागत सबका

यह गणसंघ, वैशाली में भगवान महावीर के पधारने पर जितने उत्साह से उनका स्वागत करता था, उतने ही उत्साह से महात्मा बुद्ध का स्वागत करता था। यहाँ जो सुविधाएँ जैनों को उपलब्ध थी, वे ही सुविधाएँ ब्राह्मणों, बौद्धों और आजीवकों को भी प्राप्त थी।

इस गणराज्य में धर्म की तो प्रतिष्ठा थी, किन्तु किसी मत या संप्रदाय विशेष को अन्य सम्प्रदायों की अपेक्षा विशेष सुविधा नहीं थी। शासनतन्त्र सबके साथ समान व्यवहार करता था।

सम्प्रदाय-दृष्टि महत्वहीन

वर्तमान इतिहास में भारत का सर्वप्रथम सार्वभौम सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य था। विश्वास की दृष्टि से वह जैन था, किन्तु वह भी इस संदर्भ में वैशाली के आदर्शों से अनुप्राणित था। उसकी शासन-व्यवस्था में सांप्रदायिक दृष्टि का कोई स्थान या महत्व नहीं था।

मानवोचित व्यवहार

मौर्यवंश के प्रतापी सम्राट् अशोक का राज्यकाल तो भारतीय इतिहास में स्वर्णकाल के रूप में अभिहित किया ही गया है। अपने विश्वास-से-भिन्न संप्रदायों के साथ उसका व्यवहार न्यायपूर्ण, तर्कसंगत एवं मानवोचित था। कलिंगयुद्ध में तड़पते घायलों एवं लाशों को देख उसका दिल करुणा से भर उठा और अहिंसा पर उसकी दृढ़ आस्था हो गयी। तदुपरान्त उसकी राजनीति इस आस्था से प्रभावित रही। उसने जनता के कल्याण और मार्गदर्शन के लिए अपने विचार शासनादेश के रूप में स्तम्भों और शिलाओं पर उत्कीर्ण करवाकर एक श्रेष्ठ कार्य किया जो कार्य देश के विभिन्न सम्प्रदायों के सद्भाव प्रसारित करने की उत्कृष्ट इच्छा को अभिव्यक्त करता है।

विश्वास की दृष्टि

सम्राट अशोक के पश्चात् उसके पौत्र सम्राट सम्प्रति ने भी अपने पितामह का अनुसरण किया और अपने राज्य के असाम्प्रदायिक स्वरूप की रक्षा के लिए निरन्तर सजग रहा। यद्यपि वह विश्वास की दृष्टि से जैन था, किन्तु उसने शासन को कभी साम्प्रदायिक नहीं होने दिया। उसने सभी सम्प्रदायों में सद्भाव बनाये रखने का पूरा प्रयत्न किया। इसके लिए उसने अपने पितामह अशोक के समान शिलाओं और स्तंभों पर लेख अंकित कराये। कुछ विद्वानों की तो यह धारणा है कि विभिन्न प्रदेशों के नाम पर जो स्तंभ और अभिलेख मिलते हैं वे अधिकांश सम्राट सम्प्रति के हैं।

सब समान, सबका सम्मान

इसी प्रकार ईस्वी पूर्व प्रथम शताब्दी में हुए सम्राट खारवेल के ऐतिहासिक हाथीगुम्फा-शिलालेख में एक पंक्ति इस प्रकार उत्कीर्ण हुई है - "सव्व ब्राह्माणानों व पानं भोजनं ददादि। अर्हतानं समणानं च ददाति सत सहस्सेहिं"। (खारवेल) सभी (लाखों) ब्राह्मणोंको जल और भोजन देता है तथा लाखों आर्हतों और श्रमणों को जल और भोजन देता है।

संसार का गुरु

जब तक हमारे देश भारत का यह असाम्प्रदायिक स्वरूप रहा, तब तक देश में समृद्धि रही, सम्प्रदायों में पारस्परिक सद्‌भाव रहा और हमारा देश संसार का गुरु कहलाता रहा, किन्तु जबसे साम्प्रदायिक शक्तियाँ प्रबल हुई हैं, तब से हमारा देश प्रगति और समृद्धि की दौड़ में पिछड़ गया है।

धर्म है भारत की आत्मा

भारत को संविधान ने सैक्यूलर घोषित किया है। अंग्रेजी के इस शब्द का अर्थ अज्ञानतावश धर्म-निरपेक्ष किया गया। भारत ने संसार को धर्म दिया, इसीलिए वह महान कहलाता है। धर्म ही भारत की आत्मा है, सम्बल है। क्या धर्म से निरपेक्ष (उदासीन) रहकर भारत जी सकेगा? सैक्यूलर शब्द से संविधान-निर्माताओं की मंशा यह कभी नहीं थी कि राष्ट्रीय स्तर पर धर्म की उपेक्षा की जाए।

धर्म के मायने

धर्म का अर्थ सम्प्रदाय नहीं है धर्म का अर्थ है-आत्मा का शुद्ध रूप, शुभ रूप, नैतिक रूप, सदाचार। आत्मा का जो शुभ रूप है, क्या उससे निरपेक्ष रहा जा सकता है? नहीं। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह धर्म है। इन नैतिक मूल्यों के बिना देश और व्यक्ति उच्छृंखल, स्वच्छन्द हो जाएगा। वस्तुतः सैक्यूलर का अर्थ है सम्प्रदाय-निरपेक्ष अर्थात् शासन किसी सम्प्रदाय के साथ पक्षपात नहीं करेगा। देश में अनेक सम्प्रदाय हैं। शासन की दृष्टि में सभी समान हैं।

बहुजनहिताय, बहुजनसुखाय

भारत आज गणराज्य है, प्रजातन्त्र है। प्रजातन्त्र अर्थात् प्रजा का, प्रजा के द्वारा, प्रजा के लिए। प्रजा में सम्पूर्ण सम्प्रदाय गर्भित है। प्रजातन्त्र वह है, जो बहुजनहिताय हो, अतः सैक्यूलर का अर्थ धर्म-निरपेक्ष नहीं, सम्प्रदाय-निरपेक्ष करना चाहिए। धर्म के बिना तो मानव; मानव ही न रहेगा।

धर्म का स्वरूप क्या है? जो सम्पूर्ण जीवों पर दया करे, मिथ्या वचन का परित्याग करे, जो सत्य पर रति करे। अदत्त को ग्रहण न करे, अपनी स्त्री में संतोष रखते हुए परकलत्र पर (गलत) दृष्टिपात भी न करे। परधन को तृणवत् गिने तथा गुणवान का समादार करे। धर्म के ये अंग हैं, जो इनका यथावत पालन करते हैं वे धर्म-शिरोमणि हैं अथवा धर्म-सर्वोत्तम हैं। इनसे भिन्न धर्म के क्या शृंग होते हैं? अर्थात् धर्म का अर्थ सहज सुगम है, उसमें विचित्रताएँ खोजने की क्या आवश्यकता है?

एह धम्मु जो आयरई, बभुन सुदाय कोई।
जो सावहु किं सावयहं अण्णु किं सिरिमणि होई।।

- श्री देवसेनाचार्य

इस धर्म का जो भी आचरण करता है वह चाहे ब्राह्मण हो, चाहे शूद्र या कोई भी हो, वही श्रावक (धार्मिक) है, क्योंकि श्रावक के सिर पर कोई मणि तो लगी नहीं रहती।

जैन धर्म के नियम

1. सप्त व्यसन का त्याग (जुआ, चोरी, शिकार, मांस, शराब, परस्त्री सेवन एवं वेश्यागमन)।
2. रात्रि भोजन का त्याग (कम से कम अन्न की वस्तुओं का)।
3. पानी छानकर पीना (कम से कम घर में)
4. नित्य जिनालय में वीतराग भगवान का दर्शन करना (बाहर गांव में जिनालय न होने पर घर में या अपने स्थान पर देव दर्शन विधि करें)।
5. निर्ग्रन्थ मुनि का दर्शन करना (गांव में मुनिवर न रहने पर मुनि की तस्वीर देखें या याद करें)।
6. हिंसक वस्तु का त्याग करना (चमड़ा, नेलपालिश, लिपिस्टिक, रेशमी वस्त्र)
7. निर्माल्य वस्तु का त्याग करना (घर में या मंदिर में पूजा हेतु समर्पित की वस्तु के खाने, बेचने का त्याग)।
8. रागी देवी-देवताओं को नमस्कार का त्याग (अस्त्र, शस्त्र और वस्त्र वाले देव देवियों को नमन नहीं करना)।

नोट : कोई भी नियम ठीक से न पलने पर या भूल हो जाने पर निर्ग्रन्थ गुरु (मुनि) महाराज से प्रायश्चित्त लेना चाहिए।

मद्य मांसाशनं रात्रौ, भोजनं कंद भक्षणं ।
ये कुर्वन्ति वृथा तेषां, तीर्थयात्राः जपस्तपः ॥

- महाभारत अनुशासन पर्व

जो शराब और मांस सेवन करते हैं, रात्रि भोजन करते हैं और जमीकंद खाते हैं तो ऐसा करने वालों की तीर्थयात्रा जप-तप रूप साधन व्यर्थ है।

भाग - I

पाठ संस्कार

1. सबसे पहला मंगल और अनादिनिधन मंत्र णमोकार मंत्र है।
2. णमोकार मंत्र में पंचपरमेष्ठी को नमस्कार किया गया है।
3. णमोकार मंत्र में पांच पद एवं पैंतीस अक्षर होते हैं।
4. जो परम पद में स्थित हैं उन्हें परमेष्ठी कहते हैं ।
5. परमेष्ठी पाँच होते हैं अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु।
6. जिन्होंने चार घातिया कर्मों को नष्ट कर दिया है उन्हें अरिहंत परमेष्ठी कहते हैं।
7. जिन्होंने आठों कर्मों को नष्ट कर दिया है उन्हें सिद्ध परमेष्ठी कहते हैं।
8. जो मुनि; दीक्षा और प्रायश्चित्त देते हैं उन्हें आचार्य परमेष्ठी कहते हैं।
9. जो मुनि; उपदेश देते हैं उन्हें उपाध्याय परमेष्ठी कहते हैं।
10. जो मुनि आत्म-साधना में लीन रहते हैं उन्हें साधु परमेष्ठी कहते हैं।
11. अरिहंत परमेष्ठी के छियालीस मूलगुण होते हैं।
12. सिद्ध परमेष्ठी के आठ मूलगुण होते हैं ।
13. आचार्य परमेष्ठी के छत्तीस मूलगुण होते हैं ।
14. उपाध्याय परमेष्ठी के पच्चीस मूलगुण होते हैं।
15. साधु परमेष्ठी के अट्ठाईस मूलगुण होते हैं ।

हे प्रभु ज्ञान का दान दो

हे प्रभु ज्ञान का दान दो, हम सभी की यही वंदना ।
दूर दुर्गुण सभी तुम करो, हम सभी की यही प्रार्थना ।।

धर्म रक्षा में हम प्राण दें, न अधर्मी कभी हम बनें।
झूठे वैभव को हम त्याग कर, सर्वथा सत्य राही बनें ।।
न कभी हमको अभिमान हो, बस यही एक आराधना ।
हे प्रभु ज्ञान का दान दो, हम सभी की यही वंदना ।। टेक।।

सदाचारी रहें हम सदा, और सदाचार हो सम्पदा ।
न रहे मन में ईर्ष्या कभी, प्रीत की ही बहे नर्मदा ।।
छल कपट से रहें दूर हम, मिलके करते यही कामना।
हे प्रभु ज्ञान का दान दो, हम सभी की यही वंदना ।। टेक।।

लाखों बाधायें आयें तो क्या, लोभ भरमाये हमको तो क्या।
जिसे मिल जाये तेरी शरण, धैर्य छूटेगा उसका कहाँ ।।
हम भक्तों को तुमसे प्रभो, यही वरदान तो मांगना ।
हे प्रभु ज्ञान का दान दो, हम सभी की यही वंदना ।। टेक।।

देवों के भी देव रहें वे, छियालीस गुण के धारी ।
उत्तम गति वा शिव के कर्त्ता, मंगलकारी उपकारी ।।
अति सुंदर तन निर्मल जिनका, एक हजार आठ लक्षण ।
शुभकर सुंदर मनहर जिनवर, सदा नमन हो मम क्षण-क्षण ।।

- तीर्थोदय काव्य

तीर्थंकर जिन से गंगा-सम, निकली सम्यक् जिनवाणी ।
द्वादशाङ्गमय, जग-हितकारी, सब दुख हरती प्रभुवाणी ॥
भव्यजनों के पाप-पङ्क को, दूर हटाये, पुण्य भरे ।
नमस्कार माँ, शिव चाहूँ मैं, अनन्त-सुख से पूर्ण करे ॥

- तीर्थोदय काव्य

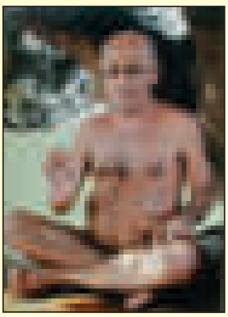

श्री विद्यासागरजी के चरणों में झुका रहा अपना माथा।
जिनके जीवन की हर चर्या बन पड़ी स्वयं ही नवगाथा।
जैनागम का जो सुधा कलश जो बिखराते हैं गली-गली।
उनके दर्शन को पा कर के खिलती मुरझाई हृदय कली।
भावों की निर्मल सरिता में अवगाहन करने आया हूँ।
मेरा सारा दुःख दर्द हरो यह अर्घ भेंटने आया हूँ।
हे तपो-मूर्ति, हे आराधक, हे योगीश्वर, हे महासंत।
हे अरुण कामना देख सके युग-युग तक आगामी बसंत।

ॐ ह्रूँ श्री परम पूज्य आचार्य प्रवर १०८ विद्यासागर जी
महामुनीन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

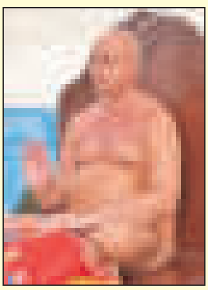

अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, अर्घ चढ़ाते हैं गुरुवर ।
तव सम अमूल्य पद को पाकर, शिवपद शीघ्र मिले यतिवर ।।
श्री आर्जव गुरु के चरण कमल में, वन्दन करते बारम्बार ।
महाव्रती रत्नत्रयधारी, हम सबका कर दो उद्धार ।।

ॐ ह्रूँ श्री परम पूज्य आचार्य गुरुवर १०८ आर्जवसागर जी
महामुनीन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठशाला जाना.......

पाठशाला जाना, पढ़कर आना।
कोई जब पूछे तो, जल्दी से बताना ।।
क्या-क्या करना पाप है?
क्या-क्या करना पाप है?
हिंसा करना पाप है। झूठ बोलना पाप है।
चोरी करना पाप है, कुशील सेवन पाप है।।
परिग्रह भी एक पाप है।
लोभ पाप का बाप है, लोभ पाप का बाप है।।

माँ धर्म की ......

माँ धर्म की पुस्तक दे दे, मैं पाठशाला जाऊँ ।
सब जीवों पर दया पालकर, सच्चा जैन कहाऊँ ।।
छोटी-सी धोती पहनूगाँ, और करूँगा पूजा ।
स्वाध्याय से समकित गहकर, काम करूँगा दूजा।।
और मुझे तू आज्ञा देदे, मुनिराज बन जाऊँ ।
अपने में ही लीन होकर, मैं भगवन् बन जाऊँ ।।
मैं मुक्ति पद पाऊँ ।।

दिनचर्या में क्या करें

प्रातः उठ लो प्रभु का नाम
मात-पिता को करो प्रणाम।
पहले सबकी सेवा करना
फिर दुखियों की पीड़ा हरना।।
घर के सारे काज संवारो
अपनी हिम्मत कभी न हारो।
पुस्तक लेकर पढ़ने जाओ
अपने गुरु को शीश नवाओ।।
अपना पाठ ध्यान से पढ़ना
कभी किसी से तुम मत लड़ना।
भाई-बहिन से रक्खो प्यार
सीखो विद्या, बनो उदार ।।
बच्चों दिन में कभी न सोओ
हो मुंह मैला तत्क्षण धोओ।
मात-पिता की आज्ञा मानो
भले-बुरे की संगत जानो।।

देवस्तुति

प्रभु पतित पावन मैं अपावन, चरण आयो शरण जी।
यों विरद आप निहार स्वामी, मेट जामन-मरण जी ।।
तुम ना पिछान्यों आन मान्यो, देव विविध प्रकार जी।
या बुद्धि सेती निज न जान्यो, भ्रम गिन्यो हितकार जी।।
भव विकट वन में कर्म बैरी, ज्ञान-धन मेरो हर्‌यो।
सब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय, अनिष्ट गति धरतो फिर्‌यो।।
धन घड़ी यों धन दिवस, यों ही धन जनम मेरो भयो।
अब भाग्य मेरो उदय आयो, दरश प्रभु जी को लख लयो।।
छवि वीतरागी नग्न मुद्रा, दृष्टि नासा पै धरै ।
वसु प्रातिहार्य अनन्त गुण जुत कोटि रवि छवि को हरै।।
मिट गयो तिमिर मिथ्यात्व मेरो, उदय रवि आतम भयो।
मो उर हर्ष ऐसो भयो, मनु रङ्क चिन्तामणि लयो।।
दोउ हाथ जोड़ नवाऊँ मस्तक, वीनऊँ तुम चरण जी।
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन, सुनहुँ तारण तरण जी ।।
जाचूँ नहीं सुरवास पुनि, नर-राज परिजन साथ जी।
'बुध' जाँचऊँ तुम भक्ति भव-भव, दीजिये शिवनाथ जी।।

महावीरजी वाले श्री १००८ महावीर भगवान

वीर प्रभु की हम संतान, बनना है हमको भगवान।
सत्य अहिंसा इनका गान, जीव सताना दुख की खान।। वीर.....

निशि भोजन में हिंसा जान, पानी पीना पहले छान।
वीर प्रभु की हम संतान, बनना है हमको भगवान।।

जिनदर्शन का रखना ध्यान, इससे बनते सब भगवान।
वीर प्रभु की हम संतान, बनना है हमको भगवान।।

णमोकार का करना ध्यान, इससे कटते पाप महान्।
वीर प्रभु की हम संतान, बनना है हमको भगवान।।

आतम देह भिन्न पहचान, निर्णय करके बनो महान्।
वीर प्रभु की हम संतान, बनना है हमको भगवान।।

प्रार्थना

भोले भाले भगवन् मेरे

भोले भाले भगवन् मेरे, मौन लिये क्यों बैठे हो।
भूल हुई क्या हमसे भगवन्, क्यों तुम हमसे रूठे हो।।

आँख खोलकर देखो भगवन्, क्या हम तुम्हें चढ़ाते हैं।
हाथ जोड़कर करें वंदना, चरणों शीश झुकाते हैं।।

भक्ति भाव से करें आरती, घृत के दीप जलाते हैं।
इतनी मेहनत से हम आते, फिर क्यों हमें रुलाते हो।।

मैं अज्ञानी तुम हो ज्ञानी, ज्ञान हमें तुम दे देना।
बन जाऊँ मैं तुमसा प्रभुवर, यह आशीष हमें देना।।

इतनी शक्ति हमें दो गुरुवर, मैं गुणगान करूँ तेरा।
हाथ जोड़कर करूँ वंदना, गुरु उद्धार करो मेरा ।। भोले भाले ....

प्रातः उठकर

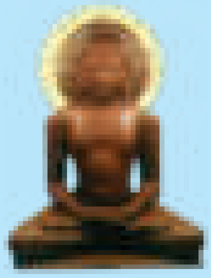

प्रातः उठकर सबसे पहले, तेरा ही गुण गाऊँ मैं।
बड़े विनय से वीतराग को, अपना शीश झुकाऊँ मैं ।।

नहीं किसी से कभी मैं झगड़ूँ, सबसे सच्चा प्रेम रखूँ ।
पर हित सेवा धर्म मानकर, जीवन पथ पर नित्य चलूँ ।।

दे दो ऐसी ज्योति दयामय, दीनों को अपनाऊँ मैं।
सारे दुःख दुखियों के लेकर, सुख दाता बन जाऊँ मैं ।।

अन्धों की लकड़ी बनकर के, उनको मार्ग दिखाऊँ मैं।
जो भूले हैं राह भटककर, उनको पथ पर लाऊँ मैं ।।

पुत्रहीन का पुत्र बनूँ मैं, सबको सुख पहुँचाऊँ मैं।
जिसका कोई नहीं जगत् में, उसका मीत बन जाऊँ मैं ।।

हिम्मत हारे हुए व्यक्ति को, धीरज भी बंधवाऊँ मैं।
निपट निराशा में जो डूबे, आशा उन्हें दिलाऊँ मैं ।।

सूखे नीरस प्राणों में भी, सुधा सदा सरसाऊँ मैं।
विनय यही है, हे परमेश्वर ! तेरा ही गुण गाऊँ मैं ।।

कविता

जब से घर में टीवी आई
जी को बन गई यह दुःखदाई
दिन भर बहुऐं नाटक देखें
रात में बेटे फिल्में देखें
मना करो तो करें लड़ाई
जब से घर में टीवी आई
गेम वीडियो दिन भर खेलें
कार्टूनों की फिल्में देखें
सुपरमेन सब बच्चे भाई
जब से घर में टीवी आई
सल्लू धोनी सचिन की बातें
गजनी कटिंग गब्बर की लातें
पेंट शर्ट लड़की ले आई
जब से घर में टीवी आई
पढ़ते लिखते बच्चे नहीं हैं
कछु कहो तो सुनतई नहीं हैं
बीबी रोज बजारे जाई
जब से घर में टीवी आई
खाना पीना उसी के आगे
उसी को देखत सोते जागे
चश्मा लगो दवाई खाई
जब से घर में टीवी आई
दर्शन देव न प्रवचन भाएँ
फिल्में किरकिट गाना भाऐं
लोक लाज सब धरम गवाई
जब से घर में टीवी आई

दो एकम् दो

दो एकम दो, दो दूनी चार
सप्त तत्त्व का करो विचार।
दो तिया छः, दो चौको आठ
प्रभु का दर्शन पहला पाठ।
दो पञ्चे दस, दो छक्के बारा
चेतन राजा हमको प्यारा ।
हमको प्यारा, तुमको प्यारा
चेतन राजा सबको प्यारा ।
दो सत्ते चौदा, दो अट्ठे सोला
ज्ञानी आत्मा हमको बोला
हमको बोला, तुमको बोला
ज्ञानी आत्मा सबको बोला।
दोई नाम अठारा, दोई धाम बीस
सिद्धों के हम रहेंगे बीच।
दो ग्यारम बाईस, दो बारम् चौबीस
तीर्थंकर सब भजलो चौबीस।।

1 नंबर इज दा वन - सत्यवादी बन।।

2 नंबर इज दा टू - आत्मा को छू ।।

3 नंबर इज दा थ्री - पाप से हो जा फ्री ।।

4 नंबर इज दा फोर - मत बन चोर ।।

5 नंबर इज दा फाइव - अच्छी बनाओ लाइफ।।

6 नंबर इज दा सिक्स - पाठशाला टाइम फिक्स ।।

7 नंबर इज दा सेवन - मुक्ति का मार्ग एवन।।

8 नंबर इज दा एट - खोलो मोक्ष का गेट ।।

9 नंबर इज दा नाइन - जिनवर की मुद्रा फाइन।।

10 नंबर इज दा टेन - हम बनेंगे सच्चे जैन।।

जैनगान

1. हम सब सच्चे जैन बनेंगे।
2. सप्त व्यसन का त्याग करेंगे।
3. रात्रि भोजन नहीं करेंगे।
4. बिना छना जल नहीं पिएँगे।
5. जिनवर दर्शन रोज करेंगे।
6. मुनिवर का सम्मान करेंगे।
7. हिंसक वस्तु काम न लेंगे।
8. निर्माल्य सेवन नहीं करेंगे।
9. माता-पिता का मान रखेंगे।
10. सम्यग्दर्शन प्राप्त करेंगे।
11. रागी देवता नहीं भजेंगे।
12. पंच पाप का त्याग करेंगे।
13. परमेष्ठी का ध्यान करेंगे।
14. जिनवाणी का ज्ञान करेंगे।
15. सप्त तत्त्व पहचान करेंगे।
16. चार तरह के दान करेंगे।
17. तीर्थक्षेत्र का दर्श करेंगे।
18. समवसरण को प्राप्त करेंगे।
19. पूजन-भक्ति खूब करेंगे।
20. साधु पद को प्राप्त करेंगे।
21. निज आतम में ध्यान करेंगे।
22. फिर हम सब भगवान बनेंगे।

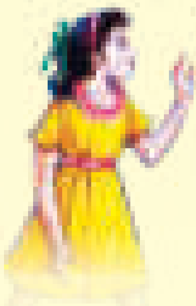

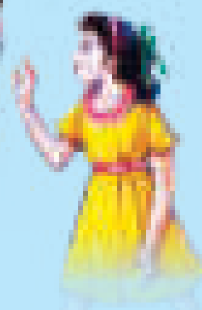

ज्ञानी का ध्यानी का......

ज्ञानी का ध्यानी का सबका कहना है
एक आत्मा सच्चा गहना है
सोना, चाँदी, पुद्गल की सेना है
ज्ञानी........

पर को अपना माने, ये ही है तेरी भूल
रम जा चेतन निज में, खिलेंगे समकित फूल
संयम की साधना, हम को करना है
एक आत्मा सच्चा गहना है।
सोना, चांदी...... ज्ञानी........

आलू जो खाते हैं, वे बन जाते भालू
दिन में भोजन करते, वे सच्चे दयालु
छान के पानी पीते, वे सच्चे दयालु
भगवन् का दर्शन तो प्रतिदिन करना है
एक आत्मा सच्चा गहना है
सोना, चांदी, पुद्गल की सेना है
ज्ञानी........

णमोकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोएसव्वसाहूणं ॥

अर्थ - अरिहंतों को नमस्कार हो, सिद्धों को नमस्कार हो, आचार्यों को नमस्कार हो, उपाध्यायों को नमस्कार हो और लोक के सब साधुओं को नमस्कार हो।

चार घातिया नाश करें,
अरिहंत प्रभु कहलाते हैं।

आठ कर्म जो नाश करें,
सिद्ध प्रभु कहलाते हैं।

शिक्षा दीक्षा देते हैं,
वे आचार्य कहाते हैं।

पञ्च परमेष्ठी

मुनिवर पढ़ें पढ़ाते हैं,
वे उपाध्याय कहलाते हैं।

रत्नत्रय को ध्याते हैं,
साधु वे कहलाते हैं।

ये परमेष्ठी कहाते हैं,
इनको शीश झुकाते हैं।

मंगल क्या कहलाता है

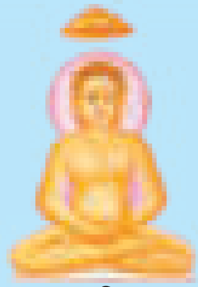
अरिहंत

मंगल क्या कहलाता है? जो पापों को गलाता है।
और पुण्य को लाता है, मंगल वह कहलाता है।

सिद्ध

मंगल कितने होते हैं? मंगल चार होते हैं।
पहले मंगल अरिहंत हैं, दूजे सिद्ध होते हैं।।
तीजे साधू मंगल हैं, धर्म मंगल चौथे हैं।
मंगल आनन्ददायक हैं, मंगल पाप धोते हैं।।

साधु

उत्तम क्या कहलाता है? सर्वश्रेष्ठ जो होता है।
राजा शीश झुकाता है, उत्तम वह कहलाता है।।
उत्तम कितने होते हैं? उत्तम चार होते हैं।
पहले उत्तम अरिहंत हैं, दूजे सिद्ध होते हैं।।
तीजे साधु उत्तम हैं, धर्म उत्तम चौथे हैं।
उत्तम वो कहलाते हैं, सर्वश्रेष्ठ जो होते हैं।।

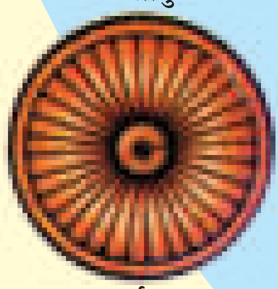
धर्म चक्र

शरण क्या कहलाती है? भय से रक्षा करती है।
निर्भयता को लाती है, वह शरण कहलाती है।।
शरण कितनी होती हैं? शरण चार होती हैं।
अरिहंतों की पहली शरण, दूजी सिद्ध की होती है।।
साधुजनों की तीजी शरण, चौथी धर्म की होती है।
जो शरण अपनाता है, मुक्ति उसकी होती है ।।

अ	से अक्षर ज्ञान करें, अरिहंतों का ध्यान करें।
आ	से बनता है आचार, सादा जीवन उच्च विचार ।
इ	से इंद्र वह बन जाता, जयजिनेन्द्र वचनों में लाता।
ई	से ईश्वर वह बन जाए, मोक्षमार्ग को जो अपनाए।
उ	से उपाध्याय कहलाते, श्रेष्ठ मुनिवर हमें पढ़ाते।
ऊ	से ऊन क्षेत्र को जाओ, दर्शन करके पुण्य कमाओ।
ऋ	से ऋषि मुनि बन जाओ, भेष दिगम्बर को पा जाओ।
ऌ	से ऌ का ज्ञान बढ़ाओ, शब्द शक्ति का मान बढ़ाओ।
ए	से एलाचार्य कहाते, मोक्षमार्ग में हमें लगाते।
ऐ	से ऐलक वह बन जाता, जो श्रावक आचार बढ़ाता।
ओ	से ओम्कार जय बोलो, जल्दी उठकर आँखें खोलो।
औ	से औगुण को तज डालो, जैनधर्म जीवन में पालो।
अं	से बनते ज्ञान के अंग, सम्यग्दर्शन होता संग।
अः	से अंतः याद जब आता, निज का आनंद खूब बढ़ाता।

अंग्रेजी गिनती

1	क्या कहता है नंबर वन?	सब में है जैनधर्म एवन।
2	क्या कहता है नंबर टू?	मोक्षमार्ग में चल पड़ तूँ।
3	क्या कहता है नंबर थ्री?	हो जाओ झंझट से फ्री।
4	क्या कहता है नंबर फोर?	शोर करो ना बनना चोर।
5	क्या कहता है नंबर फाइव?	करो क्रोध को जल्दी गायब।
6	क्या कहता है नंबर सिक्स?	रहो धर्म में सब जन फिक्स।
7	क्या कहता है नंबर सेवन?	गुरु प्रभु की करना पूजन।
8	क्या कहता है नंबर एट?	कभी न पीना भाई सिगरेट।
9	क्या कहता है नंबर नाइन?	बच्चो पकड़ो अच्छी लाइन।
10	क्या कहता है नंबर टेन?	हमको बनना सच्चे जैन।

कविता पाठ

इन्द्रिय ज्ञान

पाठ पढ़ें अब इन्द्रिय ज्ञान, उन सबकी है क्या पहचान।
जिससे जीवों की पहचान, परिभाषा इन्द्रिय की जान ।।
इन्द्रिय कितनी होती हैं ? इन्द्रियाँ पाँच होती हैं।

छूकर ज्ञान कराती है,
स्पर्शन इन्द्रिय कहाती है।

जिससे छू जाने पर हल्का-भारी, रूखा-चिकना, कड़ा-नरम, ठंडा-गरम का ज्ञान होता है।

जिह्वा स्वाद चखाती है,
रसना इन्द्रिय कहाती है।

जिससे चखने का खट्टा, मीठा, कड़वा, चरपरा, कषायला, स्वादों का ज्ञान होता है।

नासा गंध सुंघाती है,
घ्राणेन्द्रिय कहाती है।

जिससे सूंघने पर सुगन्ध और दुर्गन्ध का ज्ञान होता है।

आँखें रंग दिखाती हैं,
चक्षु इन्द्रिय कहाती हैं।

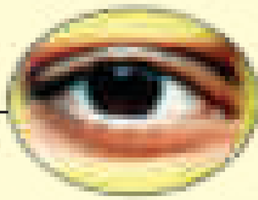

जिसके द्वारा काला, पीला, नीला, लाल, सफेद रंगों का ज्ञान होता है।

कान शब्द सुनाता है,
कर्णेन्द्रिय कहाता है।

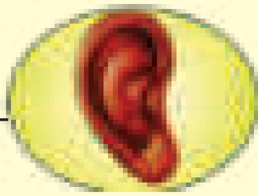

जिसके द्वारा आदमी, जानवर, बाजे आदि की आवाज सुनी जाती है।

आओ बच्चों खेलें खेल

1. आओ बच्चो खेलें खेल,
एक बनाएँ धर्म की रेल।
जीव इसका इंजन है,
दस धर्मों के डिब्बे हैं।

2. सम्यग्दर्शन टिकिट है इसका,
सम्यग्ज्ञान की पटरी है।
सम्यक् चारित्र गुरु चलाते,
पहुँचा देती जल्दी है ।

3. हम सब मिलकर बैठेंगे,
मोक्ष नगर को पहुँचेंगे।
वापस कभी न आयेंगे,
वहीं पै मौज मनायेंगे ।

अहिंसा बोल

देश को महान बनाना है । शाकाहार अपनाना है॥
चीखते पशु करें पुकार । छोड़ो मानव मांसाहार ॥
महावीर की यह वाणी है। मानव अहिंसक प्राणी है॥
गांधीजी ने यही बताया। मैंने किसी को नहीं सताया॥
वर्षा क्यों नहीं होती है? क्योंकि हिंसा बढ़ती है॥
भूकम्प युद्ध क्यों आ रहे। क्योंकि पशु दिल कांप रहे॥
हिंसा बढ़ती जाती है। नई बीमारी आती है॥
धर्म कहाँ कब आता है? जहाँ जीव बचाया जाता है॥

– नेक जीवन

प्रभु दर्शन

चल रे भाई मंदिर चल, दर्शन करने मंदिर चल।
जिन दर्शन को जायेंगे, अष्ट द्रव्य ले जायेंगे।।
नि:सही बोलते जायेंगे, घंटा वहाँ बजायेंगे।
जयजयकार लगायेंगे, भगवन को जब पायेंगे।।
अपना शीश नवायेंगे, परिक्रमा तीन लगायेंगे।
दर्शन पाठ सुनायेंगे, प्रभु के सम्मुख जायेंगे।।
गाकर अर्घ्य सुनायेंगे, चरणों उसे चढ़ायेंगे।
पञ्चगुरु गुण गायेंगे, हाथ जोड़ शिर नवायेंगे।।
गंधोदक शीश लगायेंगे, माथे पे तिलक लगायेंगे।।
णमोकार को ध्यायेंगे, भगवन से मिल जायेंगे।।
अ:सही बोलते आयेंगे, जीवन सफल बनायेंगे।

गतियाँ कितनी होती हैं,
गतियाँ चार होती हैं।

जहाँ नारकी होते हैं,
नरकगति उसे कहते हैं।

जहाँ पशु पक्षी होते हैं,
तिर्यञ्चगति उसे कहते हैं।।

जहाँ मानव होते हैं,
मनुष्यगति उसे कहते हैं।

जहाँ पर देव होते हैं,
देवगति उसे कहते हैं।

ये गतियाँ कैसे मिलती हैं, कारण यहाँ बताते हैं।
जिसमें जाना वैसा करना, तुमको सब समझाते हैं।।
हिंसा पाप जो करते हैं, प्रभु जाप न करते हैं।
नरक गति में जाते हैं, दुःखमय जीवन पाते हैं।
मायाचारी करते हैं, बगुला जैसे रहते हैं।
तिर्यंच गति को पाते हैं, पशु बन भार उठाते हैं।
मधुर वचन जो कहते हैं, दया धर्म में रहते हैं।
मनुष्य गति वे पाते हैं, हम जैसे बन जाते हैं।
पाँच पाप का त्याग करें, पाँच व्रतों को आप धरें।
संयम भाव सजाते हैं, देवगति को पाते हैं।

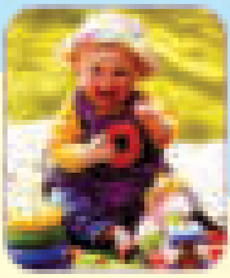

सोनू आकर भोजन करना, रोटी-शाक का भोजन करना।
शाकाहारी-भोजन करना, दिन में ही तुम भोजन करना।
शोध-शोध कर भोजन करना, रात में भोजन तुम मत करना।
रात में चिड़ियाँ कभी न खातीं, नहीं रात में तोते खाते।
रात के भोजन में देखो ये, कीट पतंगे भी मर जाते।
दिन में ही भोजन करने से, पापों से हम बच जाते हैं।
शुद्ध साफ भोजन करने से, स्वस्थ और सुंदर हो जाते हैं।

A.B.C.

ABC	-	वीतराग बन निर्दोषी
DEF	-	पुण्य जहाँ हो, लाईफ सेफ
GHI	-	धर्म करो, हो पुण्य कमाई
JKL	-	संस्कार है धर्म की बॅल
MNO	-	व्यसनों में जीवन मत खो
PQR	-	करो प्रभो का जय-जयकार
STU	-	अभक्ष वस्तुओं को न छू
VWX	-	व्रत पाने दें गुरु को फैक्स
Y and Z	-	जिओ और जीने दो ट्रेड

कभी न इतनी बात भुलाना

कभी न रो-रो आँख फुलाना।
कभी न दिल से दया भुलाना।
कभी न चिढ़ना और चिढ़ाना।
कभी न मन में क्रोध बढ़ाना ।।

कभी न करना ढोंग बहाना।
कभी न सच्ची बात छिपाना।
कभी न लालच में फँस जाना।
कभी न कोई चीज चुराना ।।

कभी न कोई जीव सताना।
कभी न दुष्टों से भय खाना।
कभी न गाली मुँह पर लाना।
कभी न अपना धर्म गँवाना ।।

कभी न बढ़-बढ़ कर इतराना।
कभी न पढ़ने से कतराना।
कभी न अपना नाम डुबाना।
कभी न कुल को दाग लगाना ।।

कभी किसी को नहीं रुलाना।
कभी किसी का दिल न दुखाना।
कभी न मन में आलस लाना।
कभी न इतनी बात भुलाना।।

धार्मिक उद्घोष

1.	जब तक सूरज चांद रहेगा	-	मुनियों का सम्मान रहेगा।
2.	जब तक सागर में है पानी	-	मुनियों की है अमर कहानी।
3.	वीर प्रभु का क्या संदेश	-	जियो और जीने दो।
4.	धर्म अहिंसा प्यारा है	-	यही हमारा नारा है।
5.	माँ का बेटा कैसा हो	-	विद्यासागर जैसा हो।
6.	माँ की बेटी कैसी हो	-	चंदनबाला जैसी हो।
7.	विद्यासागर की लहरों से	-	अपने कर्मों को धो लो।
8.	अखिल विश्व में गूंजे नाद	-	सत्य अहिंसा जिन्दाबाद।
9.	जैनधर्म किसका है	-	जो अपना ले उसका है।
10.	महावीर के संदेशों को	-	घर-घर तक पहुँचाना है।
11.	आंधी और तूफानों में	-	आगे बढ़ते जाना है।
12.	कलयुग के हैं तीन डाकू	-	मांस, मदिरा और तम्बाखू।
13.	सण्डे हो या मण्डे	-	कभी न खाओ अण्डे।
14.	नई सदी का नया संदेश	-	अहिंसामय हो भारत देश।
15.	जिनेन्द्र के दर्शन	-	नित्य करेंगे-नित्य करेंगे
16.	रात्रि भोजन	-	नहीं करेंगे-नहीं करेंगे।
17.	बिना छना जल	-	नहीं पीयेंगे-नहीं पीयेंगे।
18.	माता-पिता की सेवा	-	हम करेंगे- हम करेंगे
19.	गुरुजन का सम्मान	-	हम करेंगे- हम करेंगे
20.	धर्म की रक्षा कौन करेगा	-	हम करेंगे- हम करेंगे
21.	त्रिशला नंदन वीर की	-	जय बोलो महावीर की।
22.	राग में न द्वेष में	-	विश्वास दिगम्बर भेष में
23.	ये वैरागी कहाँ चले	-	पापाचार मिटाने को।
24.	सबको है जीवन से प्यार	-	छोड़ो भैय्या माँसाहार।
25.	जो करते हो शाकाहार	-	वो रहते हैं सदाबहार।
26.	मानवता का करते नाश	-	अण्डा, मछली, मदिरा, माँस।
27.	जिसका कोई गुरु नहीं	-	उसका जीवन शुरू नहीं।

हमारे नारे

1.	देश की रक्षा कौन करेगा?	-	हम करेंगे, हम करेंगे।
2.	बन्द करो हिंसा के नाटक	-	जीवदया के खोलो फाटक।
3.	शाला में हम जायेंगे	-	ज्ञानी बनकर आयेंगे।
4.	सत्य, अहिंसा प्यारा है	-	यही हमारा नारा है।
5.	लगता कौन जगत में प्यारा	-	भगवान तेरा नाम निराला।
6.	जन-जन का यह नारा है	-	भारत देश हमारा है।
7.	नील गगन में एक सितारा	-	आचार्य श्री को नमन हमारा।
8.	किसी जीव को नहीं सताओ	-	पशु-पक्षी को मित्र बनाओं।
9.	जैन मुनि देख लो	-	त्याग करना सीख लो।
10.	जब तक सूरज-चाँद रहेगा	-	जैन धर्म का नाम रहेगा।
11.	तन, मन करता कौन खराब	-	अण्डा-मछली और शराब।
12.	हाय हैलो छोड़िये	-	भगवन की जय बोलिये।
13.	हम सबकी है एक आवाज	-	जगमग चमके देश समाज।
14.	कटता पशुधन करे पुकार	-	बन्द करो ये अत्याचार।
15.	अगर चाहते देश बचाना	-	छोड़ो पशुओं को तड़फाना।
16.	महावीर का शुभ संदेश	-	जियो और जीने दो ।

तीर्थंकर परिचय

क्रं.	नाम	चिन्ह	जन्म नगरी	निर्वाण-भूमि
1.	श्री आदिनाथ	बैल	अयोध्या	कैलाश पर्वत
2.	श्री अजितनाथ	हाथी	अयोध्या	सम्मेद शिखर
3.	श्री सम्भवनाथ	घोड़ा	श्रीवस्ती	सम्मेद शिखर
4.	श्री अभिनन्दननाथ	बन्दर	अयोध्या	सम्मेद शिखर
5.	श्री सुमतिनाथ	चकवा	अयोध्या	सम्मेद शिखर
6.	श्री पद्मप्रभ	लालकमल	कौशाम्बी	सम्मेद शिखर
7.	श्री सुपार्श्वनाथ	सांथिया	बनारस	सम्मेद शिखर
8.	श्री चन्द्रप्रभ	चन्द्रमा	चन्द्रपुरी	सम्मेद शिखर
9.	श्री पुष्पदन्त	मगर	काकन्दी	सम्मेद शिखर
10.	श्री शीतलनाथ	कल्पवृक्ष	महिलपुर	सम्मेद शिखर
11.	श्री श्रेयांसनाथ	गेंढ़ा	सिंहपुरी	सम्मेद शिखर
12.	श्री वासुपूज्य	भैंसा	चम्पापुरी	चम्पापुरजी
13.	श्री विमलनाथ	शूकर	कम्पिला	सम्मेद शिखर
14.	श्री अनन्तनाथ	सेही	अयोध्या	सम्मेद शिखर
15.	श्री धर्मनाथ	वज्रदण्ड	रतनपुर	सम्मेद शिखर
16.	श्री शान्तिनाथ	मृग (हिरण)	हस्तिनापुर	सम्मेद शिखर
17.	श्री कुन्थुनाथ	बकरा	हस्तिनापुर	सम्मेद शिखर
18.	श्री अरहनाथ	मीन	हस्तिनापुर	सम्मेद शिखर
19.	श्री मल्लिनाथ	कलश	मिथिला	सम्मेद शिखर
20.	श्री मुनिसुव्रतनाथ	कछवा	राजगृही	सम्मेद शिखर
21.	श्री नमिनाथ	नीलकमल	मिथिला	सम्मेद शिखर
22.	श्री नेमिनाथ	शंख	द्वारिका	गिरनार पर्वत
23.	श्री पार्श्वनाथ	सर्प	बनारस	सम्मेद शिखर
24.	श्री महावीर स्वामी	सिंह	कुण्डलपुर	पावापुरी

तीर्थंकरों की प्रतिमाओं की पहचान के लिये उनके चिन्ह निश्चित हैं।

विशेष :
1. इन चौबीस तीर्थंकरों में से श्री वासुपूज्य जी, श्री मल्लिनाथ जी, श्री नेमिनाथ जी, श्री पार्श्वनाथ जी और श्री महावीर स्वामी ये पंच बाल-ब्रह्मचारी हुए हैं।
2. श्री आदिनाथ के ऋषभदेव, ऋषभनाथ, वृषभदेव नाम भी हैं।
3. श्री महावीर स्वामी को वीर, अतिवीर, सन्मति तथा वर्द्धमान भी कहते हैं।
4. श्री पुष्पदन्त जी सुविधिनाथ नाम से भी पुकारे जाते हैं।
5. श्री अनन्तनाथ जी का चौबीस तीर्थंकर स्तुति में पूज्यपाद स्वामी ने सिंहसैन्य नाम भी कहा है।

प्रायश्चित्त-भावना

(लय - दिन रात मेरे.....)

शत-शत प्रणाम करते, आशीष हमको देना।
दोषों को दूर करने, अपराध क्षम्य करना॥ 1॥

मन से वचन से तन से, अपराध पाप करते।
कृत कारितानुमत से, दुख शोक क्लेश सहते ॥ 2॥

चारों कषाय करके, निज रूप को भुलाया।
आलस्य भाव करके, बहु जीव को सताया॥ 3॥

भोजन शयन गमन में, पापों का बंध बाँधा।
अज्ञान-भाव द्वारा, अज्ञात-पाप बाँधा॥ 4॥

दिन-रात और क्षण-क्षण, अपराध हो रहे हैं।
इस बोझ से दबे हम, पापों को ढो रहे हैं॥ 5॥

गुरुदेव की शरण में, प्रायश्चित्त लेने आये।
मुक्ति का राज पाने, भव-रोग को नशाये॥ 6॥

क्षमा-प्रार्थना

1. किया अपराध जो मैंने, तुम्हारे जाने अनजाने।
   क्षमा करना सभी मुझको, क्षमा करता सभी जन को॥
2. सभी से मित्रता मेरी, किसी से बैर ना क्षण को।
   यही है भावना मेरी, जिनेश्वर हो कृपा तेरी॥
3. किया उपयोग से छेदन, रहा हो भाव में वेदन।
   उन्हीं को त्यागता हूँ मैं, रहे जो भाव वह मुझमें॥
4. क्षमा करना, क्षमा करना, ना दिल में रोष को धरना।
   शुद्ध-दिल से माँगता हूँ, क्षमा-भावों से झुकता हूँ॥

भाग - 2

पाठ संस्कार

1 जिन्होंने इन्द्रियों को जीत लिया है उन्हें जिन कहते हैं और उनके मार्ग पर चलने वाले जैन कहलाते हैं।

2 तीर्थंकर चौबीस होते हैं।

3 जो धर्म तीर्थ को चलाते हैं वे तीर्थंकर कहलाते हैं।

4 तीर्थंकर के पांच कल्याणक होते हैं।

5 गर्भकल्याणक, जन्मकल्याणक, दीक्षाकल्याणक, ज्ञानकल्याणक और मोक्षकल्याणक।

6 अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, जिन धर्म, जिन श्रुत, जिन चैत्य, और जिन चैत्यालय ये नव देवता कहलाते हैं।

7 मद्य, मधु, मांस का त्याग एवं हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह का त्याग ये आठ मूलगुण होते हैं।

8 बुरे काम को पाप कहते हैं।

9 हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह ये पाँच पाप कहलाते हैं।

10 बुरी आदतों को व्यसन कहते हैं।

11 व्यसन सात होते हैं- जुआ, चोरी, शिकार, मांस, शराब, परस्त्री सेवन और वेश्यागमन ।

12 गतियाँ चार होती हैं - नरकगति, तिर्यञ्चगति, मनुष्यगति और देवगति।

13 जो आत्मा के परिणामों का घात करती है (कसती है) उसे कषाय कहते हैं।

14 क्रोध, मान, माया और लोभ इस प्रकार चार कषायें होती हैं।

15 देवपूजा, गुरु उपास्ति, स्वाध्याय, संयम, तप और दान ये श्रावक के षट् कर्म कहलाते हैं।

चौबीस तीर्थंकर

वृषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनराय।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजित सुरराय ।।
विमल अनंत धर्मजस उज्ज्वल, शांति कुंथु अरु मल्लि मनाय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वर्द्धमान पद शीश नवाय ।।

महावीराष्टकस्तोत्रम्

(कविवर भागचन्द्र)

शिखरिणी छन्द

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः,
समं भान्ति ध्रौव्य-व्यय-जनि-लसन्तोऽन्त रहिताः।
जगत्साक्षी-मार्ग-प्रकटन-परो भानुरिव यो,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः) ।।1।।

अताम्रं यच्चक्षुः कमल-युगलं स्पन्द-रहितं,
जनान् कोपा - पायं प्रकटयति वाभ्यन्तरमपि।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वाति विमला,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।।2।।

नमन्नाकेन्द्राली - मुकुटमणि - भा - जाल - जटिलं,
लसत्पादाम्भोज - द्वयमिह यदीयं तनुभृताम्।
भवज्ज्वाला - शान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।।3।।

यदर्चा - भावेन प्रमुदित - मनः दर्दुर इह,
क्षणादासीत्स्वर्गी गुण-गण-समृद्धः सुख-निधिः।
लभन्ते सद्भक्ताः शिव-सुख-समाजं किमु तदा,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।।4।।

कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगत - तनुर्ज्ञान - निवहो,
विचित्रात्माप्येको नृपतिवरसिद्धार्थतनयः।
अजन्मापि श्रीमान् विगत - भव- रागोऽद्भुत - गतिर्,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।।5।।

यदीया वाग्गङ्गा विविधनयकल्लोलविमला,
बृहज्ज्ञानाम्भोभिर्जगति जनतां या स्नपयति।
इदानीमप्येषा बुधजनमरालैः परिचिता,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।।6।।

अनिर्वारोद्रेकस् त्रिभुवन-जयी काम-सुभटः,
कुमारावस्थाया मपिनिजबलाद्येन विजितः।
स्फुरन्नित्यानन्द-प्रशम-पद-राज्याय स जिनः,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः)।।7।।

महामोहातङ्क - प्रशमन - पराकस्मिक - भिषङ्,
निरापेक्षो बन्धुर्विदित - महिमा मङ्गलकरः।
शरण्यः साधूनां भव - भयभृतामुत्तमगुणो,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः)।।8।।

महावीराष्टकं स्तोत्रम्, भक्त्या 'भागेन्दुना' कृतम्।
यः पठेच्छ्रणुयाच्चापि, स याति परमां गतिम् ।।9।।

पंच परमेष्ठी

परमेष्ठी जग-मंगलकारक, इष्ट-सु-दायक सुख-कर्त्ता।
अर्हत् सिद्धाचार्य सु पाठक, साधु पूज्य सब दुख हर्ता।।
सिद्ध मुक्त वे अर्हत् प्रभु से, मंगलवाणी खिरती है।
दीक्षा सूरि व पाठक दें श्रुत, साधु-मौनता लसती है।।

- तीर्थोदय काव्य

पंचबालयति

बालब्रह्मचारी तीर्थंकर, वासुपूज्य जिन मल्लि परम।
नेमि पार्श्व व महावीर जी, नमता शुभ गुण मिलें परम।।
महापुरुष वे तीर्थंकर सब, मोह काम से रहित हुए।
काम-शत्रु को नाश करूँ मैं, नहीं मोह-तम मुझे छुए।।

- तीर्थोदय काव्य

ओम् मंगलम्

ओम् मंगलम्, ओंकार मंगलम्
णमो मंगलम्, णमोकार मंगलम्
अरिहन्त मंगलम्, भगवन्त मंगलम्
णमो मंगलम्, णमोकार मंगलम् । ओम्...।

सिद्ध मंगलम्, सिद्ध देव मंगलम्।
णमो मंगलम्, णमोकार मंगलम् । ओम्...।

आचार्य मंगलम्, चारित्र मंगलम्
णमो मंगलम्, णमोकार मंगलम् । ओम्...।

उपाध्याय मंगलम्, स्वाध्याय मंगलम्।
णमो मंगलम्, णमोकार मंगलम् । ओम्...।

सर्वसाधु मंगलम्, साधु जीवन मंगलम्।
णमो मंगलम्, णमोकार मंगलम् । ओम्...।

जिनधर्म मंगलम्, जिनदेव मंगलम्।
णमो मंगलम्, णमोकार मंगलम् । ओम्...।

विद्यासागर मंगलम्, आर्जवसागर मंगलम्
णमो मंगलम्, णमोकार मंगलम् । ओम्...।

ओम् मंगलम्, ओंकार मंगलम्
णमो मंगलम्, णमोकार मंगलम्

नव प्रभात की नई किरण से, स्वर्णिम हुआ उजाला है।
गुरुवर के शुभ चरण पड़े, अब चमका भाग्य सितारा है।।

मंगलमयी प्रभाती गाओ, मंगल दीप सजाय के ।
शत् शत् वंदन करो गुरु को, अंतर भाव जगाय के ।।
आज समय ने ली अगड़ाई, फिर से तुम्हें पुकारा है।
गुरुवर के शुभ चरण पड़े, अब चमका भाग्य सितारा है।।

शाश्वत सुख का दर्शन जिनके, रग-रग का श्रृंगार है।
समता के भावों का सागर-अजर-अमर निर्विकार है।।
विद्या के सागर में जो डूबा, उसको मिला किनारा है।
गुरुवर के शुभ चरण पड़े, अब चमका भाग्य सितारा है।।

चंदन की सौरभ जिनके, पावन चरणों से झरती है।
दशों दिशायें जिन गुरुवर का नित अभिनंदन करती हैं।।
चरण धूलि अब माथ पड़े, यह परम सौभाग्य हमारा है।
गुरुवर के शुभ चरण पड़े, अब चमका भाग्य सितारा है।।

गुरुवर पनाह में.......

गुरुवर पनाह में हमें रखना, सीखें जिनधर्म पर हम चलना-2।

कपट करम चोरी बेइमानी, और हिंसा से हमको बचाना-2।
नाली का बन जाऊँ न पानी-2, निर्मल गंगा जल ही बहाना।
करुणा की छाँव में हमें रखना, सीखें जिनधर्म पर हम चलना।
गुरुवर...........

क्षमावान कोई तुमसा नहीं और मुझसा नहीं कोई अपराधी-2।
पुण्य की नगरी में भी मैंने-2, पापों की गठरी ही बांधी ।
अपनी निगाह में हमें रखना, सीखें जिनधर्म पर हम चलना।
गुरुवर...........

जीवन हम आदर्श बनायें, अनुशासन के नियम निभायें।
वीतराग जिनदेव भजेंगे, जिनवाणी अनुशरण करेंगे।
परम दिगम्बर मुनि पूजेंगे, उन पर श्रद्धा भक्ति बढ़ायें।
जीवन हम आदर्श बनायें, अनुशासन के नियम निभायें ।।

सदा बड़ों की विनय करेंगे, छोटों के प्रति प्रेम रखेंगे।
सबसे मिलकर नेक बनेंगे, शक्ति एकता की दिखलायें ।
जीवन हम आदर्श बनायें, अनुशासन के नियम निभायें ।।

गुरु उपकार नहीं भूलेंगे, गुरु संकेत से शिक्षा लेंगे।
विनय नम्रता ना भूलेंगे, धीरज समता को अपनायें।
जीवन हम आदर्श बनायें, अनुशासन के नियम निभायें ।।

रात्रि भोजन नहीं करेंगे, छान के पानी सदा पीयेंगे।
प्रभु के दर्शन नित्य करेंगे, इनके ही गुणगान को गायें।
जीवन हम आदर्श बनायें, अनुशासन के नियम निभायें ।।

कभी किसी से नहीं लड़ेंगे, प्रेमभाव हम सदा रखेंगे।
दुखियों पर हम दया करेंगे, उनकी सेवा कर सुख पायें।
जीवन हम आदर्श बनायें, अनुशासन के नियम निभायें ।।

चुगली भी हम नहीं करेंगे, बिना दिये कुछ चीज न लेंगे।
खोटी संगत सदा तजेंगे, सप्तव्यसन को दूर भगायें।
जीवन हम आदर्श बनायें, अनुशासन के नियम निभायें ।।

मंगल भावना

भावना दिन रात मेरी, सब सुखी संसार हो,
सत्य संयम शील का, व्यवहार घर-घर बार हो।

धर्म का प्रचार हो, और देश का उद्धार हो,
और ये बिगड़ा हुआ, भारत चमन गुलजार हो । भावना दिन...

ज्ञान के अभ्यास से, जीवों का पूर्ण विकास हो।
धर्म के आचार से, हिंसा का जग से ह्रास हो ।। भावना दिन...

शान्ति अरु आनंद का, हर एक घर में वास हो।
वीर वाणी पर सभी, संसार का विश्वास हो ।। भावना दिन....

रोग, दुख-भय-शोक-होवे, दूर सब परमात्मा
कर सके कल्याण अपना, सब जगत की आत्मा ।। भावना दिन...

मातृभूमि गान से

मातृभूमि गान से गूँजता रहे गगन।
स्नेह नीर से सदा फूलते रहें सुमन ।।
जन्म सिद्ध भावना स्वदेश का विचार हो,
रोम-रोम में रमा स्वधर्म संस्कार हो।
आरती उतारते प्राण दीप हों मगन ।।
स्नेह नीर...
हार के सुसूत्र में मोतियों की पंक्तियाँ,
ग्राम नगर प्रांत से संग्रहित शक्तियाँ।
लक्ष्य-लक्ष्य रूप से राष्ट्र हो विराट तन।।
स्नेह नीर...
ऐक्य शक्ति देश की प्रगति में समर्थ हो,
धर्म आसरा लिए मोक्ष काम अर्थ हो।
पुण्य भूमि आज फिर ज्ञान का बने सदन ।।
स्नेह नीर...

आचार्यश्री आर्जवसागरजी

अरिहन्त परमेष्ठी का स्वरूप

नष्ट हुए हैं घातिकर्म जहँ, दर्श ज्ञान सुख शक्ति मिली।
अनन्त चतुष्टय प्राप्त किया व, केवल ज्योति जिन्हें जगी॥
शुभ व परम औदारिक तन में, थित हैं शुद्ध परम आतम।
हैं अरिहंत जगत् परमेष्ठी, ध्यान योग्य हैं जो आतम॥

सिद्ध परमेष्ठी का स्वरूप

अष्ट कर्म तन नष्ट हुये हैं, लोकालोकी शुद्धातम।
जिस नर तन से शिव को पाया, पुरुषाकारी वह आतम॥
सिद्ध परम परमेष्ठी ऊपर, लोक शिखर पर सदा रहें।
करो ध्यान हो कर्म निर्जरा, फिर गम देखो कहाँ रहे॥

आचार्य परमेष्ठी का स्वरूप

दर्शन ज्ञान प्रधान धारते, वीर्य चरित व तप आचार।
जिसमें रत हो स्वयं तथाहि, करवाते सबको आचार॥
ऐसे हैं आचार्य-मुनि वे, परमेष्ठी का रूप धरें।
करें ध्यान हम सदा योग्य उन, गुरुवर सम हि रूप वरें॥

उपाध्याय परमेष्ठी का स्वरूप

जो रत्नत्रय युक्त रहें नित, धर्म उपदेश करें जन को।
वे मुनियों में उत्तम प्यारे, उपदेशक भाते जन को॥
उपाध्याय उन परमेष्ठी को, नमन सभी का पूर्ण रहे।
ज्ञान गहें सब चारित पालें, मिले हि सुख संपूर्ण रहे॥

साधु परमेष्ठी का स्वरूप

जो नित, बिन रागादि विशुद्ध, मोक्षमार्ग अनुकूल सदा।
दर्श ज्ञान से पूर्ण चरित को, साधें उत्तम सुखद मुदा॥
वे मुनि साधु परमेष्ठी हैं, उनको नमन हमारा है।
कर्मनाश हों शिवपथ चलकर, भव का मिले किनारा है॥

पञ्च परमेष्ठी भगवान की जय

दर्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पापनाशनम् ।
दर्शनं स्वर्गसोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनम् ॥ 1॥

दर्शनेन जिनेन्द्राणां, साधूनां वन्दनेन च ।
न चिरं तिष्ठते पापं, छिद्रहस्ते यथोदकम् ॥ 2॥

वीतराग मुखं दृष्ट्वा, पद्मरागसमप्रभम् ।
जन्मजन्मकृतं पापं, दर्शनेन विनश्यति ॥ 3॥

दर्शनं जिनसूर्यस्य, संसारध्वान्त नाशनम् ।
बोधनं चित्त पद्मस्य, समस्तार्थ प्रकाशनम् ॥ 4॥

दर्शनं जिनचन्द्रस्य, सद्धर्मामृत-वर्षणम् ।
जन्म-दाह-विनाशाय, वर्धनं सुख-वारिधेः ॥5॥

जीवादितत्त्व प्रतिपादकाय, सम्यक्त्व मुख्याष्टगुणार्णवाय।
प्रशान्तरूपाय दिगम्बराय, देवाधिदेवाय नमो जिनाय ॥6॥

चिदानन्दैक-रूपाय, जिनाय परमात्मने ।
परमात्मप्रकाशाय, नित्यं सिद्धात्मने नमः ॥7॥

अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम।
तस्मात्कारुण्यभावेन, रक्ष रक्ष जिनेश्वरः ॥8॥

नहि त्राता नहि त्राता, नहि त्राता जगत् त्रये।
वीतरागात्परो देवो, न भूतो न भविष्यति ॥9॥

जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्जिने भक्ति-र्दिनेदिने।
सदामेऽस्तुसदामेऽस्तु, सदामेऽस्तु भवेभवे ॥10॥

जिनधर्मविनिर्मुक्तो, मा भवेच्चक्रवर्त्यपि ।
स्याच्चेटोऽपिदरिद्रोऽपि, जिनधर्मानुवासितः ॥11॥

जन्मजन्मकृतं पापं, जन्मकोटिमुपार्जितम् ।
जन्ममृत्यु-जरा-रोगं, हन्यते जिन-दर्शनात् ॥12॥

अद्याभवत् सफलता नयन - द्वयस्य,
देव! त्वदीय चरणाम्बुज वीक्षणेन

अद्य त्रिलोक-तिलक ! प्रतिभासते मे,
संसार-वारिधिरयं चुलुक-प्रमाणः ॥ 13॥

जब बोलो

जब बोलो तब सच-सच बोलो,
कभी न बातें रच-रच बोलो।
जब बोलो तब हँसकर बोलो,
बातों में मिश्री-सी घोलो ।।1।।

जब बोलो तब झुक कर बोलो,
सोच समझ कर रुक कर बोलो।
जब बोलो तब खुल कर बोलो,
अपने मन की बातें खोलो ।।2।।

जब बोलो तब हितकर बोलो,
मन में आदर भरकर बोलो।
जब बोलो तब कम ही बोलो,
बिना अवसर मत मुँह को खोलो ।।3।।

जब बोलो तब मीठा बोलो,
कभी न कुछ भी कड़वा बोलो।
कभी किसी का भेद न खोलो,
घर की बात न बाहर बोलो ।।4।।

द्वेष-कपट रख कभी न बोलो,
निन्दा-चुगली का मल धोलो।
पहले तौलो फिर तुम बोलो,
वाणी में विष को मत घोलो।।5।।

सेवा

करते रहो सदा तुम सेवा,
सेवा से मिलती है मेवा।
सेवा से तुम मत घबराना,
दीन दुःखी का दुःख मिटाना ।।1।।

पहले पड़े यदि कष्ट उठाना,
नाक-भौंह मत कभी चढ़ाना।
अपना हो या हो बेगाना,
सदा सभी का हाथ बँटाना ।।2।।

सेवा है जग में सुख मूल,
इसे न जाना बच्चो ! भूल।
मिलती इससे बड़ी बढ़ाई,
यह है सबसे बड़ी कमाई ।।3।।

सेवा से मत डरना भाई,
सबकी सेवा करना भाई।
सेवक बन जाता है स्वामी,
जग में हो जाता है नामी ।।4।।

सुप्रभात स्तोत्र

यत्स्वर्गावतरोत्सवे यदभवज्जन्माभिषेकोत्सवे, यद्दीक्षाग्रहणोत्सवे यदखिल ज्ञानप्रकाशोत्सवे।
यन्निर्वाणगमोत्सवे जिनपतेः पूजाद्भुतं तद्भवैः, संगीतस्तुतिमंगलैः प्रसरतां मे सुप्रभातोत्सवः ॥ 1 ॥

श्रीमन्नतामर किरीटमणिप्रभाभि रालीढपादयुग दुर्द्धरकर्मदूर।
श्री नाभिनंदनजिनाजितसम्भवाख्य त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ॥ 2 ॥

छत्रत्रयप्रचलचामरवीज्यमान ! देवाभिनन्दनमुने ! सुमते ! जिनेन्द्र !
पद्मप्रभारुणमणिद्युतिभासुराङ्ग त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ॥ 3 ॥

अर्हन् ! सुपार्श्व ! कदलीदलवर्णगात्र, प्रालेयतारगिरिमौक्तिकवर्णगौर !
चन्द्रप्रभ ! स्फटिकपाण्डुरपुष्पदन्त ! त्वद्ध्यानऽतोस्तु सततं मम सुप्रभातम् ॥ 4 ॥

संतप्तकाञ्चनरुचे जिन ! शीतलाख्य ! श्रेयान ! विनष्ट दुरिताष्ट कलंङ्कपंङ्क !
बन्धूकबन्धुररुचे ! जिन ! वासुपूज्य ! त्वद्ध्यानऽतोस्तु सततं मम सुप्रभातम् ॥ 5 ॥

उद्दण्डदर्पकरिपो ! विमलामलांङ्ग ! स्थेमन्ननन्तजिदनन्तसुखाम्बुराशे !
दुष्कर्मकलमषविवर्जित धर्मनाथ ! त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ॥ 6 ॥

देवामरीकुसुमसन्निभ शान्तिनाथ ! कुन्थो ! दयागुणविभूषणभूषितांङ्ग।
देवाधिदेव ! भगवन्नरतीर्थनाथ, त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ॥ 7 ॥

यन्मोहमल्लमदभञ्जन मल्लिनाथ ! क्षेमङ्करावितथशासन सुव्रताख्य !
सत्संपदा प्रशमितो नमिनामधेय त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ॥ 8 ॥

तापिच्छगुच्छरुचिरोज्ज्वल नेमिनाथ ! घोरोपसर्गविजयिन् ! जिन ! पार्श्वनाथ !
स्याद्वादसूक्तिमणिदर्पण ! वर्धमान ! त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ॥ 9 ॥

प्रालेयनीलहरितारुणपीतभासं यन्मूर्तिमव्ययसुखावसथं मुनीन्द्रः।
ध्यायन्ति सप्ततिशतं जिनवल्लभानां त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ॥ 10 ॥

सुप्रभातं सुनक्षत्रं मांगल्यम् परिकीर्तितम्। चतुर्विंशतितीर्थानां सुप्रभातं दिने-दिने ॥ 11 ॥
सुप्रभातं सुनक्षत्रं श्रेयः प्रत्यभिनन्दितम्। देवता ऋषयः सिद्धाः सुप्रभातं दिने-दिने ॥ 12 ॥
सुप्रभातं तवैकस्य वृषभस्य महात्मनः येन प्रवर्तितं तीर्थं भव्यसत्त्वसुखावहम् ॥ 13 ॥
सुप्रभातं जिनेन्द्राणां ज्ञानोन्मीलितचक्षुषां। अज्ञानतिमिरान्धानां नित्यमस्तमितो रविः ॥ 14 ॥
सुप्रभातं जिनेन्द्रस्य वीरः कमललोचनः। येन कर्माटवी दग्धा शुक्लध्यानोग्रवह्निना ॥ 15 ॥
सुप्रभातं सुनक्षत्रं सुकल्याणं सुमंगलम्। त्रैलोक्यहितकर्तृणां जिनानामेव शासनम् ॥ 16 ॥

सात दिनों की शिक्षा

First day is Monday.
We will never eat Anday.
पहला दिन है मण्डे
कभी नहीं खायें अंडे।

Second day is Tuesday.
We will never Fight danday.
दूसरा दिन है मंगलवार।
डंडों से न देंगे मार।

Third day is Wednesday.
We will never become gunday.
तीसरा दिन है बुधवार।
गुण्डे बनने में ना सार।

Fourth day is Thursday.
We will go to temple everyday.
चौथा दिन है गुरूवार।
मंदिर जायेंगे नित बार।

Fifth day is Friday.
We will not lie any day.
पाँचवाँ दिन है शुक्रवार।
झूठ सदा होता निस्सार।

Sixth day is Saturday.
We will eat only in the day.
छठा दिन है शनिवार ।
दिन में खाने में है सार।

Last day is Sunday.
We will never cheat any day
अन्तिम दिन है रविवार।
धोखा छोड़ें भव से पार।

पाँच पाप

बुरा काम ही पाप कहाता, नरक निगोद है ले जाता,
उनकी संख्या होती पाँच, मत आने दो इनकी आँच।
हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, अरु परिग्रह बोता है,
वो नर जनम-जनम में भाई, दु:ख का बोझा ढोता है।।

किसी जीव को नहीं सताओ, सब जीवों के प्राण बचाओं।
परम अहिंसा धरम बताता, हिंसा पहला पाप कहाता।।

झूठ कभी मुख से मत बोलो, सदा सत्य हृदय से बोलो।
सत्य धर्म यह पाठ सिखाता, झूठ पाप से हमें बचाता ।।

नहीं किसी की वस्तु चुराओ, मालिक की आज्ञा से लाओ।
धर्म अचौर्य यही सिखाता, चोरी तीजा पाप कहाता ।।

बुरी नजर से कभी न देखो, पर नारी को माँ सम देखो।
ब्रह्मचर्य यह पाठ सिखाता, कुशील पाप से हमें बचाता।।

कभी अधिक पैसा मत जोड़ो, ममता लालच मन से छोड़ो।
अपरिग्रह का नियम बनाओ, जोड़ परिग्रह नरक न जाओ।।

पाँच पाप से रहना दूर, पाओगे तुम सुख भरपूर।
विद्या पास में आएगी, तुझको मोक्ष दिलाएगी ।।

चार कषाय

कषाय क्या कहलाती है? पराधीन जो करती है।
कर्मों से कसवाती है कषाय वह कहलाती है।।
कषाय कितनी होती हैं ? चार कषाय होती हैं।
क्रोध, मान, माया, लोभ, दुःखदायक जो होती हैं।।

पहले गुस्सा दिलाती है बाद में पिटवाती है।
पश्चात्ताप कराती है, क्रोध कषाय कहाती है।

मान करे जो होता मानी, कहें घमण्डी उसको ज्ञानी।
अहंकार करवाती है, मान कषाय कहाती है।।

मुख में राम बगल में छुरी, छोड़ इसे ये रीत बुरी।
मायाचारी धोखा है, धक्का मारो मौका है।।

एक हुये तो सौ की इच्छा, जोड़-जोड़ है मर जाना।
लोभ पाप का बाप बखाना, घोर नरक में है जाना ।।

इससे क्या-क्या हानि है, सुनलो गुरु की वाणी है।
मन चित हमको लानी है, सफल होय जिन्दगानी है ।।

क्रोध से हानि

द्वीपायन मुनि ऋद्धिधारी, क्रोध किया उनने अतिभारी।
जली द्वारिका स्वयं भी जल गये, क्रोध करन से हुई ये हानि।।

मान से हानि

इक लख पूत सवा लख नाती, रावण के घर दिया न बाती।
नरक गया वह रावण मानी, मान किया तो हुई ये हानि।।

माया से हानि

छल और कपट दगा बेईमानी, मायाचारी की ये निशानी।
तिर्यंच गति को पाता प्राणी, मायाचारी से हुई ये हानि।।

लोभ से हानि

वृक्ष में लटका था इक प्राणी, शहद बूंद का लोभी प्राणी।
नरक में पहुँचा ऐसा प्राणी, लोभ करन से हुई ये हानि।।

क्या कहते हैं अंक

क्या कहता है नम्बर एक	उसकी कर्मों की कटती रेख, जिसका जीवन होता नेक। पीछे नहीं आगे देख, खुद लिख अपने कर्म के लेख।।
क्या कहता है नम्बर दो	अपना जीवन ऐसा हो, पाप करम को धो दे जो। अपना जीवन व्यर्थ मत खो, धर्म कर्म ही अपना हो।
क्या कहता है नम्बर तीन	प्रभु भक्ति में होजा लीन, जैसे जल में होती मीन। कभी न बनना दीन मलीन, अपने आतम को लो चीन ।।
क्या कहता है नम्बर चार	शुद्ध सात्विक हो आहार, तब आते हैं उच्च विचार। आपस में सब करना प्यार, अपना कुटुम्ब है संसार।।
क्या कहता है नम्बर पांच	अपने अंदर मन को जाँच, फिर न लगती कोई आँच। कर्म नचाते सबको नांच, सत्य किताबों को ही बाँच ।।
क्या कहता है नम्बर छः	सत्य वचन सदा ही कह, समता रस में बहता रह। वीर प्रभु की बोलो जय, कर्म सारे होवें क्षय।।
क्या कहता है नम्बर सात	बीत गई दुःखों की रात, अब सुखों की हो बरसात। कभी न करना झूठी बात, जैनी कभी अभक्ष्य न खात ।।
क्या कहता है नम्बर आठ	अब तो पढ़ लो सच्चा पाठ, जाने कब उठ जाये ठाठ। पड़ा रहेगा सारा ठाठ, जल जायेगा जीवन काठ ।।
क्या कहता है नम्बर नौ	पाप कर्म है करता क्यों ? दुर्गतियों में पड़ता क्यों ? सत्य वचन से डरता ज्यों, जीवन खोता व्यर्थ ही त्यों।
क्या कहता है नम्बर दस	शान्ति सुधा का पीलो रस, जीवन बीतेगा हँस-हँस। अपने मन को ऐसा कस, जो हो जाये अपने वश।।

तीर्थंकरों के चिन्हों से शिक्षा

आदिनाथ जी का कहता बैल
छोड़ कपट के सारे खेल, छूट जाये कर्मों की जेल।
मन के निकालो सारे मैल, मोक्ष महल की पकड़ो गैल ।।

अजितनाथ जी का कहता हाथी
जिनवाणी माता समझाती, कोई किसी का नहीं है साथी।
चाहे जोड़ो दिन और राती, सारी माया यहीं रह जाती ।।

सम्भवनाथ जी का कहता घोड़ा
अब तो बचा है जीवन थोड़ा, फिर भी मन को अभी न मोड़ा।
विषयों को तुमने न छोड़ा, कैसे पाओगे मोक्ष का घोड़ा।।

अभिनन्दननाथ जी का कहता बंदर
कितनी कषायें भरी हैं अंदर,
छोड़ कषायें जाओ मंदर, छूट भगेंगे रोग समंदर।।

सुमतिनाथ जी का कहता चकवा
जीवन में मत खेलो जुआ, पाण्डवों का क्या हाल हुआ।
जिसने खेला कभी जुआ, उसका घर बर्बाद हुआ।।

पद्मप्रभ जी का कहता लालकमल
कभी किसी से करो न छल, तब जीवन होगा निर्मल।
सदा बढ़ाओ आतम बल, बने आतमा तभी संबल ।।

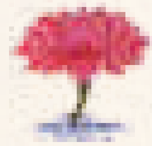

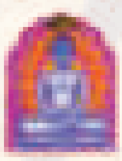

सुपार्श्वनाथ जी का कहता सांथिया।
जिसने संयम से जिया, उसने ही कल्याण किया।
जिसने काटे कर्म घातिया, उसने ही निर्वाण प्राप्त किया।।

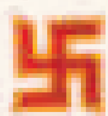

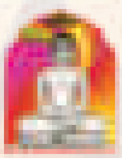

चन्द्रप्रभ जी का कहता चन्द्रमा।
सच्ची है जिनवाणी माँ, सदा ही रक्खो सद्भावना।
मांगो नहीं करो साधना, पूरी होगी सब कामना।।

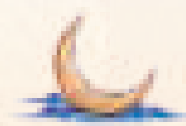

तीर्थंकरों के चिन्हों से शिक्षा

पुष्पदन्त जी का कहता मगर
मोक्ष महल की चलो डगर, वहाँ नहीं किसी का डर।
अब तो पहुँचो अपने घर, हो जाओ फिर सदा अमर।।

शीतलनाथजी का कहता कल्पवृक्ष
एक ही रक्खो अपना लक्ष्य, धर्म कर्म में हो जा दक्ष।
न्याय करो सदा निष्पक्ष, कभी न लो किसी का पक्ष ।।

श्रेयांसनाथ जी का कहता गेंडा
रस्ता कभी चलो न टेड़ा, सीधे चलो चाहे होवे फेरा।
छूट जाय कर्मों का घेरा, समकित का हो जाय सबेरा।।

वासुपूज्य जी का कहता भैंसा
जैसी करनी फल होता वैसा, याद रखो ये सत्य हमेशा।
करना कभी न काम ऐसा, जिससे आवे खोटा पैसा ।।

विमलनाथ जी कहता शूकर
ऐसा काम कभी न, तू कर, रावण सम रोये जीवनभर।
दान करो करुणामय होकर, क्यों काया के बनते नौकर।।

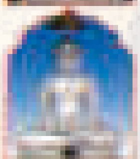

अनन्तनाथ जी का कहता सेही
धर्म करें धर्मी हों वे ही, सब धर्मों का सार ये ही।
प्राणी मात्र के बनो स्नेही, मनुज जन्म का सार ये ही ।।

धर्मनाथ जी का कहता बज्रदण्ड
कभी न करना कोई घमण्ड, व्रत पालो तुम सदा अखण्ड।
व्रत छोड़ हुये उदण्ड, तो पाओगे बहुत ही दण्ड।।

शांतिनाथ जी का कहता हिरण
परमेष्ठी की रहो शरण, समता में हो जाये मरण।
शांति प्रभु के गहो चरण, आत्म सुख का करो वरण ।।

तीर्थंकरों के चिन्हों से शिक्षा

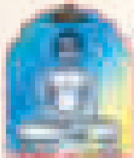

कुन्थुनाथ जी का कहता बकरा
सम्हल के चलो पथ है सकरा, जो नहीं सम्हला वही गिरा,
तब माया में क्यों घिरा, पकड़ ले अब तो धर्म सिरा ।।

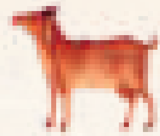

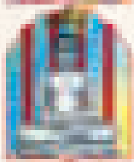

अरहनाथ जी की कहती मीन
प्रभु भक्ति में हो जा लीन, अपने आतम को फिर चीन।
न कोई राजा न कोई दीन, रतन कमा लो बस तुम तीन।।

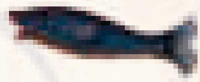

मल्लिनाथ जी का कहता कलशा
मन निर्मल बना लो जल सा, और मनाओ ऐसा जलसा।
समाधिमरण का चढ़ाओ कलशा, और पाओ मुक्ति फल सा।।

मुनिसुव्रतनाथ जी का कहता कछुआ
जो होना था वही हुआ, अच्छा करो मिलती दुआ।
अन्तर मन को जिसने छुआ, उसका जीवन सफल हुआ।।

नमिनाथ जी का कहता कमल
सीधा सरल रास्ता चल, उसका उत्तम मिलता फल।
न कोई कपट न कोई छल, सभी समस्या होती हल।।

नेमिनाथ जी का कहता शंख
संयमधारी रहे निःशंक, मुक्ति जायें बिना पंख।
न कोई राजा न कोई रंक, वहां रहते सभी निसंग।।

पार्श्वनाथ जी का कहता सांप
अपने अन्तर मन को भांप, फिर अपने जीवन को नाप।
बनी रहेगी अपनी छाप, कभी न मिटती अपने आप।।

वर्द्धमानजी का कहता शेर
इतनी क्यों लगाई देर, अब तो मना ले अपनी खैर,
न कोई अपना न कोई गैर, सारे छोड़ो अब तो बैर ।।

जादू का थैला

ओ मेरे जादू के थैले, अंतर-मंतर-जंतर-जू।
जल्दी से मेरे थैले में लड्डू-पेड़े भर दे तू,
फिर मैं डग-डग जाऊंगा, थोड़ा मैं भी खाऊंगा।
जो भी भूखा दुबला होगा, उसे बांटता जाऊंगा ।।1।।ओ.
जल्दी से मेरे थैले में धोती-कुर्ता भर दे तू,
फिर मैं डग-डग जाऊंगा, सबको पास बुलाऊंगा।
जो भी फटे पुराने पहने, उन्हें बांटता जाऊंगा ।।2।।ओ.
जल्दी से मेरे थैले में आम संतरे भर दे तू,
फिर मैं डग-डग जाऊंगा, सब पर प्यार लुटाऊंगा।
जो भी रोगी दीन मिलेगा, सबको स्वस्थ बनाऊंगा।।3।।ओ.
जल्दी से मेरे थैले में, खूब किताबें भर दे तू,
फिर मैं डग-डग जाऊंगा, सबको टेर लगाऊंगा।
जो भी अनपढ़ जहाँ मिलेगा, उन सबको पढ़वाऊंगा ।।4।।
ओ मेरे जादू के थैले, अंतर-मंतर-जंतर-जू।
अब मेरी यह बात मान ले, सबको प्रभुसा कर दे तू।।

दिन में भोजन

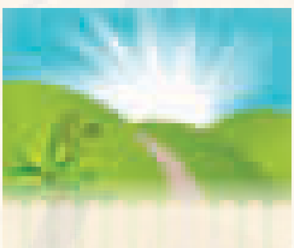

रात में रोटी कभी न खाओ, महापाप से तुम बच जाओ।
रात में मच्छर हो जाते हैं, भोजन में वे गिर जाते हैं।।
जीरा समझ के खा जाते हैं, सदा बीमारी को पाते हैं।
शुद्ध हवा दिन में मिल पाती, रात विषैली हवा बहाती।।
भोजन दूषित हो जाता है, पाचन होने ना पाता है।
भैय्या ! रात भयानक काली, जीवों की बौछार बिछाती ।।
मेरी बहिना बहुत है अच्छी, रात में रोटी वह ना खाती।
दिन में भोजन पाच्य सदा है, बुद्धि विकास का तथ्य यहाँ है।।
दिन में भोजन करते जाओ, अजर अमर पद को तुम पाओ ।।४।।

श्री आदिनाथ भगवान

A for O my AADINATH!
Be with me in every path.
Never foreget naughty son,
You are father super one.

आ रे आदिनाथ प्रभु मेरे, साथ रहो हर पथ पर मेरे।
हमें न भूलों हम हैं बच्चे, हम नादान पिता तुम अच्छे ।।

श्री अजितनाथ भगवान

Shri AJITNATH is your name!
What to say for your fame.
You are winner best of all,
I am missing every ball.

अजितनाथ है नाम तुम्हारा, क्या कहना यश गान तुम्हारा?
आप रहे हो श्रेष्ठ विजेता, सीख आपसे मैं ना लेता ।।

श्री संभवनाथ भगवान

Save me SAMBHAVNATH dada !
Show me true way O dada !
How to walk in blackish night ?
give me your super light.

हे संभवप्रभु मुझे बचाओ, सच्चा रास्ता मुझे दिखाओ।
कैसे चलूँ रात है काली? मुझे रोशनी दो निजवाली ।।

श्री अभिनंदन भगवान

That one is my golden day,
ABHINANDAN swami I pray.
Tell me O God! where you stay?
How to come, you show me way?

करूँ प्रार्थना अभिनंदन जी, वो मेरा सोने सा दिन ही।
आप कहाँ हो मुझे बताओ? कैसे आऊँ राह बताओ ?।।

श्री सुमतिनाथ भगवान

You are in my every thought;
Let me lead life as you taught.
SUMATINATH give wisdom nice;
So that I fall never twice.

आप विचारों में नित रहते, जो जीऊँ मैं ज्यों तुम कहते।
सुमतिनाथ सद्बुद्धि हमें दो, कभी दुबारा गिरूँ न मैं तो।।

श्री पद्मप्रभ भगवान

I like you most superme dad;
your face is rosy red.
PADMPRABH swami so high,
You can forget how can I ?

कहूँ आपको उच्च पिताजी, पद्मप्रभ मुख लाल गुलाबी।
आप भूल सकते प्रभु हमको, कैसे भूलेंगे हम तुमको ।।

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान

I am candle you are light :
I am eye and you are sight.
I am heart and beat you are,
SUPARSHWANATH Ji not you far.

आप प्रकाश, मैं मोम बाती, आँख रहा मैं आप हो ज्योति।
हृदय रहा मैं, धड़कन हो तुम, सुपार्श्वप्रभु अब दूर नहीं तुम।।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान

Come Come Come shining moon!
See my CHANDAPRABHJI soon
Why you look so dull and pale?
Sea of sorrow you can sail.

अरे चमकते चन्दा आओ, शीघ्र चन्द्रप्रभु मम लख जाओ।
सुरत मंद क्यों तुम हो दिखते? इनसे भव सागर तिर सकते।।

श्री पुष्पदंत भगवान

I like lovely number nine.
SUVIDHINATH swami is mine.
Forget Oh God! my mistake.
My burden you have to take.

मुझे अंक नौ का है भाता, पुष्पदन्त तुम मेरे नाथा ।
मेरी गलती आप भुलाओ, हल्का मेरा भार कराओ।।

श्री शीतलनाथ भगवान

Burning world is too much hot.
where to get cold water-pot.
push me out of burning flame.
SHEETALNATH you same as name.

जलती दुनिया बहुत गरम है, कहाँ शीत पानी बर्तन है?
तप्त आग से मुझे बचाओ, शीतलनाथ आप कहलाओं ।।

श्री श्रेयांसनाथ भगवान

Night is dark and journey long.
SHREYANSHNATH sing you name.
Singing makes my journey sweet,
Reserve me a mukti seat.

रात अंधेरी लम्बी यात्रा, गीत श्रेयांशप्रभु के गाता।
मीठी यात्रा गाना करता, मोक्ष सीट आरक्षित करता।।

श्री वासुपूज्य भगवान

You are ocean of mercy !
Give me lovely master key.
Can you see look on my door ?
VASUPUJYA swami I adore.

वासुपूज्य प्रभु दया के सिन्धु, भक्त आपका मैं इक बिन्दु।
मुक्ति द्वार पर मेरे ताला, चाबी दो प्रभु खोलूँ ताला ।।

श्री विमलनाथ भगवान

Flowing water I have seen.
Make my heart so pure and clean.
VIMALNATHJI wash my dirty mind.
Remove dust of every kind.

बहता पानी निर्मल जैसे, विमलनाथ मम हिय को ऐसे।
गंदा मम मन साफ बनाओ, सभी धूल को आप हटाओ।।

श्री अनन्तनाथ भगवान

So many stars are in the sky,
Counting ever can't I try.
Ocean I can not measure
Such is ANANTNATH'S treasure.

बहुत सितारे नभ में रहते, उनकी गिनती ना कर सकते।
मैं सागर को नापूं कैसे, अनंतप्रभु का वैभव ऐसे ।।

श्री धर्मनाथ भगवान

DHARMNATH JI Kill my karma,
You are preascher of dharma,
Come on my lord almighty,
Waiting for you eagerly.

धर्म प्रचारक आप रहे हो, बलशाली भी आप रहे हो।
धर्मनाथ मम कर्म नशाओ, मेरे मन मंदिर में आओ।।

श्री शान्तिनाथ भगवान

Aairadevi's lovely son,
Give me peace and compassion.
In this world my own is none.
SHAANTINATH is only one.

ऐरादेवी के सुत प्यारे, दया शांति दो हमें सहारे ।
इस जग में कुछ साथ न मेरे, शांतिनाथ प्रभु बस तुम मेरे।।

श्री कुन्थुनाथ भगवान

I am child innocent,
KUNTHUNATH JI excellent.
You are Ocean I am drop,
I at bottom you at top.

मैं मासूम रहा इक बच्चा, कुन्थुनाथ का द्वारा सच्चा।
मैं हूँ बूँद आप हैं सागर, मैं हूँ तलपर आप शिखर पर ।।

श्री अरनाथ भगवान

I am carrying bird in cage,
I can not, see my image.
Shri ARAHNATH my ambition,
I May get final Liberation.

मैं पंक्षी पिंजड़े में रहता, अपनी छाया देख न सकता।
मेरी इच्छा पूर्ण कराओ, अरहनाथ भव छोर दिलाओं।।

श्री मल्लिनाथ भगवान

Stop my birth and death cycle,
Show MALLINATH JI miracle.
Let me Always stay with you,
Leave this old home to new.

जन्म मरण भव चक्र रुकाओ, मल्लिनाथ अतिशय दिखलाओ।
साथ आपका मैं नित पाऊँ, तज कर यह तन में शिव पाऊँ।।

श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान

Chuk-Chuk-Chuk running train,
World is full with sorrow pain.
Open for me mukti gate,
Shri MUNISUVRAT swami great.

रेल दोड़ती छुक-छुक-छुक, दर्द भरा जग दुख दुख दुख।
खोलो मुक्ति का दरबाजा, हे मुनिसुव्रत प्रभु जिनराजा।।

श्री नमिनाथ भगवान

I don't pray for worldly wealth,
Not for name or body health.
NAMINATH, never Lessen faith,
Name on lips till final breath.

भव वैभव तन स्वास्थ न चाहूँ, नमिनाथ मैं नाम ना चाहूँ।
श्रद्धा मेरी कम ना होवे, नाम आपका लब पर होवे ।।

श्री नेमिनाथ भगवान

In my heart you own a place,
That is like a special case.
I Like NEMINATH'S glowing face,
Bless me God with supreme grace.

मेरे हिय में प्रभु तुम रहते, खास बात इसको हम कहते।
नेमिनाथ का मुख चमकीला, दो आशीष हरो भव लीला ।।

श्री पार्श्वनाथ भगवान

Kamatha harmed you not the less,
Blessed you him with forgiveness.
Oh PARSHWANATH give me patience,
Can not move me distrubance.

कमठ वार से तुम ना हारे, किया क्षमा आशीष दिया रे।
धैर्य सहारा पार्श्वनाथ दो, जीत सकें हम बाधाओं को ।।

श्री महावीर स्वामी

Kingdom place ornament
You had but no attachment
Left you all Oh MAHAVEER! brave
Give me all what you have.

राज्य महल वैभव सब पाया, छोड़ दिया वह ना अपनाया।
लिये बहादुर महावीर जो, मुझको भी वह थोड़ा दे दो ।।

जिनवर- स्तुति
(स्वयम्भू चौबीसी)

आदिनाथ जिनवर नमूं, कर्म सभी धुल जायँ । तब गुण-गण का लाभ हो, समता- दल खिल जायँ ।।1।।
दया-धर्म उपदेश यह, जग को दिया हितार्थ । धर्म, मोक्ष पुरुषार्थ से, जीवन होता सार्थ ।।2।।
अजितनाथ को माथ यह, झुका रहा दिन-रात। भवोदधि के बीच से, निकाल पकड़ो हाथ ।।3।।
विशाल तव प्रभु तीर्थ का, प्रभाव फैला लोक । जीते तव दुख तीर्थ ने, आधि-व्याधि सब शोक ।।4।।

•••

संभव जिनवर आपसे, नहीं असंभव कार्य । शेष रहे न देश में, अनार्य बनते आर्य ।।5।।
समता प्रभुता पायँ सब, तव चरणों दें जाप । फूलें फलते योग से, शिव वरते हैं आप ।।6।।
अभिनन्दन गुण का करें, गुण का कोश विशाल । दर्शन, ज्ञान, चरित्र की, सम्पद् हो खुशहाल ।।7।।
सदा- नन्द आतम रहे, नन्दन बन स्वाधीन । अभिनन्दन के शुभ चरण, पकड़ूँ हो लवलीन ।।8।।

•••

सुमति होय यह मम-मति, तव-सम सुंदर पूर्ण । कुमति मिटा दो सन्मति, दे दो प्रभु सम्पूर्ण ।।9।।
समवसरण वैभव जहाँ, शोभें आप जिनेन्द्र। मंगल प्रातिहार्य सह, मुनिगण पूजें इंद्र ।।10।।
पद्मप्रभु हो लाल तुम, पाद गुलाबी रूप। भवित चकित लख रूप तव, होते प्रभु अनुरूप ।।11।।
रंगित नभ तव रंग में, इंद्र-वृंद समुदाय । आप-गुणों की गंध में, महक लोक सब जाय ।।12।।

•••

सुपार्श्व जिनके पार्श्व में, अनंत-गुण अभिराम । आप-चरण में वास हो, मिले निजी आराम ।।13।।
शुचि-मय तन मन तब बने, जब आवें तुम पास । चेतन पावन भी बने, तव गुण के जब दास ।।14।।
चन्द्रप्रभु लख चन्द्रमा, होता लज्जित रोज । आभा अनुपम आपकी, सहस्त्र सूर्य सम ओज ।।15।।
समता पाते आपसे, भविक लोक के नाथ । मन पवित्र कर भव्य को, वरो मोक्ष नत माथ ।।16।।

•••

पुष्पदंत ने क्षय किया, विधि को सुविधि पाय। देह-राग को छोड़कर, गुणनिधि जग में भाय ।।17।।
आप-चरण में बैठकर, साता पाते संत । हमें दीजिये शीघ्र ही, शुभ-गुण सभी अनन्त ।।18।।
शीतल प्रभु की छाँव में, कल्पतरु का योग । विषय-दाह सब शान्त हो, चेतन का हो भोग ।।19।।
मोक्षमार्ग से मोक्षसुख, फलता-तव पद भाय। अतः रात-दिन शरण में, बैठूँ समता आय ।।20।।

•••

श्रेय-मार्ग में आपसे, होता जग का क्षेम । जीव मात्र पर हो दया, जहाँ जगत् पर प्रेम ।।21।।
श्रेष्ठ बनें उपकार से, सर्व मिटे संताप । प्रभु श्रेयांस के नाम से, भग जाता अभिशाप ।।22।।
वासुपूज्य जग पूज्य हो, तव सम नहीं सुपूज्य । भविजन तुमको पूजते, इक दिन बनते पूज्य ।।23।।
पूजा ना संसार में, कभी रुलाती जान । झुकता फल से हो लदा, वृक्ष पाय सम्मान ।।24।।

•••

विमल अमल जिन तुम बने, पाप शत्रु को छोड़ । परिषह सह उपसर्ग भी, सहे विषय मुख मोड़।।25।।
बाल-भक्त को बोध दो,सुविजित बनूँ कषाय । विषय-वासना में कभी, परिणति वह न जाय ।।26।।
अनंत-शक्ति के धाम जिन, गुण की मिले पराग । नमूँ पुण्य हो कर्म-क्षय, शुचि आतम में जाग ।।27।।
आतम-बल उन्नत बने, धर्म-कर्म में नेक । ज्ञानभानु का हो उदय, चिर चैतन्य-विवेक ।।28।।

•••

धर्म-शिरोमणि आप हो, धर्म-तीर्थ के नाथ । धर्म तारता कष्ट से, सभी जगह दे साथ ।।29।।
भवसुख देता मात्र ना, शिवसुख देता पूर्ण । तीर्थ, राजपद सम्पदा, अतिशय गुण सम्पूर्ण।।30।।
परम-शान्ति दाता प्रभु, शांतिनाथ भगवान । चक्री-पद तव त्याग से, बढ़ी धर्म की शान।।31।।
करूँ महा पुरूषार्थ तव-सम, बन जाऊँ नाथ । मिले मोक्ष तब तक प्रभो, नहीं छोड़ना साथ ।।32।।

•••

सदया कुन्थु महान हो, नहीं जगत् से स्वार्थ । आत्म-शुद्ध कर शील धर, पाया है परमार्थ।।33।।
तत्त्व द्रव्य उपदेश दे, सार्थक किया जहान । योग ध्यान उपयोग से, बनता लोक महान ।।34।।
अरहनाथ रत आत्म में, भव सुख तन को भूल । नश्वर-जग के भोग सब, बतलाये प्रतिकूल।।35।।
शाश्वत -सुख ही ध्येय जब-बने मिले जगचूल । वहीं परम आनंद वह, दे दो प्रभु भवकूल ।।36।।

•••

मल्लिनाथ विधि मल्ल को, हरा दिया बन शूर । आत्म-ब्रम्ह में लीन हो, शीलवान बन पूर।।37।।
मंगल-मूरत सौम्य हो, धर्म बनाया मीत । पुलकित हो तव पाद में, निशि दिन गाऊँ गीत ।।38।।
मुनियों के सुन्दर जहाँ, व्रत के धारक श्रेष्ठ । शुक्लध्यान शुभ लीन तुम, उत्तम तप में ज्येष्ठ।।39।।
संयम, व्रत से कर्म का, करूँ नाश यह चाह । भ्रमण भवों का छोड़ हो, शिवसुख में अवगाह ।।40।।

•••

नमि-जिन ने मिथ्यात्व तम, नशा दिया अविलंब । भविक-जनों को मोक्ष में, होगा कहाँ विलम्ब।।41।।
नम नम नमि-जिन आपके, पद पंकज विधि धोय । तव-ध्यानी बन एक दिन, तव-सदृश भवि होय ।।42।।
नभ में नीले शोभते, फीका नभ का नील । लीन नेमि-जिन ध्यान में, डूबे गहरी झील।।43।।
सलिल शीत हर ताप को, शीतल भरे सुगंध । अधिक शीत,पंकज समा, तव-गुण गण-मकरंद ।।44।।

•••

पार्श्व बिठा लो पास जिन, ना हो भक्त उदास । पारसमणि हो लोह को, कंचन करना खास।।45।।
विषय-वासना जंग-सम, होय दोष का नाश। शिवपद, केवलज्योति का, शाश्वत भरो प्रकाश ।।46।।
वीर-प्रभु तुम क्षीर-सम, धवल-गुणों के धाम । आप-ध्यान से आत्म में, भवि पाते आराम।।47।।
धर्म-अहिंसा नाद से, हिंसा का प्राणांत । अनेकांत के ज्ञान से, भगा तिमिर एकांत।।48।।

-प्रशस्ति-

चौबीसी जिनवर नमूं, आदिनाथ से वीर । 'आर्जव' बन तव ध्यान से, पाऊँ भव का तीर।।49।।
पवइ-नगर में यह लिखी, जिनवर-स्तुति जान । मूल पार्श्व-जिन बस शरण, देवें पद निर्वाण।।50।।

सिद्धों की श्रेणी में

सिद्धों की श्रेणी में आने, वाला जिनका नाम है।
जग के उन सब मुनिराजों को-, मेरा नम्र प्रणाम है॥

मोक्ष मार्ग पर अंतिम क्षण तक, चलना जिनको इष्ट है।
जिन्हें डिगा सकता ना पथ से, कोई विघ्न अनिष्ट है॥
जिनकी है निःस्वार्थ साधना-2, जिनका तप निष्काम है...
जग के...... ॥
मन में किंचित हर्ष न लाते, सुन अपना गुण-गान जो।
और वे अपनी निंदा सुनकर, करते नहीं विषाद जो॥
दोनों समय शांति में रहना-2, जिनका शुभ परिणाम है...
जग के...... ॥
हर उपसर्ग सहन जो करते, माने कर्म विचित्रता।
एक भाव से झेला करते, ठंडी-वर्षा-उष्णता॥
उनकी जैसी शीतल छाया-2, वैसी भीषण घाम है...
जग के...... ॥
जिनका समता धन खरीदने, को असमर्थ कुबेर जो।
रत्नत्रय से भरते रहते, अपना चेतन कोष जो॥
और उसी की रक्षा में रत-2, रहते आठों याम हैं...
जग के...... ॥
सिद्धों की श्रेणी में आने, वाला जिनका नाम है।
जग के उन सब मुनिराजों को-, मेरा नम्र प्रणाम-2॥

समाधि-भक्ति

तेरी छत्र छाया भगवन्, मेरे शिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
मेरा अंतिम...तेरी छत्रछाया भगवन्......

जिनवाणी रस पान करूँ मैं, जिनवर को ध्याऊँ।
आर्य जनों की संगति चाहूँ, व्रत संयम पाऊँ॥
गुणी जनों के सद्‌गुण गाऊँ-2, जिनवर यह वर दो।
मेरा अंतिम...तेरी छत्रछाया भगवन्......

पर निंदा न मुख से निकले, मधुर वचन बोलूँ।
हृदय तराजू पर हितकारी, संभाषण तौलूँ॥
आत्म तत्त्व की रहे भावना-2, भाव विमल कर दो।
मेरा अंतिम...तेरी छत्रछाया भगवन्......

जिनशासन से प्रीति बढ़ाऊँ, मिथ्यातम छोड़ूँ।
चिदानंद चैतन्य भावना, जिनमत से जोड़ूँ॥
जनम-जनम में, जैनधर्म ये-2, मिले कृपा कर दो।
मेरा अंतिम...तेरी छत्रछाया भगवन्......

मरण समय गुरु पाद मूल हो, संत समूह रहे।
जिनालयों में जिनवाणी की, गंगा नित्य बहे॥
भव-भव में, सन्यास मरण हो-2, नाथ हाथ धर दो।
मेरा अंतिम...तेरी छत्रछाया भगवन्......

बाल्यकाल से अब तक, मैंने जो सेवा की हो।
देना चाहो प्रभु आप तो, बस इतना फल दो॥
श्वास-श्वास अंतिम श्वासों में-2, णमोकार भर दो।
मेरा अंतिम...तेरी छत्रछाया भगवन्......

विषय कषायों को मैं त्यागूं, तजूँ परिग्रह को।
मोक्ष-मार्ग पर बढ़ता जाऊँ, नाथ अनुग्रह हो॥
तन पिंजर से मुझे निकालो-2, सिद्धालय घर दो।
मेरा अंतिम...तेरी छत्रछाया भगवन्......
भद्रबाहु सम गुरु हमारे, हमें भद्रता दो।
रत्नत्रय संयम की शुचिता, हृदय सरलता दो॥
चन्द्र गुप्त-सी गुरुसेवा का-2, पाठ हृदय भर दो।
मेरा अंतिम...तेरी छत्रछाया भगवन्......
अशुभ न सोचूँ, अशुभ न चाहूँ, अशुभ नहीं देखूँ।
अशुभ सुनूँ ना, अशुभ कहूँ ना, अशुभ नहीं लेखूँ॥
शुभ चर्या हो, शुभ क्रिया हो-2, शुद्ध भाव भर दो।
मेरा अंतिम...तेरी छत्रछाया भगवन्......
तेरे चरण कमल द्वय जिनवर, रहें हृदय मेरे।
मेरा हृदय रहे सदा ही, चरणों में तेरे॥
पंडित-पंडित मरण हो मेरा-2, ऐसा अवसर दो।
मेरा अंतिम...तेरी छत्रछाया भगवन्......
दुःख नाश हों कर्म नाश हों, बोधि लाभ भर दो।
जिनगुण से प्रभु आप भरे हो, वह मुझमें भर दो॥
यही प्रार्थना, यही भावना-2, पूर्ण आप कर दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
मेरा अंतिम...तेरी छत्रछाया भगवन्......

गुरुवंदन

जय जिन सन्मति वीर महान, मोक्ष-प्रदायक नित वंदन।
श्री शान्तिसागर सूरि प्रधान, शिव-पथ-दर्शक मम वंदन ॥
श्री ज्ञानसागर सूरि प्रणाम, महाकवि तव मार्ग परम।
विद्यासागरजी, सीमन्धर-सूरि नमन शिव मिले परम॥

बारह भावना

(1) अनित्य अनुप्रेक्षा

बारह-भावन का चिंतन भवि, मोह-भाव-तज करते हैं ।
विषय पंच इन्द्रिय के जिनको-क्षणिक सदा नित कहते हैं ॥
यौवन धन गृह परिजन जो भी, इस जीवन में दिखते हैं ।
मेघाकार व इन्द्रधनुष-सम, ज्ञानी नश्वर लखते हैं ॥

(2) अशरण अनुप्रेक्षा

हरि के आगे जैसे मृग का, शरण रहे ना कोई है ।
उसी तरह इस जग में देखो, अमर रहे ना कोई है ॥
जहाँ मृत्यु के आगे सुरपति, नरपति खगपति ना बचते ।
मंत्र-तंत्र हैं नहीं बचावें, ऐसा ज्ञानीजन कहते ॥

(3) संसार अनुप्रेक्षा

यह संसार असार रहा है, सदा दुःखों से भरा हुआ ।
भ्रमता प्राणी विषय-सुखों में, भव-बंधन में बँधा हुआ ॥
जैसे खड्ग-धार पर मीठे, लगे स्वाद को कौन चखे ?
जिह्वा कटती खड्ग़धार से, स्वादु-अज्ञ ना उसे लखे ॥

(4) एकत्व अनुप्रेक्षा

जन्म-मरण अरु सुख दुःखों को, जीव अकेला पाता है ।
कहाँ बाँटने दुःखादिक को, कौन सामने आता है? ॥
गृहजन-माता पितादि सब ही, जगत् स्वार्थ के साथी हैं ।
पाप-कर्म में दुखीजनों को, ना दुनिया अपनाती है ॥

(5) अन्यत्व अनुप्रेक्षा

जैसे मिलकर रखा दुग्ध अरु, जल लक्षण से भिन्न रहा ।
वैसे चेतन अरु इस तन का, जिनवर ने है भेद कहा ॥
फिर वह देखो सदा दूर जो, धन गृह आदिक जहाँ रहे ।
क्या हो सकते हैं चेतन के, भिन्न रहे जिननाथ कहें ॥

(6) अशुचि अनुप्रेक्षा

प्राणी का तन खून मांस से, बना हुआ इक गृह जानो ।
तथा घिनौने पदार्थ बहते, जिसे अपावन पहचानो ॥

सुंदर - सुंदर और सुगंधित, पदार्थ जितने ही आते ।
तन के स्पर्श मात्र से सारे, दुर्गंधित हैं बन जाते ॥

(7) आस्त्रव अनुप्रेक्षा

इस जग में आस्त्रव के कारण, कुधर्म कुदेवादि जानो ।
इसी तरह मिथ्यात्व अविरति व, कषाय योग सहित जानो ॥
तथा प्रमादी आतम है जो, उसे सदा हो आस्त्रव वह ।
ये ही दुख के मूल हेतु हैं, तजो धर्मी हे ! आस्त्रव वह ॥

(8) संवर अनुप्रेक्षा

ज्ञानी आत्मा मन-वच-तन से, मिथ्यात्वादिक जब छोड़े ।
राग-द्वेष व पुण्य-पाप से, जब आतम यह मुख मोड़े ॥
पूर्ण कर्म का आना रुकता, मुनिवर में, संवर जानो ।
ध्यान लगाकर समता-पूर्वक, आतम में बसना जानो ॥

(9) निर्जरा अनुप्रेक्षा

जन्म-जन्म से कर्मों का यह, आतम बना खजाना है ।
जहाँ नष्ट हों स्वयं कर्म जब, उत्तम सुख ना माना है ॥
पुरुषार्थी वह तप के बल से, जब कर्मों का नाश करे ।
रखे पाल में आम पके सम, उत्तम सुख में वास करे ॥

(10) लोक अनुप्रेक्षा

तीन लोक यह सब जीवों से, भले रूप से भरा हुआ ।
ना कोई है कर्त्ता इसका, धारण भी ना किया हुआ ॥
नहीं नाश कर सकता कोई, अविनश्वर जो कहलाता ।
रहता जिसमें जीव अकेला, कर्मों का है फल पाता ॥

(11) बोधिदुर्लभ अनुप्रेक्षा

अहमिन्द्रादिक के वैभव वा, राजाओं के तन-सुख को ।
अनंत भव से भोगा जिसने, ना पाया चेतन-सुख को ॥
रत्नत्रय जो नहीं मिला है, रहा यही कारण जिसका ।
धारें उसको दुर्लभ जो है, सदा करें पालन जिसका ॥

(12) धर्म अनुप्रेक्षा

जैनधर्म में मूल-रूप से, धर्म अहिंसा माना है ।
तथा जगत् में सर्वोत्तम वह, धर्म क्षमादि जाना है ॥
उसी धर्म में सच्चा सुख है, सदा उसी के गुण गायें ।
बन त्यागी वैरागी 'आर्जव', शीघ्र मोक्ष-सम्पत् पायें ॥

श्रेय-भावना

(छन्द–बसंततिलका)

आत्माजयी विगतराग प्रभो नमूँ मैं।
श्री जैन धर्म इससे निज को लखूँ मैं।।
हैं पूज्य आप जग में सबको सुहाते।
राजा सुरासुर मुनी तव गीत गाते।।1।।

श्रीमज्जिनेन्द्र प्रभु के शुभ गीत गाऊँ।
मैं चाहता यह भवोदधि पार पाऊँ।।
मैं मांगता न कि कभी शिव दूर होवे।
चाहूँ कभी शरण ये न सुदूर खोवे।।2।।

श्रेयोदयी जिन नमूँ तव पाद पद्म।
ज्ञानी बने तुम नशाकर आठ कर्म।।
आनंद से तव जिनेन्द्र सुभक्ति गाऊँ।
जीतूँ सभी करम मैं भव मुक्ति पाऊँ।।3।।

ये भद्रबाहु मुनि अंतिम केवली जो।
ध्याऊँ सुपाद सुगुणी गुण की निधी दो।।
पाऊँ निजी परम ज्ञान सु संपदा मैं।
जानूँ सुखी मम सु-भासुर चेतना मैं।।4।।

सौभाग्य से यह अहो! क्षण सौम्य आया।
पाया महा धरम ये प्रभु का बताया।।
धारूँ उसे हृदय में सिर को झुकाके।
होऊँ सुखी बस शिवालय मोक्ष पाके।।5।।

गुरुवर के दर्शन भये

गुरुवर के दर्शन भये-२ कि मन मेरा हर्षाये-२
पावन गुरु के चरण कमल हैं-२
आसन गुरु का धवल-धवल है
मुख पे है समता अपार-२ कि मन मेरा हर्षाये। गुरुवर........
मंगलमय गुरु रूप है पाया-२
चंदन जैसी शीतल छाया
छाया में सुख है अपार-२ कि मन मेरा हर्षाये। गुरुवर........
वाणी ये है अमृत धारा-२
सुन सुन झूमे लोक है सारा
पतझड़ में आयी बहार-२ कि मन मेरा हर्षाये। गुरुवर........
कहता भक्त बस ले लो चरणों में-२
भटक रहे हैं जनमों-जनमों से
कीर्ति है जग में अपार-२ कि मन मेरा हर्षाये। गुरुवर........

धन्य मुनीश्वर

धन्य मुनीश्वर आतम हित में छोड़ दिया परिवार
कि तुमने छोड़ा सब घर बार-२
धन छोड़ा वैभव सब छोड़ा समझा जगत असार
कि तुमने छोड़ दिया संसार-२।।
काया की ममता को टारी, सहन करते परिषह भारी।
पंच महाव्रत के हो धारी, तीन रतन के हो भंडारी।
आत्म स्वरूप में झूलें नित प्रति, करें आत्म उद्धार।
कि तुमने छोड़ दिया संसार-२।।
राग-द्वेष सब तुमने त्यागे, वैर विरोध हृदय से भागे।
परमातम के हो अनुरागे, वैरी कर्म पलायन भागे।
सत् सन्देश सुनाकर भवि को करते बेड़ा पार।
कि तुमने छोड़ दिया संसार-२।।
होय दिगम्बर वन में विचरते, निश्चल होय ध्यान जब करते।
निजपद आनंद में हैं रमते, उपशम रस की धार बरसते।
मुद्रा सौम्य निरखकर, मस्तक नमता बारम्बार।
कि तुमने छोड़ दिया संसार-२।।

देवभक्ति का फल, गुरुभक्ति का फल

एक मेंढक भगवान की भक्ति में गद्‌गद् होकर कमल पांखुडी को मुख में दबाकर दर्शन के लिये चल पड़ा। मार्ग में राजा श्रेणिक से हाथी के पैर के नीचे दब गया और शुभ भावों से मरकर स्वर्ग में देव हो गया। वहाँ से तत्क्षण ही भगवान् के समवसरण में दर्शन करने आ गया। राजा श्रेणिक ने उस देव के मुकुट में मेंढक का चिह्न देखकर श्री गौतम गणधर स्वामी से उसका परिचय पूछा। गौतम गणधर स्वामी ने बतलाया कि देव भक्ति के फल से जो मेंढक देव हो गया था वही मेंढक समवसरण में आया है और मुकुट पर मेंढक का चिह्न धारण कर रहा है। वहाँ सभी लोग देव-भक्ति की भावना के फल को सुनकर बहुत ही प्रसन्न हुए।

देखो बालको! भगवान् के दर्शन की भावना से भी कितना पुण्य बन्ध होता है। कभी भी खाली हाथ से भगवान् और गुरु का दर्शन नहीं करना चाहिए। अष्ट द्रव्य या अक्षत पुँज चढ़ाकर ही दर्शन करना चाहिए।

गुरु भक्ति का फल

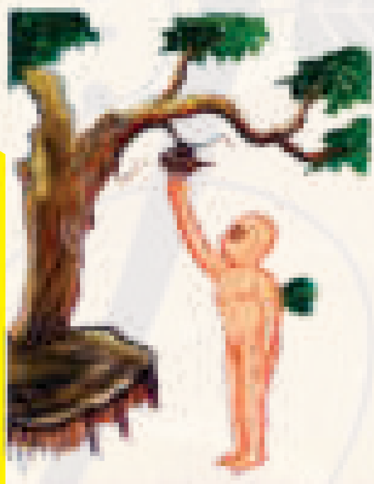

मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त मुनिराज श्रुतकेवली श्री भद्रबाहु की समाधि के काल में गुरुचरण की भक्ति करते हुए बारह वर्ष तक वन में रहे, जिसके प्रभाव से देवों ने वन में ही नगर बसाकर उनको आहार दान दिया। जब बड़ा संघ वहाँ वापस आया तब उनमें से एक मुनिराज आहार के बाद कमंडलु भूल आये, और मध्याह्न में लेने गये, तब वहाँ वन में कमंडलु पेड़ पर लटकता हुआ देखा।

इस घटना से यह मालूम होता है कि चन्द्रगुप्त मुनिराज की गुरुभक्ति से प्रसन्न होकर देवों ने आहार कराया था। उस समय चन्द्रगुप्त ने प्रायश्चित्त किया क्योंकि जैन मुनि देवों के हाथ से आहार नहीं लेते हैं।

देखो बालकों! जब गुरु भक्ति से मुक्ति मिल सकती है तब देवता भक्ति करने लगें, यह कोई बड़ी बात नहीं है।

1.	खाना खाओ जानकर	-	पानी पिओ छानकर ।
2.	आलू जो भी खाता है	-	भालू वह बन जाता है।
3.	प्याज और लहसुन खाओगे	-	निगोद में तुम जाओगे।
4.	खाते हैं जो सड़ा अचार	-	फुंसी होती उन्हें हजार ।
5.	ब्रेड, बिस्किट जो भी खाए	-	बुद्धि बिगड़ी उनकी जाए।
6.	जो बाजार की आइसक्रीम खाए	-	अण्डे जैसा वो बन जाए।
7.	होटल की जो खाते चाट	-	बीमार बनते पकड़ते खाट।
8.	मंदिर जो न जाते रोज	-	कभी न उनको मिलता मोक्ष।
9.	लिपिस्टिक जो लगाती हैं	-	मछली का खून लगाती हैं।
10.	नेल बढ़ाते बड़े-बड़े	-	राक्षस बनते खड़े-खड़े।
11.	नेलपॉलिश जो लगाती हैं	-	खूनी वे कहलाती हैं।
12.	पाऊच चुटकी खाओगे	-	छिपकली बन जाओगे।
13.	चमड़ा जो भी पहनता है	-	धरम करम खो देता है।
14.	शैंपू से नहाओगे	-	जीव घात करवाओगे।
15.	पटाखा जो भी जलायेंगे	-	जलकर वे दुःख पायेंगे।
16.	टॉफी जो भी खायेंगे	-	दांतों को गलायेंगे।
17.	रात में जो खायेगा	-	नरक में वो जायेगा।
18.	कोल्डड्रिंक जो पीता है	-	ज्यादा वो न जीता है।
19.	गाली जो भी बकता है	-	मुँह को गंदा करता है।
20.	सभी बुराई छोड़ेंगे	-	मुक्ति द्वार को खोलेंगे।

महावीर की हम संतान	-	हैं तैयार, हैं तैयार ।
जिनशासन की सेवा करने	-	हैं तैयार, हैं तैयार ।
त्यागी व्रती की सेवा करने	-	हैं तैयार, हैं तैयार ।
तीर्थधाम की यात्रा करने	-	हैं तैयार, हैं तैयार ।
आत्मध्यान की ज्योति जगाने	-	हैं तैयार, हैं तैयार ।
भवसागर से पार उतरने	-	हैं तैयार, हैं तैयार ।
जिनशासन का ध्वज लहराने	-	हैं तैयार, हैं तैयार ।
प्रतिदिन पाठशाला में पढ़ने	-	हैं तैयार, हैं तैयार ।
जीवन में संयम अपनाने	-	हैं तैयार, हैं तैयार ।
कर्मनाश कर मुक्ति पाने	-	हैं तैयार, हैं तैयार ।
देव शास्त्र गुरु पूजन करने	-	हैं तैयार, हैं तैयार ।
जिनवाणी का अध्ययन करने	-	हैं तैयार, हैं तैयार ।
धर्म अहिंसा पालन करने	-	हैं तैयार, हैं तैयार ।
मूक पशु की रक्षा करने	-	हैं तैयार, हैं तैयार ।
सम्यग्दर्शन प्राप्त करने	-	हैं तैयार, हैं तैयार ।
श्रेष्ठ आचरण अपनाने को	-	हैं तैयार, हैं तैयार ।

हमें आचरण सिखलाती ———— हमारी पाठशाला है।
हमें व्यवहार सिखलाती ———— हमारी पाठशाला है।
हमें मंदिर बुलाती है ———— हमारी पाठशाला है।
प्रभु दर्शन दिलाती है ———— हमारी पाठशाला है।
बैठकर नमन् करना ———— सिखाती पाठशाला है।
छना पानी सदा पीना ———— सिखाती पाठशाला है।
कभी ना रात को खाना ———— सिखाती पाठशाला है।
प्याज, आलू नहीं खाना ———— सिखाती पाठशाला है।
कभी होटल में न खाना ———— सिखाती पाठशाला है।
सदा आदर विनय करना ———— सिखाती पाठशाला है।
चरण छूकर नमन करना ———— सिखाती पाठशाला है।
गुरु सेवा सदा करना ———— सिखाती पाठशाला है।
कभी आपस में ना लड़ना ———— सिखाती पाठशाला है।
साधु सत्संग है करना ———— सिखाती पाठशाला है।
सदा पापों से तुम डरना ———— सिखाती पाठशाला है।
बुरी आदत ना तुम लाना ———— सिखाती पाठशाला है।
मिले अच्छाई तो पाना ———— सिखाती पाठशाला है।
मोक्ष मारग हमें पाना ———— सिखाती पाठशाला है।
हमें णमोकार है जपना ———— सिखाती पाठशाला है।
चलें सन्मार्ग पर कैसे ———— सिखाती पाठशाला है।

हमारी पाठशाला

सही जैनी बनें कैसे —————— सिखाती पाठशाला है।
सदाचारी सदा बनना —————— सिखाती पाठशाला है।
कभी निन्दा नहीं करना —————— सिखाती पाठशाला है।
कभी चुगली नहीं करना —————— सिखाती पाठशाला है।
जिनवाणी को नित पढ़ना —————— सिखाती पाठशाला है।
गीत आतम के तुम गाना —————— सिखाती पाठशाला है।
कभी हिंसा नहीं करना —————— पाठ पढ़ना यहाँ आकर।
कभी ना झूठ तुम कहना —————— पाठ पढ़ना यहाँ आकर।
ना चोरी तुम कभी करना —————— पाठ पढ़ना यहाँ आकर।
बुरी दृष्टि ना तुम रखना —————— पाठ पढ़ना यहाँ आकर।
लोभ वृत्ति नहीं रखना —————— पाठ पढ़ना यहाँ आकर।

देवपूजा सदा करना —————— बताती पाठशाला है।
गुरु सेवा में नित रहना —————— बताती पाठशाला है।
करो स्वाध्याय नित ही तुम —————— बताती पाठशाला है।
रहें संयम से जीवन में —————— बताती पाठशाला है।
करें तप हो सुखी जीवन —————— बताती पाठशाला है।
करें हम दान नित-प्रतिदिन —————— बताती पाठशाला है।

जहाँ सद्ज्ञान है मिलता —————— हमारी पाठशाला है।
जहाँ सम्मान है मिलता —————— हमारी पाठशाला है।
सभी को लगती है प्यारी —————— हमारी पाठशाला है।

कभी ना भूलना इसको —————— ये प्यारी पाठशाला है।
बड़े उपकार हैं इसके —————— ये प्यारी पाठशाला है।

हमारी पाठशाला है, हमारी पाठशाला है।

भाग - 3

पाठ संस्कार

1. इन्द्रियाँ पाँच होती हैं।
2. जिससे जीवों की पहचान होती है उसे इन्द्रिय कहते हैं।
3. स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, कर्णेन्द्रिय।
4. जिसके मात्र स्पर्शनेन्द्रिय हो उसे एकेन्द्रिय जीव कहते हैं। जैसे पृथ्वी, पेड़ आदि।
5. जिसके पास स्पर्शन और रसना इन्द्रियाँ हों उसे दो इन्द्रिय जीव कहते हैं, जैसे शंख, लट आदि।
6. जिसके पास स्पर्शन, रसना और घ्राण इन्द्रियाँ हों उसे तीन इन्द्रिय जीव कहते हैं। जैसे चींटी, बिच्छू आदि।
7. जिसके पास स्पर्शन, रसना, घ्राण और चक्षु इन्द्रियाँ हों उसे चार इन्द्रिय जीव कहते हैं । जैसे मक्खी, मच्छर आदि।
8. जिसके पास स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण इन्द्रियाँ हों उसे असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीव कहते हैं। जैसे पानी वाला सर्प, वर्षा के मेंढक आदि।
9. जिसके पास मन सहित पाँच इन्द्रियाँ हों उसे संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव कहते हैं। जैसे मनुष्य, देव आदि।
10. जो ज्ञान, दर्शन गुण वाला है उसे जीव कहते हैं।
11. संसारी जीव दो प्रकार के होते हैं त्रस और स्थावर।
12. एक ही इन्द्रिय वाले जीवों को स्थावर कहते हैं।
13. पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति ये स्थावर जीव हैं।
14. दो इन्द्रिय आदि जीवों को त्रस कहते हैं।
15. दो इन्द्रिय से चार इन्द्रिय तक के जीवों को विकलेन्द्रिय कहते हैं।

जीवन के किसी भी पल में

जीवन के किसी भी पल में, वैराग्य उपज सकता है।
संसार में रहकर प्राणी, संसार को तज सकता है॥

कहीं दर्पण देख विरक्ति, कहीं मृतक देख वैरागी।-२
बिन कारण दीक्षा लेता, वो पूर्व जनम का त्यागी।
निर्ग्रन्थ साधु ही इतने, सद्‌गुण से सज सकता है॥
संसार...........

आत्मा तो अजर अमर है, हम आयु गिने इस तन की।-२
वैसा ही जीवन बनता, जैसी धारा चिंतन की।
वही सबको समझा पाता, जो स्वयं समझ सकता है॥
संसार...........

शास्त्रों में सुने थे जैसे वैसे ही देखे गुरुवर।-२
तेजस्वी परम तपस्वी उपकारी विद्यासागर॥
तेजस्वी परम तपस्वी उपकारी आर्जवसागर।
जिनकी मृदु वाणी सुनकर, हर प्रश्न सुलझ सकता है।
संसार में रहकर प्राणी संसार को तज सकता है॥
जीवन...........

साधना अभिशाप को वरदान बना देती है।
भावना पाषाण को, भगवान बना देती है॥
विवेक के स्तर से, नीचे उतरने पर-
वासना इंसान को शैतान बना देती है॥

वन्दन गीत

हम वन्दन करते हैं, अभिनंदन करते हैं।
तुम-सा बन जाने को तेरा पूजन करते हैं।।

चाँदखेड़ी वाले श्री १००८ आदिनाथ भगवान

बोलो आदिनाथ की जय जय जय ....
बोलो शांतिनाथ की जय जय जय ....
बोलो पार्श्वनाथ की जय जय जय ....
बोलो महावीर की जय जय जय ....
हम वन्दन करते हैं ....

श्री दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र, पावापुरी

बोलो सम्मेदशिखर जी की जय जय जय ....
बोलो चम्पापुर जी की जय जय जय............
बोलो पावापुर जी की जय जय जय ....
बोलो कुण्डलपुर जी की जय जय जय ....
हम वन्दन करते हैं ....

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज

बोलो शांतिसागर जी की जय जय जय ....
बोलो वीरसागर जी की जय जय जय ....
बोलो शिवसागर जी की जय जय जय ....
बोलो ज्ञानसागर जी की जय जय जय ....
बोलो विद्यासागर जी की जय जय जय ....
बोलो आर्जवसागर जी की जय जय जय ....
हम वन्दन करते हैं ....

मिलता है सच्चा.......

मिलता है सच्चा सुख केवल, भगवान तुम्हारे चरणों में। भग......
यह विनती है पल-पल छिन-छिन, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।। रहे ......

जिह्वा पर तेरा नाम रहे, तेरी याद सुबह और शाम रहे।
ये काम रहे, ये याम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।१।। रहे ......

चाहे काँटों पर ही चलना हो, चाहे छोड़ के देश निकलना हो।
चाहे जंगल या घर रहना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।२।। रहे ......

निशदिन मैं दीप जलाता हूँ, फिर भी मन में क्यों अंधेरा है।
प्रभु ज्ञानदीप हमको दे दो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।३।। रहे ......

चाहे बैरी कुल संसार रहे, चाहे जीवन मुझ पर बार रहे।
चाहे मौत गले का हार रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।४।। रहे ......

चाहे संकट ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अंधेरा हो।
पर मन न डगमग मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।५।। रहे ......

भव सिंधु के प्रभु खिवैया तुम, इस भव से पार लगा दो तुम।
स्वीकार करो विनती मेरी, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।६।। रहे ......
मिलता ......

वीतराग सर्वज्ञ हितंकर

वीतराग सर्वज्ञ हितंकर,
भविजन की सब पूरो आश ।
ज्ञान भानु का उदय होय अब,
मिथ्या तम का होय विनाश ।।१।।
जीवों की हम करुणा पालें,
झूठ वचन नहीं कहें कदा ।
चोरी कबहुं न करिहैं स्वामी,
ब्रह्मचर्य व्रत रखें सदा ।।२।।
तृष्णा लोभ बढ़े न हमारा,
तोष सुधा नित पिया करें।
धर्म अहिंसा सबको प्यारा,
उसकी सेवा किया करें ।।३।।
मात-पिता की आज्ञा पाले,
गुरु की सीख धरें उर में ।
रहें सदा हम सुधर्म तत्पर,
उन्नति होवे घर घर में ।।४।।
दूर भगावें बुरी रीतियां,
सुखद रीति का करें प्रचार ।
मेल-मिलाप बढ़ावें हम सब,
देशोन्नति का करें विचार ।।५।।
दुख-सुख में हम समता धारें,
रहें अचल सम सदा अटल ।
न्याय-मार्ग को लेश न त्यागें,
वृद्धि करें निज आतमबल ।।६।।
हाथ जोड़कर शीश नवायें,
श्रावक जन सब खड़े-खड़े,
यह सब पूरो आश हमारी,
चरण शरण में आन पड़े ।।७।।

गोम्मटेस-थुदि

विसट्ट-कंदोट्ट-दलाणुयारं सुलोयणं चंद-समाण-तुण्डं।
घोणाजियं चम्पय-पुप्फसोहं तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।

अच्छाय-सच्छं जलकंत गंडं आबाहु दोलंत सुकण्ण पासं ।
गइंद-सुण्डुज्जल-बाहुदण्डं तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।

सुकण्ठ-सोहा जियदिव्व संखं हिमालयुद्दाम विसाल कंधं।
सुपेक्ख णिज्जायल सुट्ठुमज्झं तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।

विज्झाय लग्गे पविभासमाणं सिंहामणिं सव्व-सुचेदियाणं।
तिलोय-संतोसय-पुण्णचंदं तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।

लयासमक्कंत-महासरीरं भव्वावलीलद्ध सुकप्परुक्खं।
देविंदविंदच्चिय पायपोम्मं तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।

दियंबरो जो ण च भीइ जुत्तो ण चांबरे सत्तमणो विसुद्धो।
सप्पादि जंतुप्फुसदो ण कंपो तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।

आसां ण जो पेक्खदि सच्छदिट्ठि सोक्खे ण वंछा हयदोसमूलं।
विराय भावं भरहे विसल्लं तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।

उपाहि मुत्तं धण-धाम-वज्जियं सुसम्मजुत्तं मय-मोहहारयं ।
वस्सेय पज्जंतमुववास-जुत्तं तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।

प्रार्थना

-आचार्यश्री विद्यासागरजी

हे! शान्त सन्त अरहन्त अनन्त ज्ञाता,
हे! शुद्ध बुद्ध जिन सिद्ध अबद्ध धाता।
आचार्यवर्य उवझाय सुसाधु सिन्धु,
मैं बार-बार तुम पाद- पयोज बन्दूँ॥ 1॥

है मूलमंत्र नवकार सुखी बनाता,
जो भी पढ़े विनय से अघ को मिटाता।
है आद्य मंगल यही सब मंगलों में,
ध्याओ इसे न भटको जग जंगलों में॥ 2॥

सर्वज्ञ देव अरहन्त परोपकारी,
श्री सिद्ध वंद्य परमातम निर्विकारी।
श्री केवली कथित आगम साधु प्यारे,
ये चार मंगल, अमंगल को निवारे॥ 3॥

श्री वीतराग अरहन्त कुकर्मनाशी,
श्री सिद्ध शाश्वत सुखी शिवधाम वासी।
श्री केवली कथित आगम साधु प्यारे,
ये चार उत्तम, अनुत्तम शेष सारे॥ 4॥

जो श्रेष्ठ हैं शरण, मंगल कर्मजेता,
आराध्य हैं परम हैं शिवपंथ नेता।
हैं वंद्य खेचर, नरों, असुरों, सुरों के,
वे ध्येय पंचगुरु हों, हम बालकों के॥ 5॥

अष्टद्रव्य

प्रासुक नीर चढ़ाते हैं, तीनों रोग नशाते हैं।
चंदन चरण चढ़ाते हैं, भव आताप नशाते हैं।
अक्षत चरण चढ़ाते हैं, अक्षय पद को पाते हैं।
लेकर सुमन चढ़ाते हैं, कामदेव जय पाते हैं।
जो नैवेद्य चढ़ाते हैं, अपनी क्षुधा मिटाते हैं।
लेकर दीप जलाते हैं, तम को दूर भगाते हैं।
शोधित धूप जलाते हैं, कर्म सभी जल जाते हैं।
श्रीफल सदा चढ़ाते हैं, मुक्ति फल पा जाते हैं।
लेकर अर्घ्य चढ़ाते हैं, पद अनर्घ्य पा जाते हैं।
जो पूजन को आते हैं, पूजा रोज रचाते हैं।
पूजन का फल पाते हैं, भगवन से बन जाते हैं।

पान पराग कभी ना खाना ।
रजनी गंधा त्यागते जाना ।।

छिपकली पाउडर इसमें पड़ता।
मौत गले का हार वो करता ।।

कैंसर रोग इसी से होता ।
बेटा-बेटी पत्नी हरता ।।

बच्चो इसे कभी ना खाना।
जीवन को है यदि बचाना ।।

दुर्जन इसको निशदिन खाते ।
मौत के मुँह में चलकर जाते ।।

प्यारे बच्चो जहर बड़ा है।
सज्जन जन नें तजा यहाँ है ।।

घोड़ा, गधा इसे न खाता ।
मूरख मानव खा पछताता ।।

किमाम गुटखा व तम्बाकू ।
तजो बीड़ी कैंसर के डाकू ।।

मेरा संकल्प

हम बहादुर वीर बनेंगे
भूत-प्रेत से नहीं डरेंगे।
मात-पिता की टहल करेंगे,
गुरु की आज्ञा शीश धरेंगे।।
प्राण किसी के नहीं हरेंगे,
सब जीवों पर दया करेंगे ।।
झूठ वचन हम नहीं कहेंगे,
सत्य धर्म पर डटे रहेंगे।।
गाली कभी नहीं हम देंगे,
बिना दिए कुछ चीज न लेंगे।।
चुगली भी हम नहीं करेंगे,
खोटी संगत सदा तजेंगे ।।
कभी किसी से नहीं लड़ेंगे,
बड़े जनों की विनय करेंगे ।।
नित ही अच्छे काम करेंगे,
पाप कर्म से सदा डरेंगे।।

अष्ट मूलगुण

1. मद्य शराब त्याग
सड़ी गली जो मदिरा पीते,
बुद्धि भ्रष्ट कर पागल जीते।
उन्हें हिताहित कुछ ना होता,
इसका तजना पहला होता।।

2. मांस त्याग
त्रस जीवों का घात करें जो,
माँस पिण्ड से पेट भरें जो।
वे निज तन मन धर्म नशाते,
इसे त्याग दूजा गुण पाते ।।

3. मधु (शहद) त्याग
वमन और मलमूत्र सहित जो,
मधुमक्खियों का भोजन जो।
उनको दुख पहुँचाकर पाते,
इसे त्याग तीजा गुण पाते ।।

4. रात्रिभोजन त्याग
शुद्ध साफ दिन में बस खाओ,
और रात में कभी न खाओ।
रात्रि भोजन त्याग रहा ये,
श्रेष्ठ मूलगुण है चौथा ये ।।

5. पंच उदुम्बर फल त्याग
बड़ पीपल पाकर ऊमर को,
पांच उदम्बर फल कठुमर को।
जीव दया रख कभी न खाना,
यही मूलगुण पंचम माना ।।

6. पंचपरमेष्ठी भक्ति
श्री अर्हन्त सिद्ध आचारज,
उपाध्याय वा साधु पाद रज।
नित परमेष्ठी पाँचों भजना,
पूज्य मूलगुण षष्टम् कहना ।।

7. जीवदया पालन
जग में जितने जीव रहे हैं,
अपने जैसे सभी जीव हैं।
मैत्री करुणा उन पर लाना,
जीवदया गुण सप्तम माना ।।

8. छना जल पीना
बहुत जीव पानी में रहते,
अपने द्वारा वे सब मरते।
जल उपयोग छानकर करना,
यही मूलगुण अष्टम धरना ।।

मद्य मांस मधु रात्रि भोजन, पांच उदम्बर तजना सब जन।
दया धरो जिनवर गुण गाओ, पिओ छना जल सुव्रत पाओ।।
दया धर्म जिसको पल जाये, जीवन भी सार्थक हो जाये।
अष्ट मूलगुण को अपनाओ, सच्चे जैनी तब कहलाओ।।

छुक-छुक रेल

छुक-छुक-छुक-छुक रेल चली ये जीवन की-२
हँसना-रोना-जागना-सोना, खोना-पाना, ये दुःखसुख
छुक-छुक-छुक-छुक..........2
छोटी-छोटी बातों से ये मोटी-मोटी खबरों तक।
ये गाड़ी ले जायेगी हमको माँ की गोद से कब्रों तक।।
सब चिल्लाते रह जाएँगें, रुक-रुक-रुक-रुक-रुक
छुक-छुक-छुक-छुक..........2
सामा बाँध के रक्खो लेकिन चोरों से होशियार रहो।
जाने कब चलना पड़ जाए, चलने को तैयार रहो।।
जाने कब सीटी बज जाए, सिगनल जाए झुक।
छुक-छुक-छुक-छुक..........2
पाप और पुण्य की गठरी बाँध के सुख व दुख को पाना है।
जीवन गठरी बाँध के हमको दूर सफर को जाना है।।
ये भी सोच ले बंदे तूने क्या माल किया है बुक।
छुक-छुक-छुक-छुक..........2
रात और दिन इस रेल के डिब्बे और साँसों का इंजन है।
उम्र है इस गाड़ी के पहिये और चिन्ता स्टेशन है।।
जैसी दो पटरी हों वैसे साथ चले ये सुख-दुःख।
छुक-छुक-छुक-छुक..........2

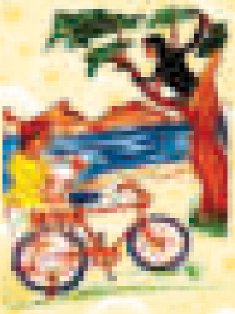

पानी का धन

जिसने गायों को पाला, एक था ग्वाला बड़ा निराला,
दूध बेचने जाता था, पैसे खूब कमाता था।
लोभ उसे आ जाता है, पानी में दूध मिलाता है।
बंदर ने यह देख लिया, मन ही मन में सोच लिया।
दूध बेचकर ग्वाला आया, आकर नदी में लगा नहाया।
उसी समय बंदर वह आया, ले भागा पैसे की माया।
आधे पैसे तू ले ग्वाले, आधे तो पानी में डाले।
पानी का धन पानी में, नाक कटी बेईमानी में।
आया मजा कहानी में, मत डूबो बेईमानी में।

बोल सको तो

बोल सको तो मीठा बोलो, कटु बोलना मत सीखो।
बचा सको तो जीव बचाओ, जीव मारना मत सीखो।
बदल सको तो कुपथ ही बदलो, सुपथ बदलना मत सीखो।
बता सको तो राह बताओ, पथ भटकाना मत सीखो।
बिछा सको तो फूल बिछाओ, शूल बिछाना मत सीखो।
मिटा सको तो बैर मिटाओ, प्यार मिटाना मत सीखो।
कमा सको तो धर्म कमाओ, पाप कमाना मत सीखो।
जला सको तो दीप जलाओ, हृदय जलाना मत सीखो।

बाईस अभक्ष्य त्याग

दहीबड़ा, निशि भोजन, बैंगन, मद्य, माँस, मधु को छोड़ें ।
कंदमूल, नवनीत, अजान व, तुच्छ फलों से मुख मोड़ें ॥
बर्फ, अचार वा विकृत भोजन, पंच उदुम्बर पूर्ण तजें ।
विष, बहुबीजी, मिट्टी छोड़ें, बेर तज़ें, सुख पुण्य भजें ॥

आहार शुद्धि

इसी तरह वे मर्यादा के, बाहर सब आहार तजें ।
जिनमें उपजें जीव असंख्यों, त्रस-हिंसा तज पुण्य भजें ॥
बिना छना जल कभी न पीवें, असंख्य जीव घात जानो ।
नदी, कुआँ उस मूल स्त्रोत में, जीवानी करना जानो ॥

जल-गालन विधि

किसी पात्र अरु रस्सी द्वारा, जल निकाल के छानें वे ।
मोटा कपड़ा दुहरा होता, धीरे-धीरे छानें वे ॥
बिना छना जल गिरे न नीचे, योग्य पात्र हो ध्यान रहे ।
जीवानी को नीर सतह पर, धीरे छोड़ें ज्ञान रहे ॥

– तीर्थोदय काव्य

छोड़ो ये टी.वी. हमको धर्म सिखाओ

(तर्ज :- दादी अम्मा-दादी अम्मा मान जाओ)

(1)

मम्मी-पापा, मम्मी-पापा, मान जाओ।२
छोड़ो ये टी.वी. हमको धर्म सिखाओ। मम्मी-पापा..........
टी.वी. ने हमारा जीवन नाश किया है।
छीना सुख शान्ति धन दास किया है ।।
इसको समझ लो जीवन न गंवाओ । मम्मी-पापा..........

(2)

दादी-दादा, दादी-दादा मान जाओ।२
छोड़ो ये टी.वी. हमको कथा सुनाओ । दादी-दादा.........
बुढ़ापे में तुम्हें क्या रोग लगा ये ?
देखो सदा टी.वी. तुम धर्म भुलाये ।।
माला फेरो, ग्रन्थ पढ़ो पुण्य तो कमाओ । दादी-दादा..........

(3)

भैय्या-भाभी, भैय्या-भाभी, मान जाओ।२
छोड़ो ये टी.वी. हमको तीर्थ कराओ। भैय्या-भाभी.............
देखो ना सारी दुनिया बैठे-बैठे तुम।
जाओ कर आओ कभी तीरथ तुम।।
बैठे-बैठे यूँ न जवानी गंवाओ । भैय्या-भाभी.............

(4)

बहिना-भैय्या, बहिना-भैय्या, मान जाओ।२
छोड़ो ये टी.वी. धर्म ज्ञान बढ़ाओ ।। बहिना-भैय्या..........
त्याग दिये तुमने सारे अच्छे-अच्छे गुण।
भूल गये सेवा करना, पाके दुर्गुण ।।
मर्यादा समझो अब पाठशाला जाओ । बहिना-भैय्या..........

(5)

नानी-नाना, नानी-नाना मान जाओ।२
छोड़ो ये टी.वी. साधु दर्श कराओ। नानी-नाना............
टी.वी. सदा देखो तो इनाम मिलेगा।
मोटा चश्मा पत्थर सा निरदाम मिलेगा।।
फोड़ो नहीं आँखें इन्हें सफल बनाओ। नानी-नाना............

फास्ट फूड व पैक फूड का पूर्ण रूप से त्याग होने पर ही आहार दान का लाभ लें।

फास्ट फूड का त्याग करें और माईग्रेन, डायबिटीज, थायराइड कैंसर जैसी घातक बीमारियों से बचें

फास्ट फूड

पिज्जा, बर्गर, नूडल्स, चाइनीज, मन्चूरियन, पाश्ता, हॉट डॉग, पाव भाजी, पेटिस, सेन्डविच, कटलेट, दावेली, स्प्रिंग रोल, मोमोज, मैगी, अजीनोमोटो।

बोतल बंद सामान

कोल्ड ड्रिंक, फ्रूटी, माजा, फेन्टा, सोडा, स्लाइस, बोर्नवीटा, हॉर्लिक्स, कॉम्प्लान, पैक लीची जूस, आइसक्रीम, बटर टिकिया, चीज, फ्रूट बियर, एनर्जी ड्रिंक।

बेकरी

ब्रेड, बिस्कुट, टोस्ट, केक, पेस्ट्री, फ्रूट जैम, पर्क, फाईव स्टॉर, च्विंगम, किटकेट, डेरी मिल्क, जैली टॉफी, टमाटर सॉस, सूप।

स्वीट्स एवं नमकीन

हल्दीराम, बीकानेर, आकाश, प्रकाश, लहर, पतंजलि, अंकल चिप्स, कुरकुरे, लेस, हल्के-फुल्के, पैक रसगुल्ला, चांदीवर्क, पैक सोनपपड़ी, कस्टर्ड, ईस्ट पॉडर, शहद।

डिब्बा पैक सभी सामग्री खाने योग्य नहीं हैं इनका त्याग करें। घर की सामग्री से निर्मित सभी वस्तुएँ खाने योग्य है।

इनसे यह सीखो

चंदा से मुस्काना सीखो,
हँसना और हँसाना सीखो।
जग में छवि छिटकाना सीखो,
सबका मन बहलाना सीखो ।
फूलों से तुम हँसना सीखो,
भौरों से नित गाना सीखो।
तरु की झुकी डाली से तुम,
सादर शीश झुकाना सीखो।

दूध और पानी से बच्चो,
मिलना और मिलाना सीखो।
लता और पेड़ों से बच्चो,
सबको गले लगाना सीखो।
कभी नहीं तुम लड़ना सीखो,
मीठी बातें करना सीखो।
पेड़ तथा पत्तों से बच्चो,
मिल जुलकर तुम रहना सीखो।

हम मोक्ष पायेंगे

- आचार्यश्री आर्जवसागर जी

दुनिया के विषयों में ना हम भूल जाएँगे।
हम जैनी भगवन् सम बनकर मोक्ष पाएँगे ॥ धृ. ॥

1. रोज उठेंगे जल्दी पहले मंदिर जाएँगे।
भगवन् के दर्शन से अपने कर्म खपाएँगे ॥
दुनिया के ....

2. शुद्ध द्रव्य से पूजा प्रभु की रोज रचाएँगे।
प्रभुवर की भक्ति में हम झूम जाएँगे ॥
दुनिया के ....

3. मुनियों की सेवा कर गुण की मेवा पाएँगे।
साधु बनकर जल्दी हम ध्यानी बन जाएँगे ॥
दुनिया के ....

4. जिनवाणी को पढ़कर उसकी महिमा गाएँगे।
द्वादशांग के श्रुत में आतम को नहलाएँगे ॥
दुनिया के ....

5. हिंसा तज विषयों में हम नहीं लुभाएँगे।
संयम की सुरभि से आतम-वन महकाएँगे ॥
दुनिया के ....

6. बारह तप की लौं में सारे कर्म जलाएँगे।
निर्विकार बन करके वीतरागता पाएँगे ॥
दुनिया के ....

7. संसार मोह को तजकर त्याग धरम अपनाएँगे।
देह छोड़ ऊपर जाकर के शिव-पद पाएँगे ॥
दुनिया के ....

8. अनन्त ज्ञान व दर्शन शक्ति सुख को पाएँगे।
मोक्ष में जाकर वहीं रहेंगे फिर न आएँगे ॥
दुनिया के ....

लय - आओ बच्चों तुम्हें दिखायें

जग से पार उतरना है

- आचार्यश्री आर्जवसागर जी

1. महावीर के सन्देशों से, जग से पार उतरना है।
निज आतम में निश दिन हमको, वीतराग गुण भरना है॥
महावीर के .... । वंदे जिनवरं२ .... वन्दे जिनवरं-2

2. महावीर की जिनवाणी में, आत्मविशुद्धि करना है।
कर्म-मैल को धोकर हमको, जिनवर सदृश बनना है॥
महावीर के .... । वंदे जिनवरं२ .... वन्दे जिनवरं-2

3. मोक्ष-मार्ग में आकर हमको, रत्नत्रय को गहना है।
रत्नत्रय की महा ज्योति से, निज में प्रकाश भरना है॥
महावीर के .... । वंदे जिनवरं२ .... वन्दे जिनवरं-2

4. संयम धारण करने हमको, सब पापों को तजना है।
मुनियों के सत्संग को पाकर, धर्म गुणों को धरना है॥
महावीर के .... । वंदे जिनवरं२ .... वन्दे जिनवरं-2

5. अहिंसा, सत्य, अचौर्य महाव्रत, ब्रह्मचर्य को धरना है।
और परिग्रह त्यागी बनकर, दीक्षा धारण करना है॥
महावीर के .... । वंदे जिनवरं२ .... वन्दे जिनवरं-2

6. मुनि बन करके ध्यान लगाकर, सामायिक को करना है।
सप्तम गुणस्थान से लेकर, शुद्धोपयोग धरना है॥
महावीर के .... । वंदे जिनवरं२ .... वन्दे जिनवरं-2

7. क्षपकश्रेणि में घातिकर्म को, पूर्ण नाश वह करना है।
अरिहन्त अवस्था पाकर हमको, समवसरण से सजना है॥
महावीर के .... । वंदे जिनवरं२ .... वन्दे जिनवरं-2

8. अन्तिम शुक्ल ध्यान से हमको, कर्म अघाति तजना है।
पूर्ण शुद्ध व सिद्ध बनें हम, मुक्ति सुपद को गहना है॥
महावीर के .... । वंदे जिनवरं२ .... वन्दे जिनवरं-2

नयी परम्परा

- आचार्यश्री आर्जवसागर जी

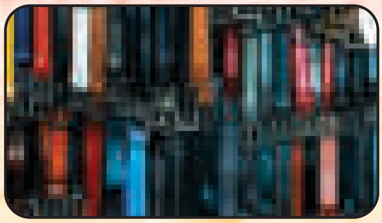

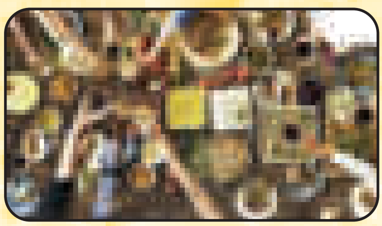

भव दुःखों के चक्रब्यूह में,
सदा फँसाती नयी परम्परा ।।
हमने सुनी है नेमिनाथ की कथा,
जिनने नहीं सही थी प्राणियों की व्यथा।
फिर हमारी क्या है कथा ?
सुनो, सुनाता हूँ आज, कि
सौन्दर्य प्रसाधन में हमने
पेन्ट में लगाया है चमड़े का बेल्ट
और बदल दी अपनी धर्म की परम्परा।
भव दुःखों के चक्रब्यूह में,
सदा फँसाती नयी परम्परा ।।
लाखों जीव उबाले जाते जहाँ,
ऐसे रेशम वस्त्र पहिने जाते हैं यहाँ
और टिप-टाप बनने हेतु आज,
चमड़े के टोप, जाकिट पहिनने में न है लाज,
क्योंकि हमने स्वीकार ली है विदेशी परम्परा
भव दुःखों के चक्रब्यूह में
सदा फँसाती नयी परम्परा।।
पञ्चम काल में जन्मते ही रहता है मिथ्यात्व,
फिर भी क्यों, न समझ हो मनाते हैं जन्म दिवस,
और काटते हैं केक, बाँटते हैं मिठाईयाँ ?
और क्यों बुझाते मोम बत्तियाँ ?
क्या यही है सही धर्म की परम्परा ?
भव दुःखों के चक्रब्यूह में,
सदा फँसाती नयी परम्परा।।
भगवान के द्वारे बनाया सुन्दर-सुन्दर भवन
गुरु, भगवान पर रखा शुभ नाम
भले ही हों न वहाँ धर्म के कुछ काम
और जहाँ पर जमीकंद व रात्रि भोजनकर

नयी परम्परा

करते हों जन विश्राम
वे कहाँ भूल गये हैं अपने धर्म की परम्परा
भव दुःखों के चक्रब्यूह में,
सदा फँसाती नयी परम्परा ।।
अब दिन में भोजन करने का वक्त नहीं बचा,
क्योंकि धन की कमाई ने गगन चूमा है
अतः हो रही है रात्रि में भोजन की पार्टियाँ
और चल रही हैं रात्रि में मीटिंग और शादियाँ
जिससे आ गयी जूठे और खड़े-खड़े खाने के
बफर सिस्टम की परम्परा।
भव दुःखों के चक्रब्यूह में,
सदा फँसाती नयी परम्परा ।।

अब हम भूल गये हैं
भगवान महावीर की अहिंसा,
इसीलिए कर रहे हैं दीपावली पर
बम्बों का धड़ाम-धड़ाम विस्फोट,
यह असंख्यात प्राणी मारने की
हमने बना ली है नयी परम्परा।
भव दुःखों के चक्रब्यूह में,
सदा फँसाती नयी परम्परा।।

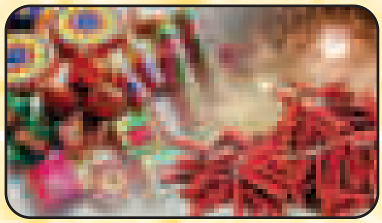

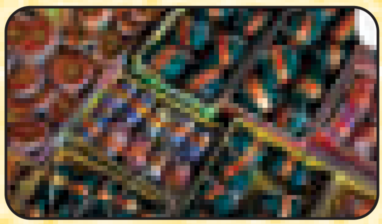

भूल गये अब हम वीर निर्वाण संवत् के नये वर्ष को
और मना रहे हैं, किसी धर्म के नये वर्ष को,
कहते हैं नया वर्ष मुबारिक हो
और दृढ़ करते हैं अपना मिथ्यात्व
क्या यही है हमारे धर्म की परम्परा।
भव दुखों के चक्रब्यूह में,
सदा फँसाती नयी परम्परा ।।

कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

लहरों से हारे नौका पार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।।

नन्हीं सी चींटी जब दाना लेकर चलती है,
चींटी दीवारों पर सौ सौ बार फिसलती है,
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना गिरकर चढ़ना न अखरता है,
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती।
कोशिश करने वालों............ ।।1।।

डुबकियाँ गोताखोर सिन्धु में लगाता है,
जा जाकर वह खाली हाथ लौट आता है,
मिलते न सहज ही मोती गहरे पानी में,
बढ़ता दुगुना उत्साह इसी हैरानी में,
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती ।
कोशिश करने वालों............ ।।2।।

असफलता एक चुनौती है स्वीकार करो,
क्या कमी रह गई देखो और सुधार करो,
जब तक न सफल हो; नींद चैन त्यागो तुम,
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम,
कुछ किये बिना ही जय जयकार नहीं होती।
कोशिश करने वालों............ ।।3।।

सच्चे देव - जो रागद्वेष, जन्म, मरण, भूख-प्यास, रोग-भय आदि १८ दोषों से रहित होते हैं, समस्त पदार्थ और उनकी सर्व पर्यायों को जानने वाले होते हैं तथा आत्म कल्याण या मोक्षमार्ग का उपदेश देते हैं, उन्हें सच्चे देव कहते हैं। जैसे - २४ तीर्थंकर, बाहुबली भगवान आदि।

सच्चे शास्त्र - जो दिगम्बर जैन मुनियों द्वारा लिखें गये हों, जिनमें कषाय और पापों से दूर हटने की चर्चा हो, अहिंसा को मुख्य धर्म बताया हो तथा आत्म कल्याण की चर्चा हो, उनको सच्चा शास्त्र कहते हैं । जैसे रत्नकरण्डक श्रावकाचार, मोक्षशास्त्र, समयसार आदि।

सच्चे गुरु - जिनके पास पिच्छी कमण्डलु तथा शास्त्र के अलावा अन्य कोई वस्तु न हो, पाँचों इन्द्रियों के विषयों की इच्छा न रखते हों, जीव हिंसा के कार्यों को न करते हों, नग्न दिगम्बर हों, स्वाध्याय करना, ध्यान करना, तप करना आदि श्रेष्ठ कार्यों में लगे रहते हों ऐसे आचार्य, उपाध्याय व साधु परमेष्ठी सच्चे गुरु होते हैं।

हमको लौकिक शिक्षा देने वाले या पढ़ाने वाले गुरु मोक्षमार्गी गुरु नहीं कहलाते, उनको शिक्षा गुरु कहते हैं। जो वस्त्र पहनते हैं, वे सच्चे निर्ग्रन्थ गुरु नहीं होते।

शिक्षा

इस प्रकार सच्चे देव-शास्त्र-गुरु का स्वरूप जानकर सदा ही उनकी भक्ति, पूजा और सेवा करनी चाहिए, किन्तु रागी, द्वेषी, मिथ्या देवों व साधुओं को कभी भी नहीं पूजना चाहिए। अनाचार, शिथिलता तथा विषय कषाय बढ़ाने वाले मिथ्या शास्त्र भी नहीं पढ़ने चाहिए। क्योंकि मिथ्यात्व और पापों के समर्थन से पाप कर्म का बंध होता है पुण्यानुबंधी पुण्य कदापि नहीं बंधता। कहते भी हैं कि -

राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव ।
वीतराग भेट्यो अबे, मेटो राग कुटेव ।।

देव और गुरु की महिमा

निज रूप में ध्यानी बने जो, नहीं वस्त्र रखते कभी ।
निश्चिंत व निर्भीक हैं जो, नहीं शस्त्र रखते कभी ।।
जिन भगवान तो गुणवान हैं, सर्वांग सुन्दर हैं सभी ।
अतः विरागी भेष में वे, दिगम्बर होते हैं सभी ।।

जैन भव्यात्माओं के कर्त्तव्य

- आचार्यश्री आर्जवसागर जी

1. अहिंसा के पालन एवं पाप से बचने के लिए अष्ट मूलगुण (मद्य-मधु-मांस एवं बड़, पीपल, ऊमर, कठूमर और पाकर फलों का त्याग) का नियम होना चाहिए।
2. पाप से बचने के लिए, लोक निंदा से बचने के लिए, अहिंसा पालन के लिए और राज्य दण्ड से बचने के लिए सप्त व्यसन (जुआ, चोरी, शिकार, मांस, शराब, परस्त्री सेवन और वेश्यागमन) का त्याग करना चाहिए।
3. बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू एवं तम्बाकू वाला गुटखा आदिक नशीले पदार्थ अवश्य त्याग करना चाहिए क्योंकि तम्बाकू वाली वस्तु में निकोटिन पाइजन (विष) होता है जिससे केंसर जैसा महाभयानक रोग होता है जो अल्प समय में ही जीवन समाप्त कर देता है।
4. पुरुष वर्गों को दूसरी स्त्रियां जो अपनी आयु से बड़ी हैं उन्हें माँ या बहन के समान और जो समान उम्र की हैं उन्हें बहन के समान एवं जो अपने से छोटी उम्र वाली हैं उन्हें बहन या बेटी के समान देखना चाहिए। इसी तरह महिला वर्गों को दूसरे पुरुषों के लिए पिता, भ्राता एवं बेटे के समान देखना चाहिए।
5. पाप कर्म के क्षय के लिए एवं मोक्ष प्राप्ति के लिए नित्य मंदिर में आकर वीतराग भगवान का या वीतराग देव-शास्त्र-गुरु का दर्शन करना चाहिए।
6. स्नान करके हाथ, पैर, मुख स्वच्छ करके एवं शुद्ध वस्त्रों के साथ मंदिर जाना चाहिए।
7. श्रावकों को नित्य प्रात:, मध्याह्न, सायंकाल इन तीनों कालों में मंदिर आना चाहिए और इन तीनों कालों में से प्रात:काल में मंदिर आना ज्यादा श्रेष्ठ है।
8. जैन धर्म पालन के लिए एवं मंदिर या चौके (रसोईघर) में आने के लिए हिंसा से निर्मित चमड़े की वस्तुएँ एवं नेलपालिश, लिपिस्टिक आदि वस्तुओं का त्याग करना चाहिए।
9. मंदिर में प्रवेश करते समय निस्सही-निस्सही-निस्सही बोलना चाहिए एवं मंदिर से बाहर जाते समय अस्सही-अस्सही-अस्सही बोलना चाहिए।
10. महिलाओं को भगवान एवं गुरु का दर्शन करते समय पाँच, सात हाथ दूर से ही दर्शन करना चाहिए।
11. भगवान एवं मुनि महाराज को नमस्कार करते समय नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु बोलना चाहिए और ऐलक, क्षुल्लक को नमस्कार करते हुए इच्छामि ऐसा बोलना चाहिए। इसी तरह आर्यिकाजी को वंदामि एवं क्षुल्लिकाजी को इच्छामि बोलना चाहिए। जैन पाठशाला में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को गृहस्थ गुरुजी से एवं विद्यार्थी एवं श्रावकों को आपस में ''जय जिनेन्द्र'' ऐसा बोलना चाहिए।
12. शास्त्र (जिनवाणी) की विनय हेतु एवं अपने ज्ञान की शीघ्र वृद्धि हेतु धार्मिक पुस्तक

(शास्त्र) को नीचे जमीन पर नहीं रखना चाहिए, लाँघना नहीं चाहिए एवं अशुद्ध अवस्था में देव-शास्त्र-गुरु और जपमाला को नहीं छूना चाहिए।

13. सूर्यास्त हो जाने के समय सूर्य की अल्ट्रावायलेट किरणों के अभाव में वातावरण में अनेक सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति होना चालू हो जाती है और उन जीवों के गिरने के कारण भोजन अशुद्ध हो जाता है और ऐसे अशुद्ध भोजन को करने से बहुत हिंसा का दोष लगता है और आज के यांत्रिक विज्ञान के अनुसार रात्रि भोजन करने से शरीर अस्वस्थ हो जाता है, इसलिए रात्रि भोजन का त्याग करना चाहिए ।यह भी भव्यों का एक संयम रूप कर्तव्य है।

14. एक बूँद बिना छने पानी में विज्ञान के अनुसार माइक्रोस्कोप (सूक्ष्मदर्शी) यंत्र से देखने पर 36450 त्रस जीव पाए जाते हैं। एक नए प्रयोग में इलेक्ट्रान माइक्रोस्कोप से देखने पर करीब 5 लाख तक त्रस जीव पाए गए हैं, परन्तु जैन धर्म के अनुसार इससे भी ज्यादा जीव पाए जाते हैं। ऐसे पानी को पीने से बहुत त्रस जीवों की हिंसा होती है और प्राणी का शरीर भी अस्वस्थ हो जाता है इसलिए अहिंसा पालन एवं शारीरिक स्वस्थता के लिए छानकर पानी पीना चाहिए। पानी छानने का छन्ना इतना मोटा होना चाहिए जिसे दिन में आँखों के सामने लाने पर सूर्य-प्रकाश भी न दिखे तथा पानी छानते समय बर्तन पर रखे छन्ने पर पानी डालने पर पानी धीरे-धीरे छनकर बर्तन में जाए। जीव हिंसा से बचने हेतु जहाँ से (कुए या नदी से) पानी निकाला है उसी पानी में छाने हुए पानी की जीवानी को विधिपूर्वक (कुन्देवाली बाल्टी से नीर सतह पर) लौटाना चाहिए।

15. सामान्य लोगों को ध्यान देना चाहिए कि हम जिस तरह के भी जल का उपयोग कर रहे हैं वह किसी छानने के उपकरण से छना है या नहीं; ऐसा यदि ध्यान नहीं दिया गया तो अनछने जल को गर्म करना महा हिंसा का कारण एवं पीना अस्वस्थ अवस्था का भी कारण है।

16. पूजन के समय गंधोदक (गंध सहित जल) के अलावा कोई भी योग्य खाने-पीने के पदार्थों को भगवान से या पञ्च परमेष्ठी से दो-चार हाथ दूर चढ़ाना चाहिए।

17. सच्चे देव-शास्त्र-गुरु के लिए पूजन में समर्पित कर दिए गए द्रव्य (निर्माल्य) को पुनः ग्रहण नहीं करना चाहिए।

18. अपने ग्राम या नगर के मंदिरों में विराजमान मूलनायक भगवान का नाम अवश्य याद रखना चाहिए।

19. नित्य पञ्च परमेष्ठी के नाम का (णमोकार मंत्र) दुःखों से दूर होने के लिए एवं पुण्यार्जन तथा कर्म निर्जरा हेतु नियम से जप करना चाहिए।

प्रात: उठकर मङ्गलों के देने में समर्थ, पाप प्रणाशक, परमपुण्य के हेतु तथा सुर-असुरों के द्वारा सेवित चरण-कमलों से युक्त श्री जिनेन्द्र प्रतिमा का अच्छी तरह दर्शन करना चाहिए।

हे भगवन् ! आज आपके दर्शन से मेरे नेत्र कृतकृत्य हो गये। जन्म सफल हो गया और सब पाप विलीन हो गये।

हे देव! आपके चरण युगल के दर्शन से कर्मों का क्षय होता है। दर्शन करने वाला व्यक्ति बोधि तथा समाधि को, मोक्षपद की निकटता को, पाप के मूल कारण - मिथ्यात्व के विनाश को तथा परलोक में सिद्ध पद या अहमिन्द्रों के विपुल सुख को प्राप्त होता है।

हे भगवन् आपका दर्शन कल्याण को विस्तृत करता है, विवेक को बढ़ाता है, पाप का उन्मूलन करता है और ऐश्वर्य को प्रकट करता है। ठीक है सम्यक् प्रकार से प्राप्त होने वाले समस्त कल्याणों का हेतु स्वरूप आपका दर्शन अल्पतर पुण्य के गम्य नहीं है। अर्थात् विशाल पुण्य से ही प्राप्त होता है।

जो मनुष्य प्रात: काल इच्छित पदार्थों के देने वाले एवं कल्पवृक्ष के पल्लव के समान कान्ति वाले जिन चरण कमल युगल का दर्शन करता है वह लक्ष्मी का क्रीड़ागृह, पृथ्वी का स्वामी, कीर्ति का हर्षस्थान, सरस्वती का प्रीतिगृह, विजय लक्ष्मी का महान क्रीड़ा निधान तथा समस्त महोत्सवों का अद्वितीय भवन होता है।

जिनेन्द्र दर्शन का विचार करने से मनुष्य दो उपवास के फल, उद्यम करने मात्र से तीन उपवास के फल, तैयारी करने पर चार उपवास के फल, गमन प्रारम्भ करने से पाँच उपवास के फल, कुछ दूर तक गमन करने पर बारह उपवास के फल, बीच मार्ग में एक पक्ष के उपवास के फल, मन्दिर जी दिखने पर एक मास के फल, मंदिर जी के आँगन में पहुँचने पर छ: माह के उपवास के फल, मन्दिर के द्वार में प्रवेश करने पर एक वर्ष के उपवास के फल, प्रदिक्षिणा करने पर सौ वर्ष के उपवास के फल, जिनबिम्ब के मुख का दर्शन करने पर हजार वर्ष के उपवास के फल और स्तुति करने से अपने आप अनन्तानन्त उपवासों के फल को प्राप्त होता है, सचमुच ही जिनेन्द्र भक्ति से बढ़कर दूसरा उत्तम पुण्य नहीं है।

- संदर्भ-पद्मपुराण, पर्व 32, श्लोक 178 से 182 तक

दर्शन की विधि

मंदिर के दरवाजे में प्रवेश करते समय बोलें –

ॐ जय जय जय, नि:सही, नि:सही नि:सही।

नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।

भगवान के सामने खड़े होकर दोनों हाथ जोड़कर बोलें –

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।

णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।

भगवान के सामने जाते ही बहुत विनय के साथ हाथ जोड़कर सिर झुकावें, णमोकार मंत्र पढ़कर कोई स्तुति, स्तोत्र (दर्शन पाठ या प्रभु पतित पावन....... की स्तुति) पढ़कर साथ में लाए हुए (बँधी मुट्ठी से अँगूठा भीतर करके) चावल के पुंज चढ़ावें।

अरिहंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय सर्व साधुभ्यो नम: ऐसे पाँचों पद बोलते हुए क्रम से ऐसे पाँच पुंज चढ़ावें।

जिनवाणी के लिए – 'प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नम:' ऐसा बोलकर क्रम से चार पुंज लाइन से चढ़ावें।

निर्ग्रन्थ गुरु के लिए – सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्राय नम: ऐसा बोलकर क्रम से तीन पुंज लाइन से चढ़ावें। अंत में शुभ-मंगल स्वरूप चतुर्गति निवारक स्वस्तिक बनावें।

दर्शन हेतु पुञ्ज

– नम: सिद्धेभ्य:

○ ○ ○ ○ ○ – णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं..........

○ ○ ○ ○ – प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नम:

○ ○ ○ – सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्राय नम:

卐 – शुभमस्तु

पुञ्ज चढ़ाने के उपरान्त अर्घ चढ़ावें, नमोस्तु करें एवं (जिनाभिषेक पूर्वक) जिन गन्धोदक ग्रहण करें।

गंधोदक लगाते समय निम्न श्लोक को पढ़ना चाहिये:-

निर्मलं निर्मलीकरणं पवित्रं पापनाशनम्।
जिन गंधोदकं वन्दे अष्टकर्म विनाशनम् ।।

फिर पृथ्वी पर साष्टाङ्ग (लेटकर) अथवा पंचांग (गवासन से बैठकर, दो पैर, दो हाथ, सिर पांच अंग) नमस्कार करें यानी-गवासन से बैठकर, जुड़े हुए हाथों को तथा मस्तक को पृथ्वी से लगावें - धोक देवें।

प्रदक्षिणा

धोक देने के बाद हाथ जोड़कर खड़े हो जावें और अच्छे स्वर में स्पष्ट शुद्ध उच्चारण के साथ संस्कृत भाषा का या हिन्दी भाषा का स्तोत्र पढ़ें और अपनी बाँयी ओर से चलकर वेदी की धीरे-धीरे तीन परिक्रमा दें। फिर साष्टाङ्ग या पंचांग नमस्कार पूर्वक धोक देवें।

ध्यान रखने योग्य बातें

दर्शन करते समय अपनी दृष्टि भगवान की प्रतिमा पर ही रखें अन्य कोई वस्तु न देखें। उस समय स्तोत्र में निमग्न होकर ऐसे तन्मय हो जायें कि मन, वचन, काय में अन्य कोई बात न आने पाये। भगवान की आकृति (मूर्ति) है वैसी ही शांति, वीतरागता, मेरी आत्मा में प्रकट हो, जैसे भगवान सिंहासन, छत्र, चँवर, आदि विभूति युत होते हुए भी उनसे निर्लिप्त (अछूते) रहते हैं उस तरह, मैं भी सांसारिक विभूति सह होते हुए भी उससे अलिप्त हूँ। जैसे भगवान में समता भाव है उनका न कोई मित्र है न कोई शत्रु, ऐसी ही भावना मेरे हृदय में सदा बनी रहे इत्यादि चिन्तवन करें।

परिक्रमा देते समय यदि कोई स्त्री-पुरुष धोक दे रहे हों तो उनके आगे से न निकलें, पीछे की ओर से निकलें अथवा जब तक वे धोक से न उठें तब तक खड़े रहें आगे न बढ़ें। दर्शन करते समय इस तरह खड़े होना या परिक्रमा करनी चाहिए जिससे दूसरे व्यक्तियों को दर्शन पूजन में विघ्न न पड़े।

दर्शन कर लेने के बाद अपने हाथ की मध्यमा और अनामिका अँगुलियों को गंधोदक के पास रखे हुए शुद्ध जल में डुबोकर शुद्ध कर लेने पर अँगुलियों से (गंधोदक) लेकर अपने सिर आदि उत्तम अंगों पर लगावें और फिर गंधोदक वाली अँगुलियों को पास में रखे जल में डुबोकर धो लेवें जिससे पवित्र गंधोदक वाली अँगुलियों का सम्पर्क किसी

अन्य अपवित्र पदार्थ से न होने पावे क्योंकि जिन प्रतिमा के अभिषेक का जल बड़ा ही पवित्र होने से गंधोदक या प्रक्षाल जल कहा जाता है।

चावल चढ़ाने का उद्देश्य

भगवान के सामने खाली हाथ नहीं जाना चाहिए, चढ़ाने के लिए कम से कम हाथ में चावल अवश्य लाना चाहिए। चावल चढ़ाने का अभिप्राय यही है कि जिस तरह धान से छिलका उतर जाने पर फिर धान में उगने की शक्ति नहीं रहती, उसी प्रकार भगवान के दर्शन भक्ति करने में मेरी आत्मा भी संसार में उगने यानी फिर जन्म लेने योग्य न रहे।

गन्धोदक

अरिहन्त और सिद्ध भगवान की प्रतिमा का प्रक्षालित जल (अभिषेक का जल) भी सुगंधित होता है, इस कारण प्रक्षाल को गंध+उदक = गन्धोदक यानी सुगंधित जल कहते हैं। जैसे भक्ति पूर्वक गुरु की चरण रज को मस्तक से लगाने पर मन में गुरु का गौरव जागृत होता है, उसी तरह अत्यन्त भक्ति पूर्वक भगवान का अभिषेक का जल-गंधोदक अपने उत्तमाङ्ग पर लगाने से भगवान के प्रति अटूट श्रद्धा के निर्मल परिणाम स्वरूप सातिशय पुण्य के संपादन के साथ पाप कर्म के क्षय का लाभ प्राप्त होता है।

पुनः हाथ जोड़कर बोलें

हे भगवन्! नेत्रद्वय मेरे सफल हुये हैं आज। अहो! तव चरणांबुज का दर्शन कर जन्म सफल है आज। अहो! हे त्रिभुवन के नाथ! आपके दर्शन से संसार जलधि भी चुल्लू सम हो गया। अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय साधु महान। पंच परम गुरु को नमूँ होवे मम कल्याण ॥

पुनः विधिवत् पृथ्वीतल पर मस्तक टेककर नमस्कार करें एवं स्तुति व पूजन करें।

अंत में शुभ भावना भायें कि - अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, और साधु इन पंच परम गुरुओं के चरणों में पापों के क्षय और मोक्ष प्राप्ति हेतु नमस्कार करता हूँ। मेरे दुःखों का क्षय हो, मेरे कर्मों का क्षय हो, मुझे बोधि (रत्नत्रय) की प्राप्ति हो, मेरा सुगति में गमन हो, मेरा समाधिमरण हो और मुझे जिनेन्द्र भगवान के केवलज्ञान आदि गुणों की प्राप्ति हो ऐसी मेरी मंगल भावना है।

भाग - 4

पाठ संस्कार

1. वस्तु के भाव को तत्त्व कहते हैं।
2. तत्त्व सात होते हैं। जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष।
3. इन्हीं सात तत्त्वों में पुण्य और पाप मिलाने पर नव पदार्थ होते हैं।
4. जो गुण और पर्याय से सहित होता है उसे द्रव्य कहते हैं।
5. द्रव्य छः होते हैं, जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल।
6. इन्हीं छः द्रव्यों में से एक काल द्रव्य को कम करने पर पाँच अस्तिकाय होते हैं।
7. सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र को रत्नत्रय कहते हैं।
8. मुनियों के दस धर्म होते हैं। उत्तम क्षमा, उत्तम मार्दव, उत्तम आर्जव, उत्तम शौच, उत्तम सत्य, उत्तम संयम, उत्तम तप, उत्तम त्याग, उत्तम आकिंचन्य और उत्तम ब्रह्मचर्य।
9. कर्म आठ प्रकार के होते हैं। ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र और अन्तराय।
10. जो अठारह दोषों से रहित हों, सर्वज्ञ हों और हितोपदेशी हों उन्हें सच्चे देव कहते हैं।
11. जो जिनेन्द्र भगवान से कथित हो, बाधा रहित हो और सन्मार्ग बताने वाला हो उसे सच्चा शास्त्र कहते हैं।
12. जो विषय आशा से रहित हों, आरम्भ, परिग्रह से दूर हों, ज्ञान, ध्यान, तप में लीन रहते हों उन्हें सच्चे गुरु कहते हैं।
13. मुनि, आर्यिका, श्रावक और श्राविका को चतुर्विध संघ कहते हैं।

वंदन गीत

आये हैं मेरे गुरुवर...., समता को धारने......

आये हैं मेरे गुरुवर, अपना मुझे बनाने ।
अज्ञान का अन्धेरा, मन का मेरे मिटाने ।।
गुरु के मुखारबिन्द से, सदा ज्ञान गंगा बहती।
करो सबसे नेह प्यारे, वाणी इन्हीं की कहती ।२
तन मन प्रभु को अर्पण, कर देख तो दीवाने ।
अज्ञान का अन्धेरा मन का मेरे मिटाने ।। आये हैं मेरे.......

कल्याण हो जगत का सन्देश ये ही देते,
उद्धार हो भगत का उपदेश ये ही देते।२
मिल जुल सभी से रहना, आये हमें सिखाने ।
अज्ञान का अन्धेरा मन का मेरे मिटाने।। आये हैं मेरे.......

ये ब्रह्मा और विष्णु, गुरु को हि तो हैं समझें।
दाता दयालु गुरु को, शिव का स्वरूप समझें ।।२
हम माता, पिता, भ्राता, गुरु को ही तो है मानें ।
अज्ञान का अन्धेरा मन का मेरे मिटाने ।। आये हैं मेरे.......

समता को धारने वाले

समता को धारने वाले, आतम को ध्याने वाले
भव पार लगाने वाले, कर्मों से छुड़ाने वाले
इन गुरु को शत्-शत् वंदन है, चरणों में अर्पण है।२

1. नित पुण्य उदय वर्षाये, तेरी प्यारी प्यारी मूरत
भगवान नजर आते हैं जब देखूँ तेरी सूरत २
अमृत वाणी वर्षाते, सबके मन को हैं भाते
भव पार लगाने वाले, आतम को ध्यान वाले इन ....

2. विद्यासागर गुरुवर से, मुनिवर दीक्षा पाई
जयकारों से गूंज उठी, सोनागिरि धरती सारी।
भक्तों के मन हर्षाये, आगम पथ को दर्शायें,
भव पार लगाने वाले, कर्मों से छुड़ाने वाले इन ....

3. दर्श की महिमा बताकर, मोक्ष-मार्ग दर्शाया,
मोक्ष मार्ग पे चल सकूँ, मिले तुम्हारी छाया,
सोलहकारण करवाते, तीर्थंकर पद दर्शाते
भव पार लगाने वाले, कर्मों से छुड़ाने वाले इन ....

- आर्यिकाश्री प्रतिभामति जी

रंग

लाल पद्म प्रभु वासुपूज्य हैं, काले पार्श्व सुपार्श्व रहे।
श्वेतचन्द्र प्रभु पुष्पदन्त हैं, नीले सुव्रत नेमि कहे।।
शेष रहे सोलह तीर्थंकर, स्वर्ण रंग के वे जिनवर।
मन वच तन से उनको पूजैं, वे देवें हमको शिवपुर।।

मोक्षस्थान

अष्टापद से वृषभनाथजी, वासुपूज्य चम्पापुर से।
नेमिनाथ गिरिनार गिरी से, महावीर पावापुर से।।
शेष बीस सम्मेदशिखर से, तीर्थंकरजी मोक्ष गये।
मोक्षमहल पाने को हम सब, उनको माथा झुका रहे।।

जगत-भ्रमण से मुक्तात्मा

गर्भ जन्म व दीक्षा केवल-ज्ञान मोक्ष कल्याणक से।
पूज्य हुए थे भव्यजनों वा-इन्द्रलोक के नायक से ।।
कर्मबीज को जला दिया फिर, नष्ट हुआ तरु भव का वह।
जग-भ्रमण से मुक्त तीर्थकृत, नमन रहे हम सबका यह।।
- तीर्थोदय काव्य

दुग्ध से घृत-सम बनें

अक्षय-पद को पाया प्रभु ने, सदा सुखी जयवन्त हुए।
यथा दुग्ध से घृत बन जाता, तथा विशुद्ध अनंत हुए।।
सिद्धालय में जा पहुँचे फिर, न हि लोक में पायें जनम।
अरहंतों की सदा भक्ति से, मुझे मिले वह मोक्ष परम।।
- तीर्थोदय काव्य

मेरी भावना

जिसने राग द्वेष कामादिक, जीते सब जग जान लिया,
सब जीवों को मोक्षमार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया,
बुद्ध, वीर, जिन, हरि, हर, ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो,
भक्ति भाव से प्रेरित हो यह, चित्त उसी में लीन रहो ।।1।।

विषयों की आशा नहिं जिनके, साम्यभाव धन रखते हैं,
निज पर के हित साधन में जो, निशि दिन तत्पर रहते हैं,
स्वार्थ-त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं,
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दुःख समूह को हरते हैं ।।2।।

रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे,
उन ही जैसी चर्या में यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे,
नहीं सताऊं किसी जीव को, झूठ कभी नहिं कहा करूं,
पर-धन वनिता पर न लुभाऊँ, सन्तोषामृत पिया करूं।।3।।

अहंकार का भाव न रक्खूं, नहीं किसी पर क्रोध करूं,
देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्ष्या भाव धरूं,
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूं,
बने जहां तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूं ।।4।।

मैत्री भाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे,
दीन दुःखी जीवों पर मेरे, उर से करुणा स्रोत बहे,
दुर्जन क्रूर कुमार्गरतों पर, क्षोभ नहीं मुझको आवे,
साम्यभाव रक्खूं मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जावे ।।5।।

गुणीजनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ आवे,
बने जहां तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे,
होउं नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे,
गुण-ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे ।।6।।

कोई बुरा कहे या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे,
लाखों वर्षों तक जीऊं या, मृत्यु आज ही आ जावे,
अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आवे,
तो भी न्याय-मार्ग से मेरा, कभी न पद डिगने पावे ।।7।।

होकर सुख में मग्न न फूले, दुख में कभी न घबरावे,
पर्वत नदी श्मशान भयानक, अटवी से नहिं भय खावे,
रहे अडोल अकम्प निरन्तर, यह मन दृढ़तर बन जावे,
इष्ट-वियोग अनिष्ट-योग में, सहनशीलता दिखलावे ।।8।।

सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी न घबरावे,
बैर, पाप, अभिमान छोड़ जग, नित्य नये मंगल गावे,
घर-घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावे,
ज्ञान चरित उन्नत कर अपना, मनुज जन्म-फल सब पावे ।।9।।

ईति भीति व्यापे नहिं जग में, वृष्टि समय पर हुआ करे,
धर्मनिष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करे,
रोग मरी दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शान्ति से जिया करे,
परम अहिंसा धर्म जगत में, फैल सर्वहित किया करे ।।10।।

फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर पर रहा करे,
अप्रिय कटुक कठोर शब्द नहिं, कोई मुख से कहा करे,
बनकर सब युगवीर हृदय से, देशोन्नति रत रहा करें,
वस्तुस्वरूप विचार खुशी से, सब दुख संकट सहा करें ।।11।।

मणुयणाइंद-सुर-धरिय-छत्तत्तया, पंचकल्लाण-सोक्खावली पत्तया
दंसणं णाण झाणं अणंतं बलं, ते जिणा दिंतु अम्हं वरं मंगलं ।। 1।।

जेहिं झाणग्गि-बाणेहिं अइ-दड्ढयं, जम्म-जर-मरण-णयर-त्तयं दड्ढयं ।
जेहिं पत्तं सिवं सासयं ठाणयं, ते महं दिंतु सिद्धा वरं णाणयं ।। 2।।

पंच-आचार-पंचग्गि-संसाहया, बारसंगाइ-सुअ-जलहि-अवगाहया ।
मोक्ख-लच्छी महंती महंते सया, सूरिणो दिंतु मोक्खं गयासंगया ।। 3।।

घोर-संसार-भीमाडवी-काणणे, तिक्ख-वियरालणह-पाव-पंचाणणे ।
णट्ठ-मग्गाण जीवाण पहदेसिया, वंदिमो ते उवज्झाय अम्हे सया ।। 4।।

उग्ग तव चरणकरणेहिं झीणं गया, धम्म वर झाण सुक्केक्क झाणं गया ।
णिब्भरं तव सिरी ए समा लिंगया, साहवो ते महंमोक्ख पहमग्गया ।। 5।।

एण थोत्तेण जो पंचगुरु वंदए, गुरुय संसार घणवेल्लि सो छिंदए ।
लहइसोसिद्धिसोक्खाइंवरमाणणं, कुणइकम्मिंधणंपुंजपज्जालणं ।। 6।।

अरुहा सिद्धाइरिया, उवज्झाया साहुपंच परमेट्ठी ।
एयाण णमोयारा, भवे भवे मम सुहं दिंतु ।।7।।

इच्छामि भंते ! पंचमहागुरु-भत्तिं काउस्सग्गो कओ, तस्सालोचेऊं, अट्ठ-महा-पाडिहेर-संजुत्ताणं अरिहंताणं, अट्ठगुण-संपण्णाणं, उड्ढ-लोय-मत्थयम्मि पइट्ठियाणं, सिद्धाणं, अट्ठपवयण-माउ-संजुत्ताणं आयरियाणं, आयारादि - सुदणाणोवदेसयाणं, उवज्झायाणं, ति-रयण-गुण-पालण-रयाणं सव्वसाहूणं, सयाणिच्च-कालं, अञ्चेमि, पुज्जेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइ-गमणं-समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

❖ इति श्री पंचगुरुभक्ति नमः ❖

अति पुण्य उदय मम आया, प्रभु तुमरा दर्शन पाया ।
अब तक तुमको बिन जाने, दुःख पाये निज गुण हाने ।।
पाये अनंते दुःख अब तक, जगत को निज जानकर ।
सर्वज्ञ भाषित जगत् हितकर धर्म नहिं पहिचानकर ।।
भवबंध कारक सुखप्रहारक, विषय में सुख मानकर ।
निज पर विवेचक ज्ञानमय सुख-निधि सुधा नहिं पानकर ।।1।।

तव पद मम उर में आये, लखिकुमति विमोह पलाये ।
निज ज्ञान कला उर जागी, रुचिपूर्ण स्वहित में लागी।।
रुचि लगी हित में आत्म के सत्संग में अब मन लगा ।
मन में हुई अब भावना, तव भक्ति में जाऊँ रँगा।।
प्रिय वचन की हो टेव गुणि गुणगान में ही चितपगै।
शुभ शास्त्र का नित हो मनन, मन दोषवादनतै भगै ।।2।।

कब समता उर में लाकर, द्वादश अनुप्रेक्षा भाकर।
ममता मय भूत भगाकर, मुनिव्रत धारूँ वन जाकर ।।
धरकर दिगम्बर रूप कब, अठवीसगुण पालन करूँ ।
दोबीस परिषह सह सदा, शुभधर्म दश धारन करूँ।।
तप तपूँ द्वादशविधि सुखद, नित बंध आस्रव परिहरूँ।
अरु रोकि नूतन कर्मसंचित, कर्मरिपु को निर्जरूँ ।।3।।

कब धन्य सुअवसर पाऊँ, जब निज में ही रमजाऊँ।
कर्तादिक भेद मिटाऊँ, रागादिक दूर भगाऊँ ।।
कर दूर रागादिक निरंतर, आत्म को निर्मल करूँ ।
बल ज्ञान दर्शन सुख अतुल, लहि चरित क्षायिक आचरूँ ।।
आनंदकंद जिनेन्द्र बन उपदेश को नित उच्चरूँ।
आवैं अमर कब सुखद दिन जब दुखद भवसागर तिरूँ ।।4।।

मूलगुणों के अंतर्गत

हे भगवन् ! मद्य-त्याग-व्रत में मर्यादा के बाहर अचार, मुरब्बा, बड़ी, पापड़ का; दो दिन और दो रात्रि व्यतीत हुए दही, छाछ एवं काँजी आदि मादक रस का, आसवों एवं अर्कों का तथा नागफेन, भांग, गाँजा, धतूरा, चरस आदि नशीले पदार्थों के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में सेवन करने से जो पाप लगा हो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं अर्थात् वह पाप न किये के समान हो जाय ॥ 1 ॥

हे प्रभो ! मांसत्याग व्रत में चमड़े से आच्छादित एवं स्पर्शित हींग, तेल, घी एवं जल आदि का, अशोधित भोजन, घुने धान्य से निष्पन्न और जिसमें त्रस जीवों का सन्देह हो ऐसे भोजन का, बिना छाने अथवा विधिपूर्वक दुहरे छन्ने (वस्त्र) से नहीं छाने गये जल, घी, दूध एवं तेल आदि का शोधन विधि से अनिभिज्ञ साधर्मी या नौकर-चाकर व विधर्मी के हाथ से तैयार किये हुए भोजन का, वासे भोजन का, चलित रस पदार्थों का, बिना दो फाड़ किये हुए काजू, अखरोट, पुरानी मूंगफली एवं सेमफली आदि का और अमर्यादित दूध, दही एवं छाछ तथा बाजार में निर्मित ब्रेड, बिस्किट, चाकलेट, चिप्स, टॉफी, चाय, कॉफी और अंग्रेजी दवाइयों आदि के अप्रत्यक्ष रूप से भी सेवन करने से जो पाप लगा हो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं (वह पाप नष्ट हो जाये) ॥ 2 ॥

हे भगवन् ! मधुत्यागव्रत में हरे फूलों का, धर्म के नाम पर या औषधि के निमित्त मधु का, फूलों के रसों का, आसवों का एवं गुलकन्द आदि का सेवन करने से जो पाप लगा हो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ 3 ॥

हे प्रभो! पाँच उदुम्बरफलत्यागव्रत में सूखे अथवा औषधि निमित्त उदुम्बर फलों का, साधारण वनस्पति का, अदरक मूली आदि अनन्तकायिक वनस्पति का, त्रस जीवों के आश्रयभूत वनस्पति का, बिना फाड़ किये या शोधन किये बिना सेमफली, भिण्डी और बेर फल आदि का एवं अनजान फलों का अप्रत्यक्ष रूप से भी सेवन करने से जो पाप लगा हो- तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ 4 ॥

हे भगवन् ! रात्रि भोजनत्यागव्रत में रात्रि के बने भोजन का, सूर्योदय से 48 मिनिट के भीतर और सूर्यास्त के पूर्व के 48 मिनिट के भीतर भोजन किया हो तथा बीमारी के निमित्त स्मृति रहित अवस्था में रात्रिपान भोजन करने से जो पाप लगा हो-तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ 5 ॥

प्रतिक्रमण

हे प्रभो! जिनदर्शनव्रत में - देवदर्शन किये बिना भोजन करने से, आलस्य या प्रमाद के साथ दर्शन करने से, जिन चैत्य और चैत्यालय की अवज्ञा या अविनय करने से तथा दर्शन या पूजन करते समय मन, वचन और काय की शुद्धि नहीं रखने से जो पाप लगे हों तस्स मिच्छा मे दुक्कडं॥6॥

हे भगवन् ! जीवदयाव्रत पालन में प्रमाद करने से, उपेक्षा करने से, बहुत गर्म जमीन पर घुना हुआ अनाज सुखा देने से, जल्दबाजी में बुहारी आदि से एक एक जीवों को धूप एवं नाली आदि में क्षेपण कर देने से, कचरे के ढेर में आग लगा देने से, गोबर आदि का संग्रह करने से, जूँ, खटमल एवं मच्छर आदि के विनाश हेतु औषधियों (पाउडर आदि) का प्रयोग करवाने से, श्रृंगार हेतु हिंसा से उत्पन्न होने वाले रेशम, ऊन, शेम्पू, साबुन, क्रीम एवं अन्य-अन्य प्रसाधनों का उपयोग करने से तथा धान्य एवं तिल आदि का संग्रह करने से जो पाप लगे हों - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं॥7॥

हे भगवन् ! जलगालनव्रत पालन में प्रमाद करने से छने हुए जल का मर्यादा (48 मिनट) के बाद भी उपयोग करने से, प्रमाण से अथवा बर्तन के मुख से छोटे या इकहरे, पुराने, जीर्ण, रंगीन, मलिन एवं सछिद्र वस्त्र से जल छान कर उपयोग करने से, मिट्टी के बर्तनों को सुखाये बिना उसमें निरन्तर जल भर कर प्रयोग करने से, गर्म या प्रासुक जल की मर्यादा समाप्त हो जाने पर भी उसका उपयोग करने से अथवा उसे पुनः गर्म या प्रासुक कर उपयोग करने से, जीवानी को यथास्थान न पहुँचाने से, उसे यत्र-तत्र नाली आदि में डाल देने से तथा जीवानी की सुरक्षा में और पानी छानने की विधि में प्रमाद करने से जो पाप लगे हों तस्स मिच्छा मे दुक्कडं॥8॥

हे प्रभो ! स्थूल हिंसा त्याग मूलगुण में प्रमाद से, लिपस्टिक एवं नेलपालिस आदि हिंसक पदार्थों का सेवन करने से साधु, साधर्मी या अन्य भी किसी को निष्ठुर वचन बोलने से, लड़ाई झगड़े में रुचि लेने से, अपने अधीनस्थजनों (विधवा भाभी आदि) को बन्धन में रखने से, मन्त्रादि के द्वारा शत्रुओं को बन्धन आदि में डालने से, अपने अधीनस्थ परिजनों का या पशुओं आदि के अन्नपानादि का निरोध करने से तथा संकल्प पूर्वक मेंढ़क, चूहा, छिपकली आदि पंचेन्द्रिय जीव मच्छर एवं खटमलआदि विकलेन्द्रिय जीवों को मारने आदि से जो पाप लगे हों - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं॥9॥

हे भगवन् ! स्थूल झूठ त्याग मूलगुण में प्रमाद से, राग-द्वेष, ईर्ष्या, क्रोध, लोभ,

भय एवं हास्य आदि के वशीभूत हो कटु वचन बोलने से, मिथ्या प्रलाप करने से, अपनी वचन पटुता से भोले जीवों को पाप में प्रेरित करने से, किसी का गुप्त रहस्य प्रकट कर देने से, झूठी गवाही देने से, झूठे दस्तावेज आदि लिखने से और देव, शास्त्र गुरु आदि की निन्दा करने से जो पाप लगे हों - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं॥ 10॥

हे प्रभो ! स्थूल चोरी त्याग मूलगुण में प्रमाद से या भूल से अन्याय पूर्वक धन अर्जन करने से, ब्लैक-मार्केटिंग करने से, टैक्स और चुंगी आदि बचा लेने से, मिलावट करने से, मापने एवं तौलने आदि के बाँट आदि कमती-बढ़ती रखने से, चोरी का माल खरीदने से और चोरी के अथवा टैक्स आदि से बचने के उपाय बताने से और चोरों की संगति करने से जो पाप लगा हो - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं॥ 11॥

हे जिनेन्द्रदेव ! स्थूल अब्रह्म त्याग मूलगुण में प्रमाद से, रागवर्धक वस्त्र आदि पहिनने से, रागवर्धक गीत, नृत्य एवं वाद्यों आदि से आसक्ति रखने से, दिवा मैथुन करने से, रात्रि के प्रथम पहर में और अन्तिम पहर में विषय सेवन करने से, व्यभिचारी स्त्री, पुरुषों की संगति करने से, दलाल बन कर विवाह आदि कराने से तथा अश्लील हँसी-मजाक आदि करने से जो पाप लगे हों - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं॥ 12॥

हे भगवन् ! स्थूल परिग्रह त्याग मूलगुण में प्रमाद से, दूसरे का वैभव देखकर आश्चर्य करने से, धन-धान्यादि में अति आसक्ति रखने से, धनादि का नाश हो जाने पर, अतिसंक्लेश करने से, लोभ के वशीभूत हो अतिभारारोपण करने से, अन्याय पूर्वक धन संचय करने से व असमय में व्यापार करने से जो दोष लगे हों - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं॥13॥

सप्त व्यसनों के अन्तर्गत

हे प्रभो ! जुआ व्यसन त्याग व्रत की अवज्ञा करने से, हार-जीत की शर्त लगा कर ताश, चौपड़, शतरंज एवं सट्टा आदि खेलने वाले, जुआरियों की संगति करने से और जुआ के अड्डों पर जाकर व्यापार एवं मद्य, माँस, चोरी और अब्रह्म करने से जो पाप लगे हों तस्स मिच्छा मे दुक्कडं॥ 14॥

हे भगवन् ! शिकार व्यसन त्याग में प्रमाद से, मिष्ठ पदार्थ पर या वस्त्रों पर बने

मनुष्य एवं पशु-पक्षी आदि के चित्र, कागज पर बने चित्र, काष्ठ एवं दीवाल आदि पर बने जीवों के चित्र तथा सिक्कों आदि पर बने चित्रों को छिन्न-भिन्न करने से, फाड़ने से, कतरने से, कूटने से और जलाने से तथा शिकार सम्बन्धी चर्चा आदि सुनने में आसक्ति रखने से, निशाना साधन का अभ्यास करने से और शिकारियों की संगति करने से जो पाप लगे हों तस्स मिच्छा मे दुक्कडं॥ 15 ॥

षडावश्यकों के अन्तर्गत

हे भगवन्! जिनेन्द्र दर्शन या पूजन में प्रमाद या आलस्य करने से, ऊन आदि के अपवित्र वस्त्र एवं चप्पल-जूते और मोजे पहिन कर मन्दिर जाने से, मन्दिर में धर्मकथा के सिवाय अन्य कथाएँ (बातें) करने से, मन्दिर में ही कलह या मार-पीट आदि करने से, वहाँ बैठकर निन्दा करने से, खाली हाथ मन्दिर जाने से, दर्शन-पूजन करते समय मन में उत्साह न रखने से, यज्ञोपवीत के बिना हवन और प्रमाण से छोटा वस्त्र पहिन कर पूजन प्रक्षाल करने से, द्रव्य आदि धोने के लिए विधि-पूर्वक जल न छानने से, मर्यादा से बाहर हो जाने के बाद भी या अप्रासुक जल से पूजन-प्रक्षाल करने से, अवज्ञापूर्वक फेंककर चावल आदि चढ़ाने से, जिस मूल्य के द्रव्य का घर में उपयोग करते हैं उससे कम मूल्य का द्रव्य चढ़ाने से पूजन करते समय ही लौंग, नैवेद्य आदि को तोड़कर छोटे-छोटे करने से, अविवेकपूर्वक अभिषेक-पूजन एवं दर्शन करने से, मन्दिर, वेदी, पूजन के बर्तन, पाटे, चौकी एवं अंग-पौंछना आदि स्वच्छ-साफ न रखने से, सरागी देव, देवियों को जिनेन्द्र के समकक्ष विराजमान करने से व उन्हें नमन आदिक करने से, उनकी आरती आदि करने से, रजस्वला एवं सूतक-पातक वालों का स्पर्श कर मन्दिर आदि धर्मायतनों में जाने से, जन्म-मरण एवं विवाह आदि के समय मन्दिर के सामान का प्रयोग करने से, नौकर रख पूजन प्रक्षाल कराने से तथा निर्माल्य द्रव्य ही वेतनरूप में देकर, व्यास या माली से मन्दिर में पञ्च परमेष्ठी की सेवा का कार्य कराने से जो महा अपराध रूप पाप लगे हों - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं॥ 16 ॥

हे भगवन्! गुरु-उपासना आवश्यक-पालन में प्रमाद करने से, साधु के विद्यमान रहते हुए भी दर्शन न करने से, खाली हाथ जाकर दर्शन करने से, उनकी अवज्ञा व अविनय करने से, निन्दा करने से, उनका अवर्णवाद करने से, उनके विद्यमान या अविद्यमान भी दोषों को समाचार-पत्रों के अथवा पत्राचार के माध्यम से जन-जन में प्रचार करने से,

उनकी मजाक करने से आहारादि दान देने में एवं वैयावृत्त करने में, या विहार कराने में आलस्य, प्रमाद या उपेक्षा करने से, जो वस्तु साधु के योग्य नहीं है, ऐसे रुपया, कार, बस, फ्रिज, कूलर, पंखा, मोबाईल और अन्य तरह के इलेक्ट्रीकल्स आदि वीतरागी निर्ग्रन्थों को समर्पित कर देने से, अभिमान, ईर्ष्या, मात्सर्य या क्रोधादि के वशीभूत हो आहार देने से, निज स्वार्थ सिद्धि हेतु साधुओं को मंत्र-तंत्रादि करने के लिए प्रेरित करने से एवं निर्ग्रंन्थ गुरुजनों की आज्ञा का उल्लंघन करने से जो पाप लगे हों तस्स मिच्छा मे दुक्कडं॥ 17॥

हे प्रभो! स्वाध्याय आवश्यक-पालन में प्रमाद करने से, विनय एवं कृतिकर्म (विधि) पूर्वक स्वाध्याय न करने से, शास्त्रों को सुव्यवस्थित उच्च स्थान पर न रखने से, जिनेन्द्र के वचनों पर श्रद्धा न करने से, मात्सर्य भाव के कारण ज्ञान छिपा लेने से, शास्त्रों को लिखने वाले स्वर एवं व्यंजनों का अनादर करने से अर्थात् शास्त्र के कागज गन्दे स्थान पर डालने से या इनसे गन्दगी उठाने से, इन पर पैर रख कर अक्षरों का अविनय करने से, या शास्त्रों को रद्दी में बेचने से एवं शास्त्र बेचकर आजीविका करने से जो पाप लगे हों - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं॥ 18॥

हे प्रभो! संयम आवश्यक-पालन करने में उपेक्षा भाव से, प्रमाद से, लिये हुए नियमों का विस्मरण हो जाने से, रोग आदि के कारण त्यागी हुई वस्तु को पुनः ग्रहण कर लेने से, संयतजनों पर हास्य-मजाक करने से, संयमीजनों का अनादर करने से, लिये हुए व्रत-नियमों का छोड़ देने से, जमीकन्द और अभक्ष्य पदार्थ खाने से, अंकुरित अनाज (चना, मटर, मोठ, मूंग आदि) खाने से, चातुर्मास में पत्तीवाला शाक और त्याज्य वस्तुओं में भी मन की आसक्ति वृद्धिंगत होने से, जिह्वा इन्द्रिय को वश में न रखने से, व्यसनी एवं अत्यन्त असंयमी जनों के सम्पर्क में रहने से, षट्काय के जीवों की रक्षा में मन्दोत्साह होने से तथा मन की स्वच्छन्दवृत्ति से जो पाप लगे हों-तस्स मिच्छा मे दुक्कडं॥ 19॥

हे भगवन्! तप आवश्यक-पालन में प्रमाद करने से, तप भावना में मन्दोत्साह होने से, अनावश्यक इच्छाओं का निरोध न करने से, पर्व (अष्टमी-चतुर्दशी) के दिनों में भी भोजन या कोई रस या कोई वस्तु आदि का त्याग न करने से, पंचेन्द्रिय आदि जीवों का घात हो जाने पर भी प्रायश्चित्त न लेने से, तपस्वीजनों की विनय न करने से, साधु, साधर्मी एवं रोगादि से पीड़ित जीवों की वैयावृत्ति, नियम पूर्वक स्वाध्याय न करने से, तपस्वी की निन्दा, आलोचना या हँसी करने से, अपने सुखिया स्वभाव को पुष्ट करने से तथा शरीर के राग हेतु तप की उपेक्षा करने से जो पाप लगे हों - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं॥ 20॥

हे जिनेन्द्रदेव ! दान आवश्यक-पालन में प्रमाद करने से, आहारदान द्वारा साधु की भूख-प्यास-रूपी महाव्याधि का शमन न करने से, आहारदान द्वारा तपस्वियों के पथ, ज्ञान, धर्म और ध्यान-अध्ययन में सहयोग न देने से, जो तीन लोक में सर्वोत्तम है ऐसा आहार-दान देने में आलस्य करने से या उपेक्षा करने से, केवल आहारदान के लिए साधु की परीक्षा करने से, नवधाभक्ति पूर्वक स्वयं आहारदान न देने से, निर्दोष आहार न देने से, आहारदान देने के अथवा आहारचर्या के पूर्व ही भोजन कर लेने से, शुद्ध औषधि, अनुकूल पथ्य एवं अनुकूल आहार-दान देकर साधु के शरीर का रक्षण न करने से, ज्ञानदान के साधन या ज्ञानोपकरण न देने से, पाठशाला आदि बन्द करवा देने से, सदाचारी गरीब विद्यार्थियों को अध्ययन हेतु सहयोग न देने से, दीन-दुखी प्राणियों को एवं भयाकुल प्राणियों को अभयदान न देने से, साधुओं को वसतिका दान न देने से, दाता के सात गुणों की उपेक्षा कर दान देने से, केवल अपने यश के लिए दान देने से और सत्पात्र रूप दीन गरीब बालक, विधवा, गूँगे, अन्धे, बहरे एवं रोगी आदि को भी यथायोग्य करुणादान आदि न देने से जो पाप लगे हों - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ 21 ॥

हे भगवन् ! सम्यग्दर्शन की प्रतिपालना करते हुए प्रमाद से, सम्यक्त्व के आठ अंगों की विराधना करने से, लकवा एवं चेचक आदि रोगों से निमित्त से सरागी देवी-देवताओं आदि की मान्यता करने से कराने से, मकरसंक्रान्ति के दिन तालाब आदि में स्नान करने से, व्यापार एवं धनवृद्धि आदि के लोभ से कुगुरुओं की उपासना करने से, नवरात्री, दशहरा एवं होली आदि अन्य कापथी मतों के पर्वों में सहयोग देने से, मिथ्या देव, शास्त्र एवं गुरुओं की मन से प्रशंसा करने से, वचनों द्वारा स्तुति करने से और काय द्वारा विनय करने से, ज्ञान का, धन का, बुद्धि का, बल का और रूप आदि का घमण्ड करने से, सच्चे देव, शास्त्र और गुरु का अविनय करने से एवं अवज्ञा करने से, नरक-स्वर्ग आदि किसने देखे हैं; इस प्रकार आगम पर विश्वास न करने से, भगवान जिनेन्द्र की आज्ञा का उल्लंघन करने से विपरीत मिथ्यात्व की पुष्टि करने से, निश्चय धर्म ही मोक्ष का मार्ग है, इस प्रकार के एकान्त मिथ्यात्व से, सर्व देव और गुरुओं की समान विनय करने से, आत्मा, अनेकान्तवाद या स्याद्वाद आदि के विषय में संशय बना रहने से, अज्ञान की पुष्टिकरने से तथा अन्य भी मिथ्यात्व पोषक कार्यों की रुचि रखने से जो पाप लगे हों - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ 22 ॥

हे प्रभो! नित्य निगोद जीवों की सात लाख, इतर निगोद की सात लाख, पृथिवीकायिक जीवों की सात लाख, जलकायिक जीवों की सात लाख, अग्नि कायिक

जीवों की सात लाख, वायुकायिक जीवों की सात लाख, वनस्पति कायिक जीवों की दस लाख, दो इन्द्रिय जीवों की दो लाख, तीन इन्द्रिय जीवों की दो लाख, चार इन्द्रिय जीवों की दो लाख, देवों की चार लाख, नारकी जीवों की चार लाख, पंचेन्द्रिय तिर्यंचों की चार लाख और मनुष्यों की 14 लाख योनियाँ हैं। इस प्रकार समस्त जीवों की चौरासी लाख योनियों को प्राप्त हुए जीवों में से जिन-जिन जीवों की विराधना मुझसे हुई हो - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं॥ 23 ॥

सत्तावन आस्रवों, चार आर्त्तध्यान और चार रौद्र ध्यान से जो पाप लगे हों - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ 24 ॥

पन्द्रह प्रमाद और पच्चीस कषायों के निमित्त से जो पाप लगे हों - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं॥ 25 ॥

हे प्रभो! मैंने चतुर्विध संघ की निन्दा एवं अविनय की हो, दूसरों से कराई हो या करते हुए की अनुमोदना की हो - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं॥ 26 ॥

हे भगवन् ! निर्माल्य द्रव्य अनजाने में भी ग्रहण करने से जो पाप लगा हो - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं॥ 27 ॥

मेरा किसी के प्रति भी राग नहीं है, द्वेष नहीं है, बैरभाव नहीं है, मान, माया आदि कोई भी कषाय नहीं है। सर्व जीवों के प्रति मेरी उत्तम क्षमा है। हे भगवन् ! मेरे दु:खों का नाश हो, कर्मों का क्षय हो, मुझे रत्नत्रय की प्राप्ति हो, उत्तम गति की प्राप्ति हो, सल्लेखना की प्राप्ति हो, और भगवान जिनेन्द्र के गुणों की प्राप्ति हो ॥ 28 ॥

[नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें-]

विद्यासागर विश्व वंद्य श्रमणं, भक्त्या सदा संस्तुवे।
सर्वोच्चं यमिनं विनम्य परमं, सर्वार्थसिद्धिप्रदं।।
ज्ञानध्यान तपोभिरक्त मुनिपं, विश्वस्य विश्वाश्रियं।
साकारं श्रमणं विशाल हृदयं, सत्यं शिवं सुन्दरम्।।

1. मुनि — जो समस्त परिग्रहों से रहित होते हैं, नग्न दिगम्बर होते हैं, दिन में एक बार खड़े होकर अपने हाथों से शुद्ध आहार लेते हैं, २८ मुलगुणों का पालन करते हैं, पीछी कमण्डलु रखते हैं तथा केशलोंच करते हैं, उन्हें मुनि कहते हैं। इनको नमोस्तु कहकर ढोक देनी चाहिये।

2. आर्यिका — जो पीछी कमण्डलु रखती हैं, सिर्फ एक साड़ी पहनती हैं, उपचार से महाव्रतों के पालन के साथ केशलोंच करती हैं, एवं दिन में एक बार बैठकर हाथ में आहार लेती हैं, उन्हें आर्यिका कहते हैं। इनको वंदामि कहकर नमस्कार करना चाहिए।

3. (अ) ऐलक — जो केवल एक लंगोट मात्र पहनते हैं, पीछी कमण्डलु रखते हैं, केशलोंच करते हैं तथा बैठकर हाथ में आहार ग्रहण करते हैं, ग्यारह प्रतिमाओं का पालन करते हैं । इनको नमस्कार करते समय इच्छामि बोलना चाहिए।

   (ब) क्षुल्लक — जो पीछी कमण्डलु रखते हैं, केवल एक लंगोट तथा छोटा दुपट्टा रखते हैं, बैठकर दिन में एक बार कटोरे में आहार करते हैं, केशलोंच करते हैं श्रावक की ग्यारह प्रतिमाओं का पालन करते हैं। इनको नमस्कार करते समय इच्छामि कहना चाहिए।

4. क्षुल्लिका — जो क्षुल्लक की तरह सभी क्रियायें करती हैं, एक साड़ी और एक दुपट्टा रखती हैं तथा बैठकर कटोरे में आहार ग्रहण करती हैं इनको नमस्कार करते समय इच्छामि कहना चाहिए।

विशेष : अन्य प्रतिमाधारी श्रावक व श्राविका को वंदना एवं साधर्मी भाई-बहनों से जयजिनेन्द्र कहना चाहिए।

आहार के समय मुनिवरों की श्रावकों द्वारा करने योग्य नवधा भक्तियाँ

(1) पड़िगाहन (2) उच्चासन (3) पाद प्रक्षालन (4) पूजन (5) प्रणाम (नमोस्तु) (6) मन शुद्धि (7) वचन शुद्धि (8) काय शुद्धि और (9) आहार (जलादि) शुद्धि

दाता (श्रावक) के सप्तगुण

(1) श्रद्धा (2) संतोष (3) भक्ति (4) विज्ञान (विवेक) (5) अलोभ (6) क्षमा और (7) सत्य ।

स्तुति का फल

जिनेन्द्र भगवान की स्तुति करने पर विघ्नों के समूह, शाकिनी, भूत तथा सर्प बाधा प्रलय (नाश) को प्राप्त हो जाते हैं और विष निर्विषता को प्राप्त हो जाता है।

सर्वज्ञ के स्तवन मात्र से सब रोग, सब भय और समस्त दुखों की परम्परा नष्ट हो जाती है, इसमें संशय नहीं है।

जिस प्रकार मंत्र से सर्प का विष नष्ट हो जाता है उसी प्रकार स्तोत्र रूपी मंत्र से भीतर स्थित पापों के समस्त समूह नष्ट हो जाते हैं।

जिनेन्द्र भगवन्तों के स्तवन से विघ्न नष्ट हो जाते हैं, कभी भय नहीं रहता, क्षुद्र देव परिभूत नहीं करते तथा स्तवन करने वाले मनुष्य सदा इच्छानुकूल पदार्थों को प्राप्त होते हैं।

मंदिर व पूजन का फल

जो मनुष्य जैन धर्म के उच्च मन्दिर बनवाते हैं, समस्त संसार उनके अत्यंत किङ्कर के समान आचरण करता है।

जिस प्रकार मन्दिर बनाने वाला कारीगर धीरे-धीरे ऊपर की ओर जाता है, उसी प्रकार मन्दिर को बनवाने वाला मनुष्य धर्मयोग से क्रमशः मोक्ष को प्राप्त होता है। जिन पूजा के भाव से मेंढक स्वर्ग में देव हो गया था और श्रीपाल राजा कुष्ट आदि रोगों से रहित हो गये थे। पूजा से स्वर्ग प्राप्त होता है। पूजा से मनुष्य स्वयं पूज्य होता है। पूजा ऋद्धि सम्पत्ति की वृद्धि करने वाली है तथा पूजा सब कार्यों की सिद्धि करने वाली है। जो मनुष्य नि:स्वार्थ भाव से जिनेन्द्र भगवान का पूजन और अभिषेक करता है, वह एक दिन सम्पूर्ण पूजा प्रतिष्ठा को प्राप्त कर अविनाशी मोक्ष लक्ष्मी को भी प्राप्त होता है। निर्मल जल, उत्तम चन्दन, श्वेत धान्य के अक्षत, उत्तम पुष्प, उत्तम नैवेद्य, प्रकाश करने वाले दीपक, सुगन्ध को विस्तृत करने वाली धूप और उत्तम (सूखे) फलों से देव-शास्त्र-गुरु के लिये अर्घ समर्पण करने वाले पुरुष परम्परा से मोक्ष को प्राप्त होते हैं।

जो सम्यक्त्व रूप वृक्ष को सींचने के लिए मेघमाला है, भव्य जीवों को ज्ञान प्रदान करने वाली मानों सरस्वती है, सतपुरुषों को स्वर्गादि की सम्पदा प्राप्त कराने के लिये दूती है और मोक्ष रूपी उत्तुङ्ग महल की सुखदायक सोपान पंक्ति है, ऐसी यह हर्ष पूर्वक की गई जिन पूजा समस्त जीवों को सदा श्रेष्ठ सुख प्रदान करे।

गुरु-उपास्ति

अर्थ - पृथ्वी ही जिनका पलंग है, कोमल भुजलता ही जिनका सिरहाना है, आकाश ही चंदेवा है, चन्द्रमा ही दीपक है, आत्मप्रीति रूपी स्त्री के अङ्ग से जिन्होंने हर्ष प्राप्त किया है और दिशा रूप कन्याएँ जिन्हें वायु रूप चमरों के द्वारा अनुकूल हवा कर रही हैं ऐसे जितेन्द्रिय वीतराग साधु लोभ का नाश करने के लिए सन्तोष को सुख शान्ति के लिये धैर्य को और उत्तम तप की वृद्धि के लिये ज्ञान को धारण करते हैं।

जो विषयों की आशा से रहित हों, जो क्रोध रहित हों, मद रहित हों, माया लोभ से रहित हों, जितेन्द्रिय हों, समस्त तत्वों के अर्थ के जानकार हों, शुद्धात्म तत्त्व की श्रद्धा और अनुचरण से सहित हों, जो मन, वचन, की शुद्धि पूर्वक भव्य जन-दुःसाध्य ब्रह्मचर्य को धारण करते हों, परीषह सहन करने वाले हों, भयंकर उपसर्ग में भी धीर हों, बिना दी गई वस्तु को सर्वथा ग्रहण न करते हों, शरीर में भी ममता रहित हों, प्राणियों के लिये जो ऐच्छिक या ऐहिक (इस लोक या संसारिक) फल से निरपेक्ष धर्म का उपदेश देते हों, शुद्धप्रासुक आहार को पाणिपात्र में ग्रहण करते हों, मन को वश करने वाले हों, दिगम्बर हों, आशाओं से रहित हों, सुख-दुःख, जीवन-मरण, लाभ-अलाभ तथा हानि और लाभ में समभाव रखते हों, इत्यादि गुणों से सहित, निज-पर को तारने वाले गुरु ही सम्यग्दृष्टि जीवों के द्वारा मान्य होते हैं, स्वपर को धोखा देने वाले अन्य मोही गुरु मान्य नहीं हैं।

इस लोक सम्बन्धी इच्छाओं से रहित, रागद्वेष से मुक्त सम्यग्दृष्टि हितोपदेशक परिग्रह रहित एवं दयावान गुरु लोक में दुर्लभ हैं।

पूर्ण श्रुतज्ञान, निर्दोष आचरण, दूसरों को सम्बोधित करने में तत्परता, मार्ग प्रवृत्ति के समीचीन कार्यों में अत्यधिक उद्योग, बन्धुजनों के प्रति सरलता, अहंकार का अभाव, लोक व्यवहार का ज्ञान, कोमलता और मान-प्रतिष्ठा आदि की अनाकांक्षा ये मुनिराज के गुण तथा अन्य आवश्यक गुण जिसमें हों वे ही सत्पुरुषों के गुरु हो सकते हैं।

जो बुद्धिमान मस्तक से मुनिराज के चरण कमलों को प्रणाम करते हैं वे इन्द्रादि पद को प्राप्त हो मनुष्य और देवों के वंदनीय होते हैं। गुरु के दिखते ही खड़ा होना चाहिए, उनका आगमन होने पर सम्मुख जाना चाहिए तथा मस्तक पर अञ्जलि रखकर ऊँचे आसन पर आसीन करना चाहिए।

भक्ति से गुरु को नमस्कार करना चाहिये, आदर से उनकी सेवा करना चाहिये और उनके जाने पर पीछे चलकर विदा करना चाहिए।

राजाओं की तरह गुरुओं के पास की स्वाभाविक क्रियाओं से अधिक क्रियाओं तथा सभी अनिष्ट क्रियाओं को छोड़ देना चाहिये एवं मन को कभी दूषित नहीं करना चाहिये।

मुनियों के समीप थूकना, टिक कर बैठना, जम्हाईं लेना, अंगड़ाई लेना, असत्य भाषण, क्रीड़ा, हास्य, पैर पसारना, चुगली करना, ताल ठोकना, हाथ से हाथ को ताड़ित करना, विकास भौंह आदि का चलाना तथा तेल लगाना, कंघी करना आदि शरीर का संस्कार छोड़ देना चाहिये।

जो महातपस्वी मुनि को आया हुआ देख उठकर खड़े नहीं होते हैं, तथा आसन त्याग नहीं करते हैं उनसे अधम दूसरा नहीं है। मुनियों की सेवा में तत्पर रहने वाले पुरुषों को सदा अपनी शय्या, बैठने का स्थान नीचे तथा गमन आदि पीछे करना चाहिये।

हम पुण्यवान हैं जिन्हें मुनि आज्ञा देते हैं ऐसा विचार करते हुये बुद्धिमान मनुष्यों को मुनियों की आज्ञा का पालन करना चाहिये।

गुरुओं के अनुकूल विचार करना मानसिक विनय है। हित, मित, प्रिय सत्य और आगमानुकूल चतुर्विध प्रशस्त वचन को बोलने वाला मनुष्य वाचनिक विनय को प्राप्त होता है।

स्वयं उच्चस्थान पर स्थित होकर साधुओं को वन्दना नहीं करनी चाहिये। गमन करते समय साधुओं को आगे और स्वयं पीछे होकर चलना चाहिये। यदि साथ-साथ चलने का प्रसङ्ग आवे तो साधुओं को दाई और स्वयं को उनकी बांई ओर चलना चाहिये। यही आगम कथित विनय है।

गुरु सेवा का फल

गृहस्थ के द्वारा मरण पर्यंत जो पाप सञ्चित किया जाता है उस सब पाप को एक रात्रि का दीक्षित साधु नियम से भस्म कर देता है। जो संसार रूपी कुटिल वनों में मार्ग भूले हुए मनुष्यों को निर्वाण का अविनाशी मार्ग बतलाते हैं, इस पृथ्वी तल में विचार करने पर उनसे अधिक प्रियतम दूसरा बन्धु कौन है?

गुरु ही विधाता - भाग्य निर्माता हैं, गुरु ही दाता हैं, गुरु ही स्वकीय बन्धु हैं, गुरु ही गुणरूपी रत्नों के सागर हैं, गुरु ही शिक्षक हैं, गुरु ही पिता हैं और कर्म समूह को नष्ट करने वाले गुरु ही मोक्ष हैं।

काष्ठ निर्मित नौका से सहित लोहा जिस प्रकार अगाध समुद्र को पार कर जाता है उसी प्रकार मूर्ख मनुष्य भी गुरूपदेश के द्वारा भवसागर के पार को प्राप्त हो जाता है।

सिद्ध भक्ति

नमोऽस्तु पौर्वाह्निक/अपराह्निक आचार्य - वंदनायां, श्री सिद्ध भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(9 बार णमोकार)

सम्मत्त-णाण-दंसण-वीरिय-सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरुलहु-मव्वावाहं, अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं ॥ 1॥

तव सिद्धे, णय-सिद्धे, संजम-सिद्धे, चरित्त-सिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमंसामि ॥ 2॥

इच्छामि भंते। सिद्ध-भत्ति-काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्म-णाण-सम्म-दंसण-सम्मचरित्त-जुत्ताणं, अट्ठविह-कम्म-विप्प मुक्काणं-अट्ठगुण-संपण्णाणं उड्ढलोय मत्थयम्मि पइट्ठियाणं तव-सिद्धाणं, णय-सिद्धाणं, संजम-सिद्धाणं, चरित्र-सिद्धाणं अतीदा-णागद-वट्टमाण-कालत्तय-सिद्धाणं-सव्वसिद्धाणं सयाणिच्चकालं अञ्चेमि पुज्जेमि वंदामि, णमस्सामि-दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइ-गमणं समाहिमरणं जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं।

श्रुत भक्ति

नमोऽस्तु पौर्वाह्निक/अपराह्निक आचार्य-वन्दनायां, श्री श्रुत-भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(9 बार णमोकार)

कोटिशतं द्वादश चैव कोट्यो, लक्षाण्य-शीतिस्-त्रयऽधिकानि चैव।
पञ्चाश-दष्टौ च सहस्र-संख्या मेतच्-छ्रुतं पञ्च-पदं नमामि ॥ 1॥
अरहंत - भासियत्थं - गणहर - देवेहिं गंथियं सम्मं।
पणमामि-भत्ति-जुत्तो, सुद-णाण महोवहिं सिरसा ॥ 2॥

इच्छामि भंते। सुदभत्ति-काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं अंगोवंग-पइण्णय-पाहुडय-परियम्मि-सुत्त पढमाणि-ओग-पुव्वगय-चूलिया चेव-सुत्तत्थय-थुइ-धम्म-कहाइयं सयाणिच्च-कालं अञ्चेमि पुज्जेमि वंदामि णमंसामि-दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइ-गमणं समाहि-मरणं जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं।

आचार्य भक्ति

नमोऽस्तु पौर्वाह्निक/अपराह्निक आचार्य - वन्दनायां श्री आचार्य-भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(9 बार णमोकार)

श्रुतजलधि पारगेभ्य:, स्व-पर-मत विभावना पटुमतिभ्य:।
सुचरित तपोनिधिभ्यो, नमो गुरुभ्यो-गुण-गुरुभ्य: ॥ 1॥
छत्तीस-गुण-समग्गे, पञ्च-विहाचार-करण-संदरिसे।
सिस्सा-णुग्गह-कुसले, धम्मा-इरिये सदा वंदे ॥ 2॥
गुरु-भत्ति-संजमेण य, तरंति संसार-सायरं घोरम् ।
छिण्णंति अट्ठकम्मं, जम्मण-मरणं ण पावेंति ॥ 3॥
ये नित्यं-व्रत-मंत्र होम-निरता, ध्यानाग्नि-होत्राकुला: ।
षट्कर्माभिरतास्-तपो-धनधना:, साधु-क्रिया: साधव: ॥ 4॥
शील-प्रावरणा-गुण-प्रहरणाश्-चन्द्रार्क-तेजोऽधिका: ।
मोक्ष-द्वार-कपाट-पाटन-भटा:, प्रीणंतु मां साधव: ॥ 5॥
गुरव: पान्तु नो नित्यं ज्ञान-दर्शन-नायका: ।
चारित्रार्णव गम्भीरा मोक्ष-मार्गोपदेशक: ॥ 6॥

इच्छामि भन्ते! आइरिय भत्ति काउसग्गो कओ, तस्सालोचेउं, सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचरित्त-जुत्ताणं, पञ्चविहाचाराणं आइरियाणं, आयारादि-सुद-णाणोवदेसयाणं उवज्झायाणं, ति-रयण-गुण-पालण-रयाणं सव्वसाहूणं, सयाणिच्च-कालं, अञ्चेमि, पुज्जेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइ-गमणं-समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

(प्रात: 18 एवं संध्या में 36 बार णमोकार मंत्र पढ़ें)

जय जिन सन्मति वीर महान, मोक्ष प्रदायक नित वंदन।
श्री शान्तिसागर सूरि प्रधान, शिव पथ दर्शक मम वंदन॥
श्री ज्ञानसागर सूरि प्रणाम, महाकवि तव मार्ग परम।
विद्यासागरजी सीमन्धर, आर्जवसागर सूरि नमन॥

आशीष हाथ गुरु का जब से मिला है।
संतोष का कमल जीवन में खिला है॥
निर्दाम ही मिल रही मुझको सुवस्तु।
हम बार-बार गुरु को करते नमोस्तु॥-3

अद्याष्टक स्तोत्र

अद्य मे सफलं जन्म, नेत्रे च सफले मम।
त्वामद्राक्षं यतो देव, हेतुमक्षयसंपदः ।।1।।

अद्य संसार-गंभीर, पारावारः सुदुस्तरः।
सुतरोऽयं क्षणेनैव, जिनेन्द्र! तव दर्शनात् ।।2।।

अद्य मे क्षालितं गात्रं, नेत्रे च विमले कृते।
स्नातोऽहं धर्मतीर्थेषु, जिनेन्द्र! तव दर्शनात् ।।3।।

अद्य मे सफलं जन्म, प्रशस्तं सर्वमङ्गलम्।
संसारार्णव-तीर्णोऽहं, जिनेन्द्र! तव दर्शनात् ।।4।।

अद्य कर्माष्टक-ज्वालं, विधूतं सकषायकम्।
दुर्गतेर्विनिवृत्तोऽहं, जिनेन्द्र! तव दर्शनात् ।।5।।

अद्य सौम्या ग्रहाः सर्वे, शुभाश्चैकादश-स्थिताः।
नष्टानि विघ्नजालानि, जिनेन्द्र! तव दर्शनात् ।।6।।

अद्य नष्टो महाबन्धः, कर्मणां दुःखदायकः।
सुख-सङ्ग समापन्नो, जिनेन्द्र! तव दर्शनात् ।।7।।

अद्य कर्माष्टकं नष्टं, दुःखोत्पादन-कारकम्।
सुखाम्भोधि-निमग्नोऽहं, जिनेन्द्र! तव दर्शनात् ।।8।।

अद्य मिथ्यान्धकारस्य, हन्ता ज्ञान-दिवाकरः।
उदितो मच्छरीरेऽस्मिन्, जिनेन्द्र! तव दर्शनात् ।।9।।

अद्याहं सुकृतीभूतो, निर्धूताशेष-कल्मषः।
भुवन-त्रय-पूज्योऽहं, जिनेन्द्र! तव दर्शनात् ।।10।।

अद्याष्टकं पठेद्यस्तु, गुणाऽऽनन्दित-मानसः।
तस्य सर्वार्थसंसिद्धि-र्जिनेन्द्र! तव दर्शनात् ।।11।।

सामायिक चतुर्दिग्वंदन

सामायिक के पूर्व की जानेवाली चतुर्दिग्वन्दना -

प्रत्येक दिशा में 9 बार या 3 बार णमोकार मंत्र का जाप्य कर तीन आवर्त और एक शिरोनति करते हुए इस प्रकार बोलें - जैसे पूर्व दिशा में -

प्राग् - दिग् - विदिगन्तरे, केवलि-जिनसिद्धसाधुगण-देवाः।
ये सर्वर्द्धि - समृद्धा, योगि-गणांस्तानऽहं वन्दे ॥ 1॥

अर्थ - पूर्व दिशा और आग्नेय विदिशा में स्थित केवली, जिन, सिद्ध, साधु समूह और सर्वऋद्धियों से सम्पन्न योगियों को मैं नमस्कार करता हूँ ॥1॥

दक्षिण दिशा में -

दक्षिण - दिग् - विदिगन्तरे, केवलि-जिनसिद्धसाधुगण-देवाः।
ये सर्वर्द्धि - समृद्धा, योगि-गणांस्तानऽहं वन्दे ॥ 2॥

पश्चिम दिशा में -

पश्चिम-दिग्-विदिगन्तरे, केवलि-जिन-सिद्ध-साधुगण-देवाः।
ये सर्वर्द्धि - समृद्धा, योगि-गणांस्तानऽहं वन्दे ॥ 3॥

उत्तर दिशा में -

उत्तर - दिग् - विदिगन्तरे, केवलि-जिन-सिद्ध-साधुगण-देवाः।
ये सर्वर्द्धि - समृद्धा, योगि-गणांस्तानऽहं वन्दे ॥ 4॥

वन्दना मुद्रा में बैठकर प्रतिज्ञा करें -

तीर्थङ्करकेवलि - सामान्यकेवलि - समुदघातकेवलि - उपसर्ग केवलि, मूककेवलि - अन्तःकृत केवलिभ्यो नमो नमः। तीर्थङ्करोपदिष्ट - श्रुताय नमो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र-धारकाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यो नमो नमः। जम्बूद्वीपे, भरतक्षेत्र, आर्यखण्डे, भारत देशे....... प्रदेशे...... नगरे 1008 श्री ..... जिन चैत्यालयमध्ये, अद्य वीर निर्वाण संवत्..... शुभदिने..... सामायिक काले सर्वं पापं त्यजामि। अथवा संक्षेप में प्रतिज्ञा करें कि मैं- इस स्थान पर सामायिक काल तक के लिए सम्पूर्ण पापों या सांसारिक सम्बन्धों का त्याग करता हूँ।

सामायिक विधि

समता सर्व भूतेषु संयमे शुभभावना।
आर्त्त रौद्र परित्यागस्तद्धि सामायिकं मतम् ।।

अर्थ – सब जीवों में समता भाव रखना, संयम पालन में, शुभ भावना भाना (पच्चीस, सोलह, बारह आदि) और आर्त्त-रौद्र ध्यानों का परित्याग करना, इसे सामायिक माना गया है।

1. सामायिक हेतु एकांत स्थान हो, जहाँ पर परिवार की या अन्य लोगों की आवाज पहुँचती हो उस स्थान को छोड़कर मंदिर या घर की छत पर एकांत में सामायिक करें।
2. सामायिक में स्थान आदिक की शुद्धता और स्वच्छता का ध्यान रखें। गहरी श्वास खींच कर श्वास छोड़ते हुये ओंकार ध्वनि से मन को शुद्ध करें।
3. सामायिक के समय श्रावकों के शरीर पर कम वस्त्र हों। जिस शय्या पर शयन किया है, उसको छोड़कर पवित्र स्थान में चटाई या लकड़ी के पाटे पर सामायिक को सम्पन्न करें।
4. निराकुल चित्त से – पूर्व दिशा की ओर मुखकर खड़े हो जायें । अञ्जलिबद्ध हाथ जोड़ें, अञ्जलि को मस्तक तक लें जायें और तीन आवर्तों के साथ एक शिरोनति (सिर झुकाने की क्रिया शिरोनति कहलाती है) के साथ बैठकर तीन बार नमोस्तु बोलें। इसके बाद तीन बार "ॐ नमः सिद्धेभ्यः" बोलें, रीढ़ की हड्डी को सीधी करें, दोनों भुजाएँ लटकायें, और दोनों पाँवों की दोनों एड़ियों में चार अँगुल का और पैरों के दोनों अंगूठों में बारह अँगुल का अन्तर हो। शिर सीधा, नाशाग्र दृष्टि, इसके बाद नौ बार महामंत्र का जाप, मध्यम स्वर में 27 श्वासोच्छ्वास के साथ हो। एक बार मंत्र का उच्चारण तीन श्वासोच्छ्वास में करें-
5. ध्यान रहे कि – श्वास के भीतर जाते समय "णमो अरिहंताणं" चिन्तन करें। श्वास के बाहर आते हुए "णमो सिद्धाणं" का चिन्तन करें पुनः दूसरी श्वास को लेते हुए "णमो आइरियाणं" का चिन्तन करें तथा श्वास लौटाते हुये "णमो उवज्झायाणं" का चिन्तन करें फिर तीसरी श्वास लेते हुए "णमो लोए" का चिन्तन करें तथा छोड़ते हुए " सव्व साहूणं" का चिन्तन करें। इस प्रकार एक बार में तीन श्वासोच्छ्वास और नौ बार पढ़ने पर सत्ताईस श्वासोच्छ्वास होंगे।

6. पूर्व दिशा में-नौ बार णमोकार मन्त्र जप कर नमस्कार करके पूर्व दिशा और आग्नेय विदिशा में स्थित अरहन्त, सिद्ध, केवली, जिन, आचार्य, उपाध्याय, साधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, जिन चैत्यालय हैं मैं उनकी वन्दना करता हूँ। इस प्रकार पूर्व दिशा संबंधी कृति कर्म सम्पन्न करके शेष दिशा और विदिशाओं में भी इसी प्रकार की क्रिया करें।

प्रतिज्ञा करें - ''अथ पौर्वाह्निक/मध्याह्निक/अपराह्निक काले घटिका द्वय-पर्यंता सर्वसावद्ययोगात् विरतोऽस्मि'' अर्थात् अब मैं सुबह, मध्याह्न या सांयकाल में दो घटिकाओं पर्यन्त सामायिक काल में सम्पूर्ण पापों का त्याग करता हूँ । इतना कह चुकने के बाद ही पूर्व दिशा या उत्तर दिशा में मुंह करके सुस्थिर खड़े हो कर, या पद्मासन अथवा अर्द्ध पद्मासन में बैठ जायें, फिर किसी धर्म विषय को लेकर चिंतन करें - जैसे -

मेरा परिचय कैसा है यह, चिंतन करते हैं सुधिजन ।
मैं हूँ कौन? व किन गुणवाला, किस गति से आया भविजन ।।
किसको पाना? कैसे पाना? लक्ष्य हमारा क्या सज्जन।
अगर भूलते इन सबको जो, भटकें भव-वन में जग-जन ।।
मैं हूँ आतम चेतन वाला, दर्शन ज्ञान गुणी भविजन ।
भवसागर में भटका आया, घोर महादुख सहा सुजन ।।
मोक्ष लाभ हो लक्ष्य हमारा, रत्नत्रय से मिले परम।
अतः सरागी मोह जाल तज, व्रत, संयम, तप करें धरम ।।

- तीर्थोदय काव्य

मैं हूँ कौन, कहां से आया, किस दर पर है जाना, इस दुनिया में क्या है मेरा, साथ किसे ले जाना। क्या खोया, क्या पाया अब तक, क्या मुझको है पाना, कैसा है मम रूप सलोना, कब शिव को है जाना ।।

सामायिक के 18 नियम अवश्य ध्यान दें।

1. सामायिक में आधे नेत्र खुले होना चाहिए, पूर्ण बंद नहीं करना चाहिए।
2. शरीर में ममत्व छोड़कर के बाधाओं उपसर्गों को जीतने का प्रयत्न करना।
3. पापों को छोड़कर, आकुलता रहित, शांत परिणामों में सामायिक करना।
4. व्यापार, घर, इष्ट वियोग, अनिष्ट संयोग, सम्बन्धी आकुलता एवं प्रमाद को

छोड़कर शांत चित्त से उत्साह, विनय पूर्वक सामायिक करना चाहिए।

5. सामायिक; मन को स्थिर करके एकाग्र दृष्टि से ''नाशा दृष्टि'' से करना चाहिए।
6. एकाग्रता के लिये - पंच परमेष्ठी के गुणों का, स्तोत्र आदि में वर्णित विषय का और छहढाला, द्रव्य संग्रह, इष्टोपदेश आदि ग्रन्थों का चिन्तन करना चाहिए।
7. मन की स्थिरता के लिये तीर्थंकरों व सिद्ध क्षेत्र, अतिशय क्षेत्रों का चिन्तन करें।
8. कर्मों के स्वभाव, बंध, उदय, क्षय तथा गुणस्थान आदि का चिन्तवन करना चाहिए।
9. विघ्न आदिक के आने पर भी आसन और उपयोग को नहीं बदलना चाहिए।
10. सामायिक के आलस्य, निद्रादिक दोषों को टाल कर सामायिक करनी चाहिए।
11. सामायिक प्रारंभ करने के पहले मल मूत्र की बाधा से रहित हो जाना चाहिए।
12. शरीर (हाथ पैरादिक) को शुद्ध करके सामायिक करनी चाहिए।
13. सामायिक में धोती दुपट्टा आदि शुद्ध पहिनना चाहिए। (विशेष परिस्थिति या मुनि सम अवस्था में विधि अलग है।)
14. सामायिक में दृढ़ आसन रखें, एक ही आसन से बैठने का अभ्यास करें।
15. मनः शुद्धि-मन में पञ्चपरमेष्ठी जिनवाणी (जिनवचनों) का उच्चारण करें।
16. वचन शुद्धि - धर्म पाठ के सिवाय दूसरा कोई भी शब्द उच्चारण न करें।
17. द्वात्रिंशतिका (सामायिक) आदि का पाठ मीठे स्वर से धीरे-धीरे उच्चारण करें, शीघ्रता से पाठ को न बोलें और हुँकार, खाँसी, खोखों आदि नहीं करना चाहिए।
18. विनय पूर्वक- शास्त्र या जिनवाणी को ऊपर रखकर, आसन को, बैठने के स्थान को परिमार्जन कर सामायिक शुरु करना चाहिए। सामायिक के अंत में भी कायोत्सर्ग व आवर्त आदि विधि कर सामायिक पूर्ण करें।

साम्य - भावना

- आचार्यश्री आर्जवसागर जी

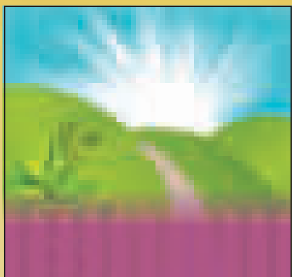

1. सब जीवों को हो क्षमा, क्षमा करें सब जीव ।
गुणियों के प्रति प्रेम हो, करुणा वहे सजीव ।।
2. दुर्जन में माध्यस्थ हो, भव से भय हि अतीव ।
जिनवर ऐसी भावना, भायें हम सब जीव ।।
3. अनन्त बल निज में कहा, प्रगट ध्यान से होय।
सुख-दुख में समता धरें, उत्तम सौख्य सुजोय।।
4. जिनवर पद मम हृदय में, बसें नित्य शुभ ध्यान ।
जीव बचा चर्या रहे, बचें सभी के प्राण ।।
5. शिव-मग के अनुकूल सब, चलें सभी हम लोग ।
स्वेच्छाचारी-पन तजें, ना हों दुर्गति, रोग ।।
6. जिनवाणी की हो विनय, करें भक्ति सम्मान ।
शुद्ध पाठ से शांत यह, मन बनता धीमान ।।
7. रत्नत्रय का लाभ हो, आत्म-लीन परिणाम ।
चिन्तामणि सम सौख्य दे, आगम तुम्हें प्रणाम ।।
8. पाप रहित परमात्मा, व्यसन काम से दूर ।
राग, द्वेष सब तज दिये, करें भक्ति भरपूर ।।
9. वीतराग जिन शरण में, सर्व कर्म कट जायँ ।
मोक्ष सुपद का लाभ हो, समता दल खिल जायँ ।।
10. बहिर् द्रव्य आसन तथा, पूजा वा सम्मान ।
आत्मलीनता में कभी, उपयोगी ना जान ।।
11. शरीर, भोग, परिजन सभी, मेरे ना, मम रूप ।
मैं न उनका कदापि हूँ, स्वस्थ रहा निजरूप ।।
12. ज्ञान शुद्ध दर्शन तथा, चरित रूप परिणाम ।
आत्म समाधि में सदा, ध्यावें साधु महान ।।
13. एकाकी निज आत्मा, शाश्वत निर्मल पूर्ण ।
पर पदार्थ जड़ रूप हैं, नश्वर भव सम्पूर्ण ।।

14. सामायिक में साम्य हो, संयम भावन रूप ।
आर्त्त-रौद्र न ध्यान हों, ध्यावें शुद्ध सुरूप ।।
15. संयोगज सब द्रव्य ये, वियोग सहहि अनित्य ।
चिन्ता, पीड़ा दें सदा, ध्यावें निज गुण नित्य ।।
16. सांसारिक उलझन सदा, भव विकल्प से पूर्ण ।
पर चिंता को छोड़ दें, निज सुख है सम्पूर्ण ।।
17. स्वयं किये सब कर्म वे, सुख-दुख दें यह ज्ञान ।
पर दें सुख-दुख जो कहें, रहे मूढ़ अन्जान ।।
18. चिंतन हो अध्यात्म का, बैर, अरति ना होय ।
किंचित भी न फल कभी - अन्य दे बुद्धि खोय ।।
19. परमातम की भक्ति से, पाप बंध कट जायँ ।
पुण्य बंध से सुख मिले, सुगति भव्य वे पायँ ।।
20. तप करते जब साधु वे, कर्म सभी गल जायँ ।
उत्तम फल वह मोक्ष सुख-मिले सुगुण जग भायँ ।।
21. सम-दर्शन व ज्ञान व्रत, मोक्ष निमित्त महान ।
उपादान निज आत्मा, मग पुरुषार्थ प्रधान ।।
22. साम्य रूप ये भावना, पढ़ें पद्य इक्कीस ।
आर्जवता से शुभ लहें, अर्हद् पद शिव ईश ।।

रचना – सिद्धक्षेत्र गिरनार जी: दिनांक- 19.05.2012

ऐसे मुनिवर देखे

ऐसे मुनिवर देखे वन में, जाके राग द्वेष नहीं मन में ।।टेक।।

ग्रीष्म ऋतु शिखर के ऊपर-२, मगन रहे ध्यानन में ।। 1।। ऐसे.........

चातुर्मास तरूतल ठाड़े-२, बून्द सहे छिन-छिन में ।। 2।। ऐसे.........

शीत मास दरिया के किनारे-२, धीरज धारें ध्यानन में ।।3।। ऐसे.........

ऐसे गुरु को मैं नित प्रति ध्याऊं-२, देत ढोक चरणन में ।।4।। ऐसे.........

राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार ।
मरना सबको एक दिन, अपनी-अपनी बार ॥ 1॥
दल बल देवी देवता, मात पिता परिवार ।
मरती बिरियाँ जीव को, कोई न राखनहार ॥ 2॥
दाम बिना निर्धन दुखी, तृष्णावश धनवान।
कहूँ न सुख संसार में, सब जग देख्यों छान ॥ 3॥
आप अकेला अवतरे, मरै अकेलो होय ।
यूँ कबहूँ इस जीव को, साथी सगा न कोय ॥ 4॥
जहाँ देह अपनी नहीं, तहाँ न अपनो कोय।
घर संपति पर प्रगट ये, पर है परिजन लोय ॥ 5॥
दिपै चाम-चादर मढ़ी, हाड़ पींजरा देह।
भीतर या सम जगत में, अवर नहीं घिन-गेह ॥ 6॥
मोह-नींद के जोर, जगवासी घूमैं सदा ।
कर्म-चोर चहुँ ओर सरवस लूटैं सुध नहीं ॥ 7॥
सतगुरु देय जगाय, मोह-नींद जब उपशमें।
तब कछु बनहिं उपाय, कर्मचोर आवत रुकैं ॥ 8॥
ज्ञान-दीप तप-तैल भर, घर शोधै भ्रम छोर ।
या विधि बिन निकसै नहीं, पैठे पूरब चोर ॥ 9॥
पंच महाव्रत संचरण, समिति पंच परकार।
प्रबल पंच इन्द्रिय विजय, धार निर्जरा सार ॥ 10॥
चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष-संठान।
तामें जीव अनादितैं, भरमत हैं बिन ज्ञान ॥ 11॥
धन कन कंचन राजसुख, सबहि सुलभकर जान।
दुर्लभ है संसार में, एक जथारथ ज्ञान ॥ 12॥
जाँचे सुर-तरु देय सुख, चिंतन चिंता रैन।
बिन जाचै बिन चिंतये, धर्म सकल सुख दैन ॥ 13॥

दिन रात मेरे स्वामी, मैं भावना ये भाऊँ ।
देहान्त के समय में, तुमको न भूल जाऊँ ।। दिन रात मेरे.......

शत्रु अगर कोई हो, संतुष्ट उनको कर दूँ ।
समता का भाव धरकर, सबसे क्षमा कराऊँ ।। दिन रात मेरे.......

त्यागूं आहार पानी, औषध विचार अवसर ।
टूटे नियम न कोई, दृढ़ता हृदय में लाऊँ ।। दिन रात मेरे.......

जागें नहीं कषायें, नहीं वेदना सतावें ।
तुमसे ही लौ लगी हो, दुर्ध्यान को भगाऊँ ।। दिन रात मेरे.......

आतम स्वरूप अथवा, आराधना विचारूँ ।
अरहंत सिद्ध साधु, रटना यही लगाऊँ ।। दिन रात मेरे.......

धरमात्मा निकट हों, चरचा धरम सुनावें ।
वह सावधान रक्खें, गाफिल न होने पाऊँ ।। दिन रात मेरे.......

जीने की हो न वाँछा, मरने की हो न इच्छा ।
परिवार मित्र जन से, मैं राग को हटाऊँ ।। दिन रात मेरे.......

भोगे जो भोग पहिले, उनका न होवे सुमरन ।
मैं राज्य संपदा या, पद इन्द्र का न चाहूँ ।। दिन रात मेरे.......

रत्नत्रय का पालन, हो अन्त में समाधी ।
शिवराम प्रार्थना है, जीवन सफल बनाऊँ ।। दिन रात मेरे.......

भक्ष्य पदार्थो की मर्यादाएँ

क्र.	पदार्थ	शीत ऋतु अगहन से फाल्गुन	ग्रीष्म ऋतु चैत्र से आषाढ़	वर्षा ऋतु श्रावण से कार्तिक
1.	शक्कर का बूरा	1 माह	15 दिन	7 दिन
2.	दूध (दूहने के पश्चात्) दूध (उबालने के पश्चात्)	2 घड़ी 8पहर	2 घड़ी 8पहर	2 घड़ी 8पहर
3.	दही (गर्म दूध का)	8पहर	8पहर	8पहर
4.	छाछ (बिलोते समय पानी डालें) छाछ (पीछे पानी डालें तो)	4 पहर 2 घड़ी	4 पहर 2 घड़ी	4 पहर 2 घड़ी
5.	आटा (सर्व प्रकार)	7 दिन	5 दिन	3 दिन
6.	मसाले पिसे हुए	7 दिन	5 दिन	3 दिन
7.	नमक पिसा हुआ नमक मसाला मिला दें तो	2 घड़ी 6घंटे	2 घड़ी 6घंटे	2 घड़ी 6घंटे
8.	खिचड़ी,रायता, कढ़ी, तरकारी, रोटी	2 पहर	2 पहर	2 पहर
9.	पूरी, हलवा, बड़ा आदि	4 पहर	4 पहर	4 पहर
10.	मौन वाले पकवान	8पहर	8पहर	8पहर
11.	बिना पानी के पकवान	7 दिन	5 दिन	3 दिन
12.	मीठे पदार्थ मिला दही	2 घड़ी	2 घड़ी	2 घड़ी
13.	गुड़ मिला दही, छाछ और द्विदल	सर्वथा अभक्ष्य		
14.	घी, तेल एवं गुड़	जब तक स्वाद न बिगड़े		

एक घड़ी-24 मिनट की और 1 पहर-3 घंटे का होता है

बाजार या फैक्ट्री में निर्मित खाद्य पदार्थ या अन्जान पदार्थ व्रतियों द्वारा सदा त्याज्य हैं।

साभार - आहार विधि

पाठशाला हेतु नियम

(प्रतिदिन के लिए एक-एक निमय)

1. बाजार में बनी आहार वस्तु का त्याग।
2. जमीकंद (कंदमूल) का त्याग।
3. रात्रि में पानी पीने का भी त्याग।
4. मौन से भोजन का नियम।
5. दही या छांछ का त्याग।
6. अचार या मुरब्बा का त्याग।
7. पिक्चर (सिनेमा) व चित्रहार का त्याग।
8. णमोकार की माला फेरने का नियम।
9. पूरा भक्तामर पढ़ने का नियम।
10. चाय या बिस्कुट का त्याग।
11. कॉफी या चाकलेट का त्याग।
12. दिन में शयन का त्याग।
13. जमीन या पाटा पर बैठकर भोजन करना।
14. आधा घण्टा पुराण (शास्त्र) पढ़ना या सुनना।
15. सामायिक पाठ पढ़ना/सुनना।
16. आलोचना पाठ पढ़ना/सुनना।
17. केला या अंगूर का त्याग।
18. सेव का त्याग।
19. चीकू या नीबू का त्याग।
20. मिठाई या बूंदी का त्याग।
21. खटाई या इमली का त्याग।
22. मलाई या खीर का त्याग।
23. कार में बैठने का त्याग।
24. मोटर साइकिल पर बैठने का त्याग।
25. सोफा सेट पर बैठने का त्याग।
26. गद्दी पर सोने, बैठने का त्याग।
27. शक्कर या गुड़ का त्याग।
28. आज दो ही बार भोजन करना।
29. पपीता या सीताफल का त्याग।
30. आज के आहार के साथ मात्र एक ही फल खाने का नियम।
31. आज के आहार के साथ मात्र एक ही सब्जी खाने का नियम।

सूतक विधि

सूतक में देव शास्त्र गुरु का पूजन प्रक्षालनादिक तथा मंदिर जी की जाजम वस्त्रादि को स्पर्श नहीं करना चाहिए। सूतक का समय पूर्ण होने के बाद पूजनादि पात्रदानादि करना चाहिए।

1. जन्म का सूतक दस दिन तक माना जाता है।
2. यदि स्त्री का गर्भपात (पांचवें, छठे महीन में) हो तो जितने महीने का गर्भपात हो उतने ही दिन का सूतक माना जाता है और गुरु (निर्ग्रन्थ) से प्रायश्चित्त ग्रहण करना चाहिए।
3. प्रसूति स्त्री को 45 दिन का सूतक होता है, कहीं-कहीं चालीस दिन का भी माना जाता है। प्रसूति स्थान एक मास तक अशुद्ध रहता है।
4. रजस्वला स्त्री चौथे दिन पति के भोजनादि के लिये एवं दूर से देव दर्शन हेतु शुद्ध होती है। परन्तु देव पूजन, पात्रदान के लिए छठे दिन शुद्ध होती है। व्यभिचारिणी स्त्री को सदा ही सूतक रहता है।
5. मृत्यु का सूतक तीन पीढ़ी तक 12 दिन माना जाता है। चौथी पीढ़ी में छह दिन का, पांचवी छठी पीढ़ी तक चार दिन का, सातवीं पीढ़ी में तीन, आठवीं पीढ़ी में एक दिन-रात, नवमीं पीढ़ी में स्नान मात्र में शुद्धता हो जाती है।
6. आत्मघात का सूतक घर वालों को छह महीने कहा गया है। इस प्रसंग में निर्ग्रन्थ गुरु के प्रायश्चित्तादिक द्वारा अपने व्रत धर्म की शुद्धि अवश्य करें।
7. जन्म और मृत्यु का सूतक गोत्र के मनुष्य का पांच दिन का होता है। तीन दिन के बालक की मृत्यु का एक दिन का, आठ वर्ष के बालक की मृत्यु का तीन दिन तक का माना जाता है और इसके आगे बारह दिन का।
8. अपने कुल के किसी गृहस्वामी का सन्यासमरण या किसी कुटुम्बी का संग्राम में मरण हो जाय तो एक दिन का सूतक माना जाता है।
9. यदि अपने कुल का कोई देशान्तर में मरण करे और बारह दिन के पहले खबर मिले तो शेष दिनों का ही सूतक मानना चाहिए। यदि बारह दिन पूर्ण हो गए हों तो स्नान मात्र तक सूतक जानना चाहिए।
10. गौ, भेंस, घोड़ी आदि पशु अपने घर में जन्मे तो एक दिन का सूतक और घर के बाहर जन्मे तो सूतक नहीं होता।
11. बच्चा हुए बाद भैंस का दूध 15 दिन तक, गाय का दूध 10 दिन तक, बकरी का दूध 8दिन तक अभक्ष्य (अशुद्ध) होता है। देश भेद से सूतक विधान में कुछ न्यूनाधिक भी होता है। परन्तु शास्त्र की पद्धति अनुसार की सूतक मानना चाहिए।

साभार - पूजन पुस्तक

शाकाहार और अहिंसा वाणी

नारायण श्रीकृष्ण का अर्जुन को उपदेश

सर्वे वेदा न तत्कुर्यः सर्व यज्ञाश्च भारत।
सर्व तीर्थाभिषेकाश्च यत्कुर्यात् प्राणिनां दया ।।

-महाभारत, शांति पर्व-प्रथम पाद

अर्थात् हे अर्जुन ! जो शुभ फल प्राणियों पर दया करने से प्राप्त होता है वह फल न तो सब वेदों से, न सब यज्ञों से और न तीर्थ-यात्रा अथवा स्नान से हो सकता है।

स्वामी दयानन्द

जो लोग मांस और शराब का सेवन करते हैं उनके शरीर, वीर्य आदि धातु दुर्गन्ध के कारण दूषित हो जाते हैं।

-स्वामी दयानन्द, सत्यार्थ प्रकाश-समुल्ला १०, पृष्ठ ३५

गुरु ग्रन्थ साहब

जो रक्त लगे कपड़े, जामा होवे पलीत।
जो रक्त पीवे मानुषा, तिन क्यों निर्मल चित ।।

- गुरु ग्रन्थ साहब, बार सांझ, महल्लास-१, पृष्ठ १०४

कपड़े पर खून लगने से कपड़ा गन्दा हो जाता है। वही खून जब मनुष्य पीवेगा तब उसका चित्त निर्मल कैसे रह सकता है।

सन्त कबीर

जिव मत मारो बापुरो, सब का एक प्राण।
हत्या कबहूँ न छूटिहै, जो कोटिन सुनो पुराण ।।

-सन्त कबीर,-सटीक बीजक साखी २१२

अर्थात् बेचारे दीन-हीन प्राणियों को मत मारो, कारण सभी जीवों के प्राण एक समान होते हैं। चाहे तुम करोड़ों पुराण सुन डालो तो भी जीव हत्या का घोर पाप बिना भोगे नहीं छूट सकता अर्थात् अपनी जीभ के स्वाद के लिए या किसी और काम के लिए किसी की हत्या मत करो।

पैगम्बर मोहम्मद साहब

इरहमु महफिले अर्दे मरहम कुमुर्रहमानु
-पैगम्बर मुहम्मद साहब, पवित्र ग्रंथ-हदीस

दुनिया के प्रत्येक प्राणी पर रहम करो क्योंकि खुदा ने तुम पर बड़ी मेहरवानी की है।

ईसामसीह

Behold ! I have given you every herb bearing seed which is upon the face of all the earth and every tree, in which is the fruit of a tree yielding seed, to you, it shall be for meat

-Genesis-Chap. 290

अर्थात् देखो मैंने पृथ्वी पर सब प्रकार की जड़ी-बूटियों तथा उनके बीज दिये हैं और साथ में तरह-तरह के फलों से लदे पेड़-पौधे भी दिये हैं तथा उनके बीज भी। इन सभी शाकाहारी पदार्थों को खाओ, ये तुम्हारे लिये मांस से भी उत्तम शक्ति का काम देंगे।

महात्मा लुकस

It is good neither to eat flesh nor to drink wine, nor anything where thy brother Stumbleth or is offended or is made weak.

- Saint Lucus in New Testament

यह अच्छा है कि कभी मांस न खाओ, शराब न पीओ न ऐसा कोई काम करो जिससे तुम्हारा भाई दुखी हो या निर्बल हो।

जार्ज बर्नार्डशा

Don't make your stomach a grave yard for dead bodies. Dear Disciples, shun Meat and Wine

- George Bernard Shaw

मांस खाकर अपने पेट को कब्रिस्तान मत बनाओ ।

एवरेस्ट विजेता तेनसिंग

शेरपाओं की उल्लेखनीय शक्ति का रहस्य उनका शाकाहारी होना और मुख्यतः आलू, दूध और पनीर पर निर्भर होना है।

- तेनसिंग, - अपनी जीवन गाथा में

महाकवि वर्डसवर्थ

Don't mingle thy pleasure of the joy with the sorrow of the meanest thing that pells.

- Poet Wordsworth

अपने जरा से सुख के लिए दूसरों को मत सताओ।

महात्मा गौतम बुद्ध

पाणातिपात वेरमणी कुशल

महात्मा गौतम बुद्ध मज्झिमनिकाय (सम्मादिट्ठि सुत्तं)

प्राणियों की हिंसा से विरक्त होना श्रेयस्कर है अर्थात् किसी भी प्राणी को नहीं मारना चाहिए।

भगवान महावीर स्वामी

सव्वेसिं जीवियं पियं नाइवाएज्ज कंचनं ।

भगवान महावीर स्वामी-आचारांग सूत्र १,२,३

संसार में सभी को जान प्यारी है, मरना कोई नहीं चाहता, अतः किसी प्राणी की हिंसा मत करो।

धर्मस्य मूलं दया

- वीरभक्ति

धर्म का मूल (आधार) दया-अहिंसा है। जैसे-नींव के बिना इमारत नहीं टिक सकती और जड़ के बिना वृक्ष उसी तरह दया-अहिंसा-परोपकार के बिना धर्म का प्रारम्भ नहीं हो सकता।

परस्परोपग्रहोजीवानाम्

- तत्त्वार्थसूत्र

जीवों द्वारा आपस में (एक दूसरे पर) रहम करना या सहायक बनना यह जीवों का उपकार धर्म है।

"सर्वे भवन्तु सुखिनः"
सुखी रहें सब जीव जगत के ।

- हिन्दू कवि तुलसीदास

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान ।
तुलसी दया न छाड़िये, जब लों घट में प्राण ।।

नारी के कर्त्तव्य

गृहस्थी रूपी गाड़ी पति-पत्नी रूपी दो पहियों के आधार पर ही चलती है। धर्मात्मा एवं चतुर युगल के बिना गृहस्थ धर्म का निर्वाह पूर्णरूपेण नहीं हो सकता। अष्टमूलगुण, षडावश्यक एवं ग्यारह प्रतिमाओं का जो वर्णन शास्त्रों में किया गया है वह श्रावक और श्राविकाओं को समान रूप से पालने योग्य है। विशेष इतना है कि गृहस्थ धर्म का प्रतिपालन विवेकशील एवं पापभीरु नारियों के सहयोग से ही हो सकता है। किन्तु पाश्चात्य फैशन रूपी भूत के अधीन रहनी वाली :-

जो स्त्रियाँ प्रमाद आदि के कारण शुद्ध भोजन बना कर अपने कुटुम्ब आदि को नहीं खिला सकती हैं, जिन्हें बाजार का आटा, मसाला, अचार, पापड़, नमकीन एवं मिठाई आदि अभक्ष्य पदार्थों के खाने-खिलाने में ग्लानि नहीं है तथा जीवदया का भाव न होने से जो बिना छने जल का प्रयोग करती हैं, वे स्त्रियाँ अपने और परिवार के धर्म का विघात करने के कारण यहाँ मरकर जलचर जीवों में उत्पन्न होती हैं।

जो स्त्रियाँ प्रमाद, अज्ञान, भूख आदि की व्याकुलता या अन्य किसी कारण से बिना शोधन किये दाल-चावल आदि धान्य ओखली आदि में कूटती हैं तथा जीव युक्त अनाज आदि धूप में सुखा देती हैं और भड़भूँजा से भुंजा लेती हैं, वे अनन्त काल तक संसार में परिभ्रमण करती हैं।

जो स्त्रियाँ मन, वचन, और काय से जीवरक्षा का प्रयत्न नहीं करतीं, शोधन किये बिना ही गेहूँ आदि धान्य पीसती एवं पिसाती हैं तथा बिना शोधन किये ईंधन जलाती हैं वे मरकर कूकरी, शूकरी, गधी, सर्पिणी, भैंस एवं कुत्ती आदि की नीच योनियों में जन्म लेती हैं।

जो स्त्रियाँ बिना प्रयोजन कच्चे फल, फूल, पत्ते आदि वनस्पति का छेदन-भेदन करती हैं, उनके शरीर के अंग कुष्ठ आदि रोगों से गल-गल कर छिन्न-भिन्न होते रहते हैं।

जो स्त्रियाँ पकवान आदि बनाते समय तेल, घी, दूध, गुड़ तथा शक्कर आदि से लिप्त हाथ यथा-तथा दीवारों में पोंछ देती हैं, तथा शक्कर, गुड़ के मैल आदि से लिप्त वस्त्र बिना धोये यद्वा-तद्वा आदि जमीन पर डाल देती हैं जिससे अनेक (चींटी, मक्खी, मकोड़े आदि) जीवों का सामूहिक घात हो जाता है, उस पाप के फल से वे एकेन्द्रिय

पर्याय में अथवा इतर-निगोद में निरन्तर पैदा होती रहती हैं।

जो स्त्रियाँ वस्त्र से छाने बिना ही तेल, घी, दूध आदि स्वयं खाती हैं और परिवार को खिलाती हैं, वे भव-भव में अन्धी होती हैं।

जो स्त्रियाँ मक्खन निकाल कर उसे 48 मिनट के भीतर गर्म नहीं करतीं तथा आलू, प्याज, लहसुन, बैंगन और नवनीत आदि स्वयं खाती हैं एवं परिवार को खिलाती हैं, वे बन्धन, मारण, तथा छेदन-भेदन आदि दुःखों को प्राप्त होती हैं।

जो स्त्रियाँ भिण्डी, करेला आदि सब्जियों को चाकू आदि से सुधारते समय विवेक नहीं रखती, अथवा भिण्डी आदि को बिना शोधन किये ही आग में साबित भूँज लेती हैं, उन्हें निरन्तर कोल्हू आदि यन्त्रों में पेला जाता है।

जो स्त्रियाँ चातुर्मास में भी पत्ती वाला शाक एवं साबित अनाज स्वयं खाती हैं और कुटुम्ब को खिलाती हैं, तथा केतकी, नीम और सहजना आदि के फूल, कन्दमूल आदि एवं कच्ची हल्दी का भक्षण करती-कराती हैं, वे नीच योनियों में अनेक प्रकार के भयंकर दुःख भोगती हैं।

जो स्त्रियाँ नाना प्रकार के व्यञ्जन, पकवान तथा दाल-भात-रोटी बनाने में निपुण नहीं हैं, रसोईघर एवं चँदेवा आदि का सम्मार्जन नहीं करती, उन्हें एकदम काले और गन्दे रखती हैं, रसोई के बर्तन राख, पाउडर से बर्तन साफ नहीं करतीं, उन्हें एकदम काले और गन्दे रखती हैं, और उन्हें कई घण्टों तक जूठे या गीले ही पड़े रहने देती हैं, रसोईघर में भोजन सामग्री ढक कर नहीं रखतीं, चप्पल पहिन कर रसोई बनाती हैं वे भव-भव कर्मकारी अर्थात् दासी आदि पर्यायों को प्राप्त करती हैं।

जो स्त्रियाँ प्रमाद के वशीभूत हो दो-दो, तीन-तीन दिन तक फ्रिज में रखे हुए बासे गीले आटे की रोटियाँ तथा बनी हुई सब्जी आदि स्वयं खाती हैं और अपने परिवार को खिलाती हैं तथा उत्तम घी, मावा आदि पदार्थों में जूठे पदार्थ मिला देती हैं, जो सदोष भोजनादि को शुद्ध कह देती हैं, जो अशुद्ध भोजन करने वाले बालकों की शुद्धता नहीं करती, दूषित मन, वचन, काय से साधर्मियों को भोजन कराती हैं एवं और भी अपने अनेक कर्त्तव्यों का पालन नहीं करतीं, वे जन्म-जन्म में दरिद्री और अंगहीन होती हैं।

जो स्त्रियाँ घर आदि को झाड़ते, बुहारते, लीपते, पोतते एवं रंग आदि करते समय

तथा वस्त्र आदि धोते समय जीवों की रक्षा का ध्यान नहीं रखतीं तथा गर्म जल में बिना छना ठण्डा जल मिलाकर स्नान करती एवं कराती हैं, वे पंचपरावर्तन संसार में परिभ्रमण करते हुए दीर्घ काल तक नरकादि गतियों के दुःख भोगती हैं।

जो स्त्रियाँ, क्रीम, पाउडर, लिपस्टिक एवं नाखून पॉलिस आदि हिंसात्मक प्रसाधनों से शरीर का श्रृंगार करती हैं, जिनेन्द्र दर्शन या पूजन किये बिना भोजन करती हैं, अष्टमी-चतुर्दशी आदि पर्व के दिनों में भी वस्त्र तथा शरीर आदि में साबुन लगाती हैं, विशेष श्रृंगार करती हैं और भोग भोगने के लिए व्रत नियमों का भंग कर देती हैं, वे भव-भव में शारीरिक और मानसिक भयंकर दुःख भोगती हैं।

जो स्त्रियाँ लोभ के वशीभूत होकर दूसरों के दूतीपने का कार्य करती हैं, दूसरों (देवरानी, जेठानी, सास एवं ननद आदि) का धन हरण करती रहती हैं, धरोहर हड़प लेती हैं तथा कषायों से वेष्टित रहती हैं, वे अढ़ाई पुद्गल परावर्तन काल पर्यन्त निगोद से नहीं निकलती हैं।

जो स्त्रियाँ माया कषाय से ग्रसित रहती हैं और छोटी-छोटी बातों पर कलह करती हैं, वे नियमतः तिर्यञ्च गति में जन्म लेकर सींगों से लड़ती हैं पश्चात् संक्लेश परिणामों से मरकर नरक में जाती हैं।

जो स्त्रियाँ चप्पल (जूतियाँ) पहिन कर (शौकपूर्वक) मन्दिर जाती हैं, मौजे पहिने हुए देव, शास्त्र, गुरु के दर्शन करती हैं, मन शुद्धि, वचन शुद्धि, शरीर शुद्धि, वस्त्र शुद्धि, द्रव्य शुद्धि के बिना ही देव पूजन और आहारदान आदि धार्मिक कार्य करती हैं, वे गर्भपात के सदृश दोष से दूषित होती हैं।

जो स्त्रियाँ अपने गर्भस्थ बालक-बालिका की स्वयं अपने हाथों से हत्या करती हैं, अर्थात् गोली आदि खाकर गर्भपात करती-कराती हैं, वे अनन्तकाल तक क्षुद्रभव धारण करती हुई एक श्वास में 18 बार जन्म-मरण की भयंकर वेदना का वेदन करती हैं।

जो स्त्रियाँ ब्रह्मचर्यव्रत को दूषित करती हैं, ब्रह्मचर्यव्रत को दूषित करने वाली वेश-भूषा पहनती हैं और नाना प्रकार के शरीर को सुसज्जित कर उसका प्रदर्शन करती हैं (या अर्धांग प्रदर्शन करती हैं) वे चाण्डाल कुल में जन्म लेती हैं।

जो स्त्रियाँ मुनियों को आहार देते समय अधिक बोलती हैं, कफ आदि थूकती हैं,

जम्भाई लेती हैं, क्रोध करती हैं, कृपणता करती हैं, ईर्ष्या या मात्सर्य भाव रखती हैं, मनोभावना हीन रखती हैं स्वयं का दोष छुपाकर अन्य को दोषी ठहराती हैं, सदोष कार्यों को घर के पुरुषों या नौकरों आदि से करवाती हैं और आहारदान देने में प्रमाद करती हैं, वे भव-भव में दुर्गतियों के घोर दु:खों की भाजन होती हैं।

जो स्त्रियों के हृदय में सच्चे देव, शास्त्र, गुरु का दृढ़ श्रद्धान, जैनतत्त्व की रुचि और जीवरक्षा का भान नहीं हैं, स्त्री पर्याय उनका कभी पीछा नहीं छोड़ती अर्थात् उन्हें भव-भव में स्त्री पर्याय ही प्राप्त होती रहती हैं।

इस प्रकार और भी अनेक प्रकार के दूषण हैं जो स्त्रियों में बहुलता से पाये जाते हैं, अत: अपनी आत्मा का कल्याण करने हेतु मायाचारी आदि समस्त गुणों का प्रयत्नपूर्वक त्याग करना चाहिए।

रजस्वला स्त्री के कर्त्तव्य

स्त्रियों के स्वभावत: प्रतिमाह रजस्राव होता है, जिसकी अशुद्धि तीन दिन पर्यन्त रहती है। चौथे दिन स्नान कर अपने पति-पुत्र के लिए भोजन बनाने की आज्ञा शास्त्रों में है। आहार-दान, पूजन, विधान, हवन आदि धर्मकार्यों के लिए (यदि पूर्ण शुद्धता है तो) पाँचवें दिन (वर्तमान में छठे दिन) शुद्ध मानी जाती है।

बीसवीं शताब्दी के यौवन काल में (कहीं-कहीं धार्मिक) शिक्षा का अधिकत: अभाव था। इसलिए अज्ञानता के कारण स्त्रियाँ रजस्वला अवस्था में करने योग्य और न करने योग्य कार्यों को प्राय: नहीं जानती थीं। वर्तमान में शास्त्रप्रकाशन, पठन-पाठन एवं उपदेशादि के माध्यम से शिक्षा का प्रसार तो अत्यधिक है, किन्तु स्कूलों और कॉलेजों में दी जाने वाली धर्मनिरपेक्ष शिक्षा आज की नवीन पीढ़ी को रजोधर्म के कर्त्तव्य-पालन करने से विमुख करती जा रही है। धार्मिक भावना एवं विवेक से हीन आज की शिक्षित लड़कियाँ रजस्वला अवस्था में नाना प्रकार के फैशन बनाती हैं। क्रीम, पाउडर, स्नो, लिपस्टिक आदि लगा कर शादी-विवाह, कॉलेज, क्लब, बाजार, होटल, सिनेमा, थियेटर एवं सभा-सोसायटी आदि में घूमती रहती हैं। सब प्रकार के मनुष्यों से वार्तालाप करती हैं। सब पदार्थों का स्पर्शादि करती हैं और भी अनेक नहीं करने योग्य कार्य करती हैं इसलिए आज अधिकतर बल-हीन, नेत्रज्योतिहीन, रोगी, दुर्बल, मूर्ख, कामी, व्यसनी

और धर्मभावना से हीन सन्तान पैदा हो रही हैं क्योंकि -

रजस्वला अवस्था में रुदन करने से टी.वी. आदिक में दिखाये जाने वाले रुदन वाले भयानक रूप देखने से गर्भ में आने वाला बालक नेत्रहीन, अंधा, धुंधली या फूली आदि विकारों से युक्त होता है। उसकी आँखों में डोरा हो जाते हैं, पानी बहता रहता है, आँखें कञ्जी, मांजरी तथा लाल हो जाती हैं, और भी नेत्र सम्बन्धी अनेक विकार हो जाते हैं तथा क्षण-क्षण में रुदन मचाने वाला और भयभीत पैदा है।

रजस्वला अवस्था में नाखून काटने से बालक के नाखून टेढ़े-मेढ़े, फीके, भद्दे और रुक्ष होते हैं तथा अनेक रोगों को उत्पन्न करने वाले होते हैं।

रजस्वला अवस्था में तेल आदि लगाने से बालक कोढ़ी और खाज-दाद आदि रोगों से पीड़ित रहते हैं।

रजस्वला अवस्था में अञ्जन, सुरमा एवं उबटन आदि लगाने से सन्तानें दुराचारी, व्यभिचारी और अन्य अनेक दुर्गुणों से युक्त होती हैं।

रजस्वला अवस्था में उच्च स्वर में बोलने या सुनने से सन्तान बहरी एवं कर्ण सम्बन्धी अन्य अनेक रोगों से पीड़ित उत्पन्न होती हैं।

रजस्वला अवस्था में दिन को सोने से सन्तानें प्रमादी, बहुत सोने वाली एवं ऊँघने वाली होती हैं।

रजस्वला अवस्था में अधिक हँसने से सन्तान के ओष्ठ, तालु, जिह्वा आदि काले पड़ जाते हैं।

रजस्वला अवस्था में अधिक बोलने से सच्चा प्रतापी (बालक भी) बकवासी, असत्यभाषी एवं लबार होता है।

रजस्वला अवस्था में अधिक परिश्रम करने से उन्मादी एवं पागल सन्तान पैदा होती है।

रजस्वला अवस्था में खुले (चौड़े) में सोने से उन्मत्त सन्तान पैदा होती है।

रजस्वला अवस्था में अधिक टीम-टाम और शृंङ्गार आदि करने से सन्तान व्याभिचारिणी होती है।

रजस्वला स्त्री के कर्त्तव्य

उन दिनों में ब्रह्मचर्यव्रत का पूर्ण पालन न करने से सन्तान अत्यन्त कामी और निर्लज्ज पैदा होती है, इस कारण रजस्वला अवस्था में इन सर्व अयोग्य दोषों का परित्याग कर तीन दिन पर्यन्त एकान्त स्थान में मौनपूर्वक रहना चाहिए। मन, वचन और काय से ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करना चाहिए। एकान्त स्थान में डाभ के आसन पर चटाई आदि पर सोना चाहिए। पलङ्ग, खाट, शय्या, वस्त्र, रुई एवं ऊन आदि के बिस्तरों पर नहीं सोना चाहिए। पवित्र भाव बनाने हेतु दिन में ही एक बार रस छोड़कर भोजन करना चाहिए। दूध, दही, घी आदि नहीं खाना चाहिए और न गरिष्ठ भोजन करना चाहिए। रजस्वला अवस्था में किये गये भोजन बर्तनों को अग्नि, राख डालकर शुद्ध कर लेना चाहिए।

उन तीन दिनों में पहिने हुए वस्त्र (साड़ी-पेटीकोट आदि) अलग रखने चाहिए, उन वस्त्रों से आहारदान एवं पूजन आदि क्रियाएँ नहीं करना चाहिए। तीन दिन पर्यन्त देव, शास्त्र, गुरु, (नवदेवता) एवं राजा आदि का दर्पण में भी दर्शन नहीं करना चाहिए और न सम्भाषण आदि करना चाहिए। जपमाला, शास्त्र और चैत्यालय के उपकरण आदि नहीं छूना चाहिए। पंच नमस्कार आदि किसी भी मन्त्र का उच्चारण नहीं करना चाहिए, केवल चिन्तन, मनन एवं स्मरण ही करना चाहिए।

तीन दिन पर्यन्त घर की किसी भी वस्तु का स्पर्श नहीं करना चाहिए, क्योंकि स्नान आदि (बाहर) का जल स्पर्श करने से, सिलाई, बुनाई करने से तथा गृह के और भी अन्य कार्य (कूटने, पीसने, कपड़े धोने, अनाज आदि साफ करने, बर्तन माँजने, झाड़ू बुहारी लगाने तथा पेड़-पौधों में जलादि सिंचन) करने से गृह की ऋद्धि-सिद्धि नष्ट हो जाती है, दरिद्रता का वास हो जाता है, दीन-हीन भावना और धर्महीन प्रवृत्तियाँ घेर लेती हैं। जब रजस्वला स्त्री की छाया पड़ने मात्र से नेत्ररोगी अन्धा हो जाता है, चेचक एवं मोतीझरा आदि की बीमारियाँ भयंकर रूप धारण कर लेती हैं, बड़ी-पापड़ आदि बेस्वाद और लाल हो जाते हैं, पकवान आदि उत्तम पदार्थ विकृत हो जाते हैं तथा मजीठ आदि का रंग विरङ्ग हो जाता है, तब पदार्थों का स्पर्श आदि करने से तो पवित्रता नष्ट होगी ही।

जो स्त्रियाँ अज्ञान से, प्रमाद से, अहंकार से, परवशता से या दैवयोग से उपर्युक्त कार्य करती हैं अर्थात् रजोधर्म का शास्त्रोक्त रीति से पालन नहीं करती हैं, वे इस भव में रोग, शोक, मोह, दरिद्रता एवं निन्दा आदि को प्राप्त होती हैं और पर-भव में कूकरी, शूकरी आदि पर्यायें धारण करती हुई तिर्यञ्चपर्यायजन्य अपरिमित कष्ट भोगती हैं। यदि

रजस्वला स्त्री के कर्त्तव्य

मनुष्यपर्याय भी हो गई तो चाण्डाल आदि नीच कुल में अथवा भिखारियों के यहाँ उत्पन्न होकर दु:ख भोगती हैं। स्त्री पर्याय प्राप्त कर वेधव्यजन्य और गलित कुष्ठरोगादिजन्य दु:ख भोगती हैं।

वर्तमान युग में नवीन (पाश्चात्य) शिक्षा प्राप्त लड़के-लड़कियाँ इस रजस्वला अवस्था को अपवित्र नहीं मानते। पक कर फूट जाने वाले फोड़े-फुन्सियों से जो रक्तस्त्राव होता, उसी के समान इसे मान कर न तो वे ब्रह्मचर्यव्रत रखते हैं और न भोजनादि बनाने में, स्पर्शास्पर्श में ग्लानि करते हैं, क्योंकि आगम में रजस्वला स्त्री को प्रथम दिन चाण्डलनी सदृश, दूसरे दिन ब्रह्मघातिन सदृश और तीसरे दिन धोबिन सदृश कहा है।

दूसरी बात है कि फोड़ा-फुन्सी स्त्री-पुरुष दोनों के होते हैं। बाल, युवा एवं वृद्ध इन तीनों अवस्थाओं में हो सकते हैं। फोड़ा जहाँ होता है वहाँ सूजन हो जाती है, उसे पकाने और फोड़ने के लिए औषधियों का प्रयोग करना पड़ता है। मांस उभर जाता है। रक्त के साथ पीप भी आती है और पीप निकल जाने के बाद घाव हो जाता है जो औषधियों के प्रयोग से भरते हैं। फोड़े आदि होने का कोई ऐसा नियम नहीं है कि वह प्रत्येक माह में ही हो। रजस्वला होने के पूर्व अंगड़ाई आना, पेट एवं पैरों आदि में दर्द होना, प्रमाद एवं मन की अप्रशस्ततारूप जो चिन्ह उत्पन्न होते हैं, वे फोड़ा-फुन्सी होने के पूर्व नहीं होते।

उपर्युक्त इन सब बातों पर विचार करने से ज्ञात होता है कि स्त्री-पर्याय के साथ रजोधर्म का अविनाभाव सम्बन्ध है। जो स्त्रियाँ (प्रौढ़ होने के पूर्व) रजस्वला नहीं होती, वे नियमत: बन्ध्या रहती हैं।

संसार भीरु दु:खभीरु तथा सुख-शान्ति एवं कल्याणेच्छुक नर-नारियों को आगम में कथित कर्त्तव्यों पर दृढ़ श्रद्धा रखते हुए सभी कार्य विवेक पूर्वक करने चाहिए और स्पर्शास्पर्श का ध्यान रखते हुए धर्म की रक्षा करनी चाहिए।

नारी नारी सब कहें, नारी नर की खान।
जिस नारी से पैदा हुए, तीर्थंकर भगवान॥

अहिंसा सूत्र गान

- आचार्यश्री आर्जवसागर जी

1. मानव तेरे अंतरंग में, करुणा का भण्डार भरा।
दानव बनकर हिंसा मतकर, यह अन्दर से सोच जरा॥
रक्षक से भक्षक बनता जो, यह मानव का काम नहीं।
धर्म कहे यह हिंसा करके, सुख का मिलता नाम नहीं॥

2. देखो! भारत भू पर कितना, भारी संकट आया है।
गौ-हिंसा अरु पशु-हिंसा ने, क्या साम्राज्य जमाया है॥
चर्म, माँस के लालच में लाखों प्राणी मारे जाते।
शरीरादि की शोभा करने, धर्म-सूत्र टाले जाते॥

3. रो-रोकर यह कहते पशु हे-मानव! मुझको मत मारो।
सुनो-सुनो! आवाज हमारी, थोड़ी सी-करुणा धारो॥
हम सब चेतन धारी प्राणी, सब मिल जग में रहते हैं।
सब सुख के हैं इच्छुक प्राणी, यह धर्मी जन कहते हैं॥

4. धर्म जैन हो या हिन्दू हो, चाहे हो सिख ईसाई।
मुस्लिम बौद्ध सभी में देखो! नहीं कही हिंसा भाई॥
सभी धर्म जो दया मूल है, उसकी बात बताते हैं।
नहीं मारना किसी जीव को, यही सबक सिखलाते हैं॥

5. मद्य माँस वा मधु सेवन में, नहीं अहिंसा पलती है।
मन-वच-तन में विकृति आती, वृत्ति तामसिक बनती है॥
नहीं धर्म में मन लगता है इनका सेवन जो करता।
क्रूर-भाव से धर्म भूलकर, दुर्गति पीड़ा वह सहता॥

अहिंसा सूत्र गान

6. तन भावों की हिंसा से वह, पाप कर्म का अर्जन हो।
हिंसा त्यागें करुणा धारें, पाप कर्म का मर्दन हो॥
पाप कर्म से दूर हुआ जो, उसका मन सुख पाता है।
भावों की वह शुचितापूर्वक, जैन धर्म अपनाता है॥

7. पाप बढ़े तब राष्ट्र ग्राम में, अशुभ कर्म होते दिखते।
महामारी व भूकम्पों से, लाखों जन पीड़ित दिखते॥
मानव सोचे इन दु:खों को, कौन यहाँ आ देता है?
स्वयं पाप की बलिहारी को, क्यों न समझ वह लेता है ?

8. नहीं प्राण की चिंता जिनको, आत्म धर्म की चिन्ता है।
न लेते जो अभक्ष वस्तु, जहाँ जीव की हिंसा है॥
शाकाहारी भोजन में भी, जो सीमा को रखते हैं।
नहीं दास, बनते जिह्वा के, साधु लालसा तजते हैं॥

9. सत् पुरुषों की धरा यहाँ जो, शुद्धाहार सदा देती।
जिसका सेवन करके मन में, जगती आध्यात्मिक ज्योति॥
गौरवशाली भारतवासी, इस धरती के गुण गाते।
नहीं वासना मन में रखकर, 'धर्मार्जव' से सुख पाते॥

विद्यासागर वंदनाष्टक

- आचार्यश्री आर्जवसागर जी

ज्ञानसागराचार्य श्री के, विद्यासागर शिष्य महा।
दृढ़ वैरागी यथा जात हैं, बहती समता सिन्धु जहाँ॥
निजातम के भेद ज्ञान से, शुद्धातम को जो ध्याते।
नमन करें हम गुरु चरणों में, उनके गुण संस्तुति गाके ॥1॥

ध्यान-साधना अपूर्व जिनकी, समता का सौरभ देती।
जिनका दर्शन पाकर अखियाँ, कर्म मैल को धो लेतीं॥
जिनकी अमृत वाणी सुनकर, प्राणी जय-जय करते हैं।
ऐसे विद्यासागर को हम, शत-शत वंदन करते हैं ॥2॥

भव-सागर में भटक रहे थे, गुरुवर ने सन्मार्ग दिया।
कुम्भकार के सदृश हमको, साधक का आकार दिया॥
समयसार का सार बताकर, शिष्यों का उद्धार किया।
नमस्कार उन विद्या गुरु को, जिनने यह उपकार किया ॥3॥

रत्नत्रय के धारी गुरुवर, शिवपथ के हैं पथिक रहे।
धर्म-मार्ग के नायक हैं जो, मोह-जाल से पृथक रहे॥
जिनके, जगकी असारता का, चिंतन निश-दिन साथ रहा।
ऐसे गुरु के चरण कमल में, मेरा झुकता माथ रहा ॥4॥

जिनके हृदय में वात्सल्य की, धारा नियमित बहती है।
अनेकान्त मय सम्यक्वाणी, मिथ्यातम को हरती है॥
सिद्धान्तों का आलोढ़न जो, प्रति-दिन करते रहते हैं।
उन विद्या के सागर को हम, अन्तर मन से नमते हैं ॥5॥

विद्यासागर वंदनाष्टक

दीक्षा-शिक्षा देने में जो, निपुणशील गुरुराज महा।
आवश्यक में दृढ़ धर्मी हैं, ना हैं लौकिक काम वहाँ॥
सिंहवृत्ति-समचर्या के जो, पालक मम गुरु हैं न्यारे।
वंदन करते मिलें आपके, उत्तम गुण मुझको प्यारे ॥6॥

आचार्य बने आचारों का, पालन करते-करवाते।
मूलगुणों अरु उत्तरगुण में, निज चेतन को नहलाते॥
हे गुरु! तेरी महिमा को मैं, कैसे ?कब तक ?गा सकता।
विद्या रूपी सागर बनकर, तुमको कब ?मैं पा सकता ॥7॥

सूरितिलक हो गुणवन्तों के, प्रतिपल गुण से शोभित हो।
कर्त्तव्यनिष्ठ, सत् योगी हो, परिषह से ना क्षोभित हो॥
अद्भुत कैसा ?मुख-मण्डल पर, तप का तेज चमकता है।
विद्या गुरु को ''आर्जवता'' से, मन यह वंदन करता है ॥8॥

गर नदियाँ न होती तो समुन्दर न होता ।
गर गुरु ज्ञानसागर न होते तो विद्यासागर न होते।
गर गुरु विद्यासागर न होते तो यह संघ न होता ।
और यह संघ न होता तो -
प्रवचन सुनने वाला यह जन संघ भी न होता ।।

नाम लेता हूँ तुम्हारा, तुम याद आते हो ।
मैं वह खोई हुई चीज हूँ, जिसका पता तुम हो ।।

शान्तिसागर विनयाञ्जलि अष्टक

आचार्यश्री १०८ आर्जवसागरजी महाराज

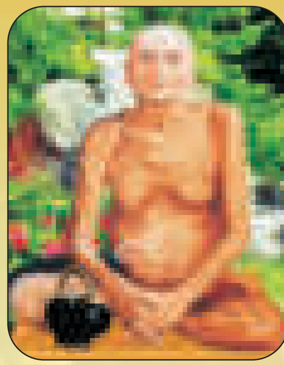

वर्तमान में श्रमणमार्ग के, श्रेष्ठ सु-धारक आप रहे।
चौथे युग की चर्या के भी, ज्ञाता उत्तम आप रहे॥
घोर तपों बहु उपवासों से, कर्म बंध को शिथिल किया।
शान्तिश्री के पद कमलों में, मम मन ने यह नमन किया ॥1॥

जिनके पावन दर्शन पाने, श्रावक दौड़े आते थे।
अमृतमय गुरु सदुपदेश से, शान्ति-सुधा को पाते थे॥
त्याग, दया वा क्षमाशीलता, गुण जीवन में लाते थे।
शान्तिश्री की गौरवता को, सब मिल करके गाते थे ॥2॥

शूरवीर बन इस भारत की, तीर्थ वंदना जिनने की।
सत्य, दया की धर्म पताका, जग में फहरा जिनने दी॥
श्रमण जनों के दर्शन का ये, स्वप्न यहाँ साकार हुआ।
शान्तिश्री का जीवन दर्शन, जन-जन का हितदर्श हुआ ॥3॥

ज्ञानी, ध्यानी महाव्रती वे, स्वानुभवी व समधनी थे।
पूजा, ख्याति प्रलोभनों से, सुदूर वे शिरोमणी थे॥
अहंकार का नाम नहीं था, ओंकार से पूरित थे।
शान्तिश्री जी इस धरती पर, धर्ममार्ग की मूरत थे ॥4॥

शान्तिसागर विनयाञ्जलि अष्टक

सरल-वृत्ति का शान्त सरोवर, जिनमें है लहराता था।
स्याद्वाद के तट से बँधना, इस जग को सिखलाता था॥
सभी मतों से बने एकता, धर्म सूत्र हैं बतलाए।
जीव मात्र पर करुणा के थे, सबक आपने सिखलाए ॥5॥

मिथ्यारूपी अंधकार को, आगम पथ दे दूर किया।
सम्यग्दर्शन की किरणों से, मोक्ष सु-मार्ग प्रशस्त किया॥
वीर जवानों की सेना के, आप रहे आदर्श यति।
महा मनीषी महा सु-योगी, बढ़े आपकी शुभ कीर्ति ॥6॥

भगवन् देश व कुलभूषण के, परम भक्त हैं आप रहे।
समाधि लेकर उनके पद में, मरण विजेता आप रहे॥
संत शिरोमणि, महातपोधन, शान्ति-सागराचार्य श्री।
हम सब वंदन करते पद में, हमें मिले वह मुक्ति श्री ॥7॥

शान्ति, वीर अरु शिवसागर थे, ज्ञान, विद्या के आधार।
जिनके कदमों पर चल करके, बना ''आर्जव'' मैं अनगार॥
यही भावना गुरु चरणों में, नमन् करते हैं शत बार।
बने चेतना निर्मल मेरी, पाऊँ मुक्ति समता धार ॥8॥

दोहा

चारित चक्री को नमूँ, कर्म चक्र नश जाय।
शान्तिसागर सम बनूँ, परम शान्ति जग जाय।।

करते रहें गुणगान

करते रहें गुणगान, हमें दो ऐसा वरदान-2।
तेरा नाम ही लेते लेते, इस तन से निकलें प्राण।।
इस तन से निकलें प्राण ।।

करते रहें..........
पुण्य उदय से मेरे भगवन्, मैंने यह नर तन पाया।
संयम पालन में डाले बाधा, जग की यह मोह माया।।

फिर भी ये अरज करते हैं, हो सके तो देना ध्यान-2।।

करते रहें..........
सीता चंदनबाला जैसी, दुख सहने की शक्ति दो-2,
विचलित न हूँ पथ से भगवन्, मुझ में ऐसी भक्ति दो।

तेरी भक्ति में ही बीते, इस जीवन की हर शाम-2।।

करते रहें..........
क्या मालूम कब कौन किस घड़ी काल बुलावा आ जाये-2,
मेरे मन की इच्छा मेरे, मन ही मन में रह जाए ।

मेरी इच्छा पूरी करना, हे जिनवर दया निधान-2।।

करते रहे...........

रोम-रोम से निकले प्रभुजी......

रोम-रोम से निकले प्रभुजी नाम तुम्हारा प्रभु जी नाम तुम्हारा-2
ऐसा दो वरदान२ कि फिर न पाऊँ जनम दुबारा ।। रोम-रोम से.......

छोड़ न पाऊँ प्रभुजी, पाँच ठगों का डेरा ।-2
किस विधि आखिर पाऊँ, दर्शन प्रभुजी तेरा ।।-2
भटक न जाए ये बालक, प्रभु देना आन सहारा, रोम-रोम से.......

दिल से निश दिन प्रभुजी, ज्योति जलाऊँ तेरी,-2
कब तक मन की होगी, पूरी आशा मेरी।-2
इन नयनों से, तेरी ज्योति का, देखूँ अजब नजारा, रोम-रोम से.......

कोई न खाली जाये, तेरे दर से प्रभुजी,-2
अपनी दया का हाथ तू, सर पे रख दे प्रभुजी।-2
तेरे दर पर आये हैं, पाने दीदार तुम्हारा, रोम-रोम से.......

चरणों में नमन हमारा

चरणों में नमन हमारा करलो गुरुवर स्वीकार।-2
गुरुवर हमको दीजिये संयम का उपहार-2।
करुणा के धारी गुरुवर इक दिल की बात बताते हैं।
घर जाने को मन नहीं करता पास में जब आ जाते हैं।-2
वाणी का कहें करिश्मा या त्याग का कहें प्रताप।।
गुरुवर............. चरणों .....

तीन बातें कुछ दिन से गुरु मेरे हृदय समाई हैं।-2
प्रथम तो हो गृह त्याग व दूजी मुनि की मुद्रा भाई है।-2
तीजा हो मरण समाधि अब दे दो आशीर्वाद।
गुरुवर............. चरणों .....

गुरुवर की स्तुति करने से कट जाते जन्मों के पाप।-2
मन में भाव बहुत हैं कहने शब्द नहीं हैं मेरे पास ।
जयवंत रहें मेरे गुरुवर और जियें हजारों साल।
गुरुवर............. चरणों .....

मेरे नगर में विद्या गुरुवर की कुछ कृपा निराली है।-2
भेज दिया कई शिष्यों को अब तो गुरुवर की बारी है।
गुरु संघ सहित आ जायें मिल करें सभी पुरुषार्थ।।
गुरुवर............. चरणों .....

मेरे नगर में आर्जवसागर, जी की कृपा निराली है।
चार्तुमास तो बीत चुका अब शीतकाल की बारी है।
हो ग्रीष्म काल पूरा-२ फिर बाद में चातुर्मास ।।
देना है तो दीजिये मोक्षनगर तक साथ ।।
चरणों में नमन हमारा-२ करलो गुरुवर स्वीकार।
गुरुवर हमको दीजिये संयम का उपहार-2।

श्रद्धा

श्रद्धा हमारी भाषा, निष्ठा हमारा नारा।
गुरुदेव की शरण में, भव का मिले किनारा ।।
हम गुरु के शिष्य ऐसे, जैसे दिये में बाती।
जलते रहेंगे हर पल, चाहे हो तूफां पानी।। श्रद्धा......

गुरुवर हमारे ऐसे, जैसे श्री वीर भगवन ।
श्री कुन्दकुन्द स्वामी, जैसा पवित्र जीवन ।। श्रद्धा......

चरणों का स्पर्श पाकर, हो जाती माटी चंदन ।
पारस हैं आप गुरुवर, हमको बना दो कुन्दन ।। श्रद्धा......

दुखियों के दुःख हरने, हरदम खड़े रहेंगे।
हर आँच में जलेंगे, कर्मों से हम लड़ेंगे ।। श्रद्धा......

शुद्धोपयोगी गुरुवर, बस एक भावना है।
बन जाएँ आप जैसे, कुछ और चाह न है ।।
श्रद्धा हमारी भाषा, निष्ठा हमारा नारा।
गुरुदेव की शरण में, भव का मिले किनारा ।।

संत साधु बनके विचरुँ, वह घड़ी कब आयेगी।
चल पड़ूँ मैं मोक्ष पथ पर, वह घड़ी कब आयेगी।।

हाथ में पिच्छी कमण्डल, ध्यान आतम राम का।
छोड़कर घर बार दीक्षा, की घड़ी कब आयेगी।।
संत साधु .... ।।1।।

आयेगा वैराग्य मुझको, इस दुःखी संसार से।
त्याग दूँगा मोह ममता, वह घड़ी कब आयेगी ।।
संत साधु .... ।।2।।

पाँच समिति तीन गुप्ति, बाईस परीषह भी सहूँ।
भावना बारह जु भाऊँ, वह घड़ी कब आयेगी ।।
संत साधु .... ।।3।।

बाह्य उपाधि त्याग कर, निज तत्त्व का चिन्तन करूँ।
निर्विकल्प होवे समाधि, वह घड़ी कब आयेगी ।।
संत साधु .... ।।4।।

परम दिगम्बर

परम दिगम्बर मुनिवर देखे, हृदय हर्षित होता है।
आनन्द उल्लसित होता है, हो-SSS सम्यग्दर्शन होता है।। हो।।
ऐसे परम दिगम्बर......

वास जिनका वन, उपवन में, गिरि शिखर के नदी तटे।-2
वास जिनका चित्त गुफा में, आतम आनन्द में रमें-2।। आतम....।।
ऐसे परम दिगम्बर......

कंचन कामिनी के त्यागी, महातपस्वी ज्ञानी ध्यानी।-2
काया की माया के त्यागी, तीन रतन गुण भण्डारी-2 ।। तीन....।।
ऐसे परम दिगम्बर......

परम पावन मुनिवरों के, पावन चरणों में नमूँ।-2
शान्त मूर्ति सौम्य मुद्रा, आतम आनन्द में रमूँ-2।। आतम.....।।
ऐसे परम दिगम्बर......

चाह नहीं है राज्य की, चाह नहीं है रमणी की।-2
चाह हृदय में एक यही है, शिवरमणी को वरने की-२ ।। शिव....।।
ऐसे परम दिगम्बर......

भेदज्ञान की ज्योति जलाकर, शुद्धातम में रमते हैं।-2
क्षण-क्षण में अन्तर्मुख होकर, सिद्धों से बातें करते हैं-२।। सिद्धों....।।
ऐसे परम दिगम्बर......

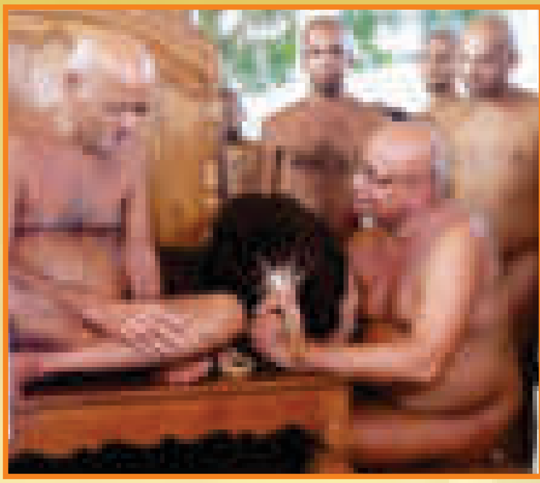

आत्म शक्ति से........

आत्म शक्ति से ओत-प्रोत विद्या और ज्ञान से भर दो
गुरुवर ऐसा वर दो।
रहे मनोबल अचल मेरू सा तनिक नहीं घबराऊँ।
प्रबल आंधियाँ रोक सके ना, आगे बढ़ता जाऊँ।।
उड़ जाऊँ निर्बाध लक्ष्य तक, गुरुवर ऐसा वर दो
गुरुवर ऐसा......आत्म शक्ति से.....
है अज्ञान निशा अंधियारी तुम दिन कर बन आओ।
ज्ञान और भक्ति की शिक्षा, बालक को समझाओ।।
विनय भरा गुरु ज्ञान मुझे दो, मन ज्योतिर्मय कर दो
गुरुवर ऐसा......आत्म शक्ति से.....
सुमति सुजस सुख संपत्ति दाता, हे गुरुवर अपनालो।
संत समागम चाहूँ मैं, मुझे अपने पास बिठा लो।।
जैसा भी हूँ तेरा ही हूँ, हाथ दया का धर दो
गुरुवर ऐसा......आत्म शक्ति से.....
मैं अबोध शिशु हूँ गुरु तेरा, दोष ध्यान मत देना।
सब भक्तों के साथ मुझे भी, शरण चरण की देना।।
हे गुरुवर सुख ज्ञान अभय और, मन भक्ति से भर दो
गुरुवर ऐसा......आत्म शक्ति से.....

शिवं शुद्धबुद्धं परं विश्वनाथं, न देवो न बंधुर्न कर्म न कर्त्ता।
न अंङ्ग न सङ्ग न स्वेच्छा न कायं, चिदानन्द रूपं नमो वीतरागम्॥
न बन्धो न मोक्षो न रागादि दोषः, न योगं न भोगं न व्याधिर्न शोकं।
न कोपं न मानं न माया न लोभं, चिदानन्द रूपं नमो वीतरागम्॥
न हस्तौ न पादौ न घ्राणं न जिह्वा, न चक्षुर्न कर्ण न वक्त्रं न निद्रा।
न स्वामी न भृत्यः न देवो न मर्त्यः, चिदानन्द रूपं नमो वीतरागम्॥
न जन्मं-मृत्युं न मोहं न चिंता, न क्षुद्रो न भीतो न कार्श्यं न तन्द्रा।
न स्वेदं न खेदं न वर्ण न मुद्रा, चिदानन्द रूपं नमो वीतरागम्॥
त्रिदंडे त्रिखंडे हरे विश्वनाथम्, हृषीकेश विध्वस्त कर्मादि जालम।
न पुण्यं न पापं न चाक्षादि गात्रम्, चिदानन्द रूपं नमो वीतरागम्॥
न बालो न वृद्धो न तुच्छो न मूढ़ो, न स्वेदं न भेदं न मूर्तिर्न स्नेहः।
न कृष्णं न शुक्लं न मोहं न तंद्रा, चिदानन्द रूपं नमो वीतरागम्॥
न आद्यं न मध्यं न अन्तं न चान्यत्, न द्रव्यं न क्षेत्रं न कालो न भावः।
न शिष्यो गुरुर्नापि हीनं न दीनं, चिदानन्द रूपं नमो वीतरागम्॥
इदं ज्ञानरूपं स्वयं तत्त्ववेदी, न पूर्ण न शून्यं न चैत्य स्वरूपम्।
न चान्यो न भिन्नो न परमार्थमेकम्, चिदानन्दरूपं नमो वीतरागम्॥

आत्माराम गुणाकरं गुणनिधिं चैतन्य रत्नाकरं
सर्वे भूतगतागते सुखदुःखे ज्ञाते त्यवया सर्वगे।
त्रैलोक्याधिपते स्वयं स्वमनसा ध्यायंति योगीश्वराः
वंदे तं हरिवंशहर्षहृदयं श्रीमान् हृदाभ्युद्यताम्॥१॥

॥ इति वीतराग स्तोत्रं॥

परमानन्द-संयुक्तं, निर्विकारं निरामयम्।
ध्यानहीना न पश्यन्ति, निजदेहे व्यवस्थितम्॥ 1॥
अनन्तसुखसम्पन्नं, ज्ञानामृतपयोधरम्।
अनन्तवीर्यसम्पन्नं, दर्शनं परमात्मनः॥ 2॥
निर्विकारं निराबाधं, सर्वसङ्गविवर्जितम्।
परमानन्दसम्पन्नं, शुद्धचैतन्यलक्षणम्॥ 3॥
उत्तमा स्वात्मचिन्ता स्यात् देहचिन्ता च मध्यमा।
अधमा कामचिन्ता स्यात्,परचिन्ताऽधमाधमा॥ 4॥
निर्विकल्प समुत्पन्नं, ज्ञानमेव सुधारसम्।
विवेकमञ्जलिं कृत्वा, तं पिबंति तपस्विनः॥ 5॥
सदानन्दमयं जीवं, यो जानाति स पण्डितः।
स सेवते निजात्मानं, परमानन्दकारणम्॥ 6॥
नलिन्याच्च यथा नीरं, भिन्नं तिष्ठति सर्वदा।
सोऽयमात्मा स्वभावेन, देहे तिष्ठति निर्मलः॥ 7॥
द्रव्यकर्ममलैर्मुक्तं भावकर्मविवर्जितम्।
नोकर्मरहितं सिद्धं निश्चयेन चिदात्मकम्॥ 8॥
आनन्दं ब्रह्मणो रूपं, निजदेहे व्यवस्थितम्।
ध्यानहीना न पश्यन्ति,जात्यन्धा इव भास्करम्॥9॥
सद्ध्यानं क्रियते भव्यैर्मनो येन विलीयते।
तत्क्षणं दृश्यते शुद्धं, चिच्चमत्कारलक्षणम्॥ 10॥

ये ध्यानशीला मुनयः प्रधानास्ते
दुःखहीना नियमाद्भवन्ति।
सम्प्राप्य शीघ्रं परमात्मतत्त्वं,
व्रजन्ति मोक्षं क्षणमेकमेव॥ 11॥
आनन्दरूपं परमात्मतत्त्वं,
समस्तसंकल्पविकल्पमुक्तम्।
स्वभावलीना निवसन्ति नित्यं,
जानाति योगी स्वयमेव तत्त्वम्॥12॥

चिदानन्दमयं शुद्धं, निराकारं निरामयम्।
अनन्तसुखसम्पन्नं सर्वसङ्गविवर्जितम्॥ 13॥
लोकमात्रप्रमाणोऽयं, निश्चये न हि संशयः।
व्यवहारे तनुमात्रः कथितः परमेश्वरैः॥ 14॥
यत्क्षणं दृश्यते शुद्धं तत्क्षणं गतविभ्रमः।
स्वस्थचित्तः स्थिरीभूत्वा, निर्विकल्पसमाधिना॥15॥
स एव परमं ब्रह्म, स एव जिनपुङ्गवः।
स एव परमं तत्त्वं, स एव परमो गुरु : ॥ 16॥
स एव परमं ज्योतिः, स एव परमं तपः।
स एव परमं ध्यानं, स एव परमात्मकः॥ 17॥
स एव सर्वकल्याणं, स एव सुखभाजनम्।
स एव शुद्धचिद्रूपं, स एव परमः शिवः॥ 18॥
स एव परमानन्दः, स एव सुखदायकः।
स एव परमज्ञानं, स एव गुणसागरः॥ 19॥
परमाल्हादसम्पन्नं, रागद्वेषविवर्जितम्।
सोऽहं तं देहमध्येषु यो जानाति स पण्डितः॥20॥
आकाररहितं शुद्धं, स्वस्वरूपे व्यवस्थितम्।
सिद्धमष्टगुणोपेतं, निर्विकारं निरञ्जनम्॥21॥
तत्सद्दृर्शनं निजात्मानं, प्रकाशाय महीयसे।
सहजानन्दचैतन्यं, यो जानाति स पण्डितः॥22॥
पाषाणेषु यथा हेम, दुग्धमध्ये यथा घृतम्।
तिलमध्ये यथा तैलं, देहमध्ये तथा शिवः॥23॥
काष्ठमध्ये यथा वह्निः, शक्तिरूपेण तिष्ठति।
अयमात्मा शरीरेषु, यो जानाति स पण्डितः॥24॥
॥ इति परमानन्द स्तोत्रं समाप्तम्॥

उड़ा जा रहा है पंछी ......

उड़ा जा रहा है पंछी हरी-भरी डाल से,
रोको रे रोको कोई मुनि को विहार से।
सोचा कभी न हमने आके जगाओगे,
और जगा के हमें यूँ ही छोड़ जाओगे।-2
ध्यान देना जीवन का फिर से पधार के ।। रोको रे रोको......
सरगम की तानें टूटी रूठ गई साँसें।
आके मनाओ गुरुवर, रो रही आँखें।-2
दीप जलाओ सम्यक् दीवाली मनाय के, रोको रे रोको......
पास जो तेरे रहके भजन मैंने गाये,
जीवन में उतने मैंने पुण्य कमाये।-2
पुण्य की वरषा करो नगर में पधार के, रोको रे रोको......
कम्पित है मन की बगिया हरियाली आज है,
पतझड़ न आ जाये सूखे वृक्ष ये आज है।-2
पतला ये पुण्य हुआ है जायें गुरु आज रे, रोको रे रोको......
गुरु और ऐलक, क्षुल्लक, माता कृपा करो
हो गई जो भी गलती हमको क्षमा करो,-2
मोह का बंधन हम पर, गिरे आँसू आज रे, रोको रे रोको......

दुनिया में ऐसा कहाँ

दुनिया में ऐसा कहाँ सबका नसीब है।
कोई-कोई अपने गुरु के करीब है ।।
कोई बुझावे चाहे दीपक सारे,
गुरु ही दिखाये आके राह में तारे।
गुरु हो करीब तो, उसका नसीब है।।
दुनिया............ कोई-कोई..............
आँख भरी है मेरी, पथ अंधियारा।
राह न सूझी तो दे दो सहारा ।
पास हो मांझी तो किनारा करीब है।।

दुनिया............ कोई-कोई..............
गुरु तुम तो छोड़ के आये, दुनिया के रिश्ते।
हमको निकालो गुरुवर, दल-दल के बीच से।
मेरे हृदय में गुरु, भक्ति का संगीत है।।
दुनिया............ कोई-कोई..............

निज घर आये......

हम तो कबहुँ न निज घर आये। 2
पर घर फिरत बहुत दिन बीते2, नाम अनेक धराये।।
हम तो...............2
पर पद निजपद मानि मगन है 2, पर परणति लिपटाये।
शुद्ध बुद्ध सुखकन्द मनोहर 2, चेतन भाव न भाये ।।
हमतो..............2

नर पशु देव नरक निज जान्यो२, पर जय बुद्धि लहाये।
अमल अखण्ड अतुल अविनाशी 2, आतम गुन नहिं गाये ।।
हमतो...............2

यह बहु भूल भई हमरी फिर 2, कहा काज पछताये।
दौल तजो अजहुँ विषयन को 2, सतगुरु वचन सुनाये ।।
हम तो...............2

जिया कब तक उलझेगा.......

जिया कब तक उलझेगा, संसार विकल्पों में।
कितने भव बीत चुके, संकल्प विकल्पों में ।।
जिया कब..........
उड़-उड़ कर ये चेतन, गति-गति में जाता है।
रोगों में लिप्त सदा, भव-भव दुःख पाता है ।।
निज तो न सुहाता है, पर ही मन भाता है।
ये जीवन बीत रहा, झूठे संकल्पों में ।।
जिया कब..........
तू कौन कहाँ का है, और क्या है नाम तेरा।
आया किस घर से है, जाना किस गाँव अरे ।।
यह तन तो पुद्गल है, दो दिन के ठाठ भरे ।।
जिया कब..........
यदि अवसर चूका तो, भव-भव पछताएगा।
ये नर भव कठिन महाँ, किस गति में जाएगा।।
नर भव पाया भी तो, जिन कुल न पाएगा।
अब गिनती जन्मों की अगणित विकल्पों में ।।
जिया कब..........

पाना नहीं जीवन को बदलना है साधना......

पाना नहीं जीवन को बदलना है साधना।-2
धुएँ सा जीवन मौत है जलना है साधना ।।
पाना नहीं ....
मूड़ मुड़ाना बहुत सरल है मन मुंडन आसान नहीं।-२
व्यर्थ भभूत लगाना तन पर यदि गीता का ज्ञान नहीं ।।-2
पर की पीड़ा में मोम सा पिघलना है साधना।
पाना नहीं ....
मंदिर में हम बहुत गये पर मन ये मंदिर नहीं बना।-2
व्यर्थ जिनालय में जाना जो मन जिनवर सम नहीं बना ।।-2
पल-पल समता में इस मन का ढलना है साधना।
पाना नहीं ....
सच्चा पाठ तभी होगा जब जीवन में पारायण हो।-2
श्वास-श्वास धड़कन-धड़कन में जुड़ी हुई रामायण हो।।-2
सत् पथ पर जन-जन का चलना है साधना।
पाना नहीं ....

1. ये तो संसार सागर दुखों से भरा,-2
यामें सुख तो नजर, कहीं आता नहीं।
यामें मोह का जाल बिछा है गजब,-2
यामें जीव फंसे हैं खबर ही नहीं।।
ये तो संसार ....

2. कैसे माता पिता, कैसे बन्धु सखा,-2
कैसे भाई बहिन, कैसे दारा पति ।
ये तो स्वारथि हैं ये तो हैं न सगे,-2
सच पूछो तो अपना ये घर भी नहीं ॥
ये तो संसार ....

3. नदी नाव संयोग जो आके मिले,-2
जैसे पेड़ों पे पंछी बसेरा करे ।
अरु भोर भई सब उड़ ही गये,-2
साथ चलने का कोई जिकर ही नहीं ॥
ये तो संसार ....

4. अरु फौज पमादे हजारों खड़े,-2
चाहे महल किले में बन्द करें।
चाहे जंतर मंतर लाखों करें,-2
मौत टाले किसी की भी टलती नहीं ॥
ये तो संसार ....

गुरुवर तेरे चरणों की

गुरुवर तेरे चरणों की मुझे धूल जो मिल जाये ।
चरणों की रज पाकर तकदीर बदल जाये ।।

मेरा मन बड़ा चंचल है इसे कैसे मैं समझाऊँ ।
इसे जितना भी समझाऊँ उतना ही मचल जाये ।। गुरुवर तेरे .....

मेरी नांव भँवर में है इसे पार लगा देना ।
तेरे एक इशारे से मेरी नाव उबर जाये ।। गुरुवर तेरे .....

नजरों से गिराना ना चाहे जितनी सजा देना ।
नजरों से जो गिर जाये वो कैसे सम्हल पाये ।। गुरुवर तेरे .....

बस एक तमन्ना है गुरु सामने हों मेरे ।
गुरु सामने हों मेरे चाहे प्राण निकल जायें ।। गुरुवर तेरे .....

गुरुवर तेरे चरणों की ....

वीर हिमाचलतैं निकसी, गुरु गौतम के मुखकुण्ड ढ़री है।
मोह महाचल भेदचली, जग की जड़तातप दूर करी है।।

ज्ञान पयोनिधि माँहिं रली, बहुभंगतरंगनि सों उछरी है।
ता शुचिशारद गंगनदी प्रति, मैं अंजुलि करि शीश धरी है।।

जा जगमन्दिर में अनिवार, अज्ञान अंधेर छयौ अति भारी ।
श्री जिनकी धुनिदीपशिखासम, जो नहिं होत प्रकाशनहारी ।।

तो किस भाँति पदारथ-पांति, कहाँ लहते रहते अविचारी ।
या विधि सन्त कहैं, धनि हैं, धनि हैं जिन-बैन बड़े उपकारी ।।

जिनवाणी स्तुति

(लय राष्ट्रीयगीत)

तीर्थंकर की निश-दिन जय हो, जय जिनवाणी माता।
जय मुनिवर की, जैन धर्म की, गाते हम गुण गाथा ॥ 1 ॥

पूजा भक्ति करते नित हम, सब दुःख है मिट जाता।
दया धर्म का पालन करते, जग सुख-मय है भाता ॥ 2 ॥

पंच पाप का त्याग करें हम, पाप-कर्म भग जाता।
त्याग, दान व संयम पथ से, पुण्य कोष भर जाता ॥ 3 ॥

ध्यान लगाकर आतम में जो-योगी बन रम जाता ।
कर्म काटकर प्राणी ऊपर-जाता शिवपद पाता ॥ 4 ॥

सब जीवों की कल्याणी है, यह जिनवाणी माता।
शरण पाऊँ माता मैं तेरी, गुण गाऊँ रख माथा ॥ 5 ॥

जय हे ! जय हे ! जय हे ! जय जय जय जय हे ! जय जिनवाणी माता !

। जिनवाणी माता की जय ।

- नेक जीवन

(आ.श्री आर्जवसागर जी)

सांची तो गंगा, जिनवाणी मोक्ष.....

(1)

सांची तो गंगा यह वीतराग वाणी,
अविच्छिन्न धारा निज धर्म की कहानी ।।टेक।।
जामें अति ही विमल, अगाध ज्ञान पानी।-2
जहाँ नहीं संशयादि, पंक की निशानी ।।1।।
सप्तभंग जहँ तरंग, उछलत सुखदानी।-2
संत चित मरालवृन्द, रमैं नित्य ज्ञानी ।।2।।
जाके अवगाहनतैं, शुद्ध होय प्राणी ।-2
भागचन्द निहचें, घटमाहिं या प्रमानी ।।3।।

(2)

जिनवाणी मोक्ष नसैनी है जिनवाणी........
जीव कर्म के जुदा करन को-2,
ये ही पैनी छैनी है जिनवाणी। जिनवाणी............
जो जिनवाणी नित अभ्यासे-2,
वो ही सच्चा जैनी है जिनवाणी। जिनवाणी............
जो जिनवाणी उर न धरत है-2,
सैनी होके असैनी है जिनवाणी। जिनवाणी............
पढ़ो सुनो ध्यावो जिनवाणी-2,
यदि सुख शांति लेनी है जिनवाणी। जिनवाणी............

(3)

मिथ्यातम नासवे को, ज्ञान के प्रकाशवे को ।
आपा पर भासवे को, भानु सी बखानी है ।।
छहों द्रव्य जानवे को, बन्ध-विधि भानवे को।
स्वपर पिछानवे को, परम प्रमानी है ।।
अनुभव बतायवे को, जीव के जतायवे को।
काहू न सतायवे को, भव्य उर आनी है ।।
जहाँ-तहाँ तारवे को, पार के उतारवे को ।
सुख विस्तारवे को, ऐसी जिनवाणी है।।

जा वाणी के ज्ञानतैं, सूझे लोकालोक ।
सो वानी मस्तक धरों, सदा देत हों धोक ।।
हे जिनवाणी भारती, तोहिं जपूँ दिन रैन ।
जो तेरी शरणा गहै, सो पावे सुख चैन ।।
देव भजो अरिहंत को, गुरु सेवो निर्ग्रन्थ ।
दया धर्म पालो सदा, यही मोक्ष का पन्थ ।।

भजन

तुम्हें छोड़कर किसको देखूँ, किसको पाऊँ दुनियाँ में।
चरणों आऊँ, शीश झुकाऊँ, आप अलौकिक दुनियाँ में॥
जिस पल तुमको देखा भगवन्, उस पल जो आनंद मिला।
मुझको ऐसा लगा कि भगवन्, सिद्धशिला में जन्म लिया॥
तुम्हें....

वीतरागता झर-झर बहती, क्या तुमको झरना कह दूँ।
वात्सल्य की धारा बहती, क्या तुमको सरिता कह दूँ॥
तेरे पद आनंद सरोवर, और कहाँ इस दुनियाँ में।
चरणों आऊँ शीश झुकाऊँ, आप अलौकिक दुनियाँ में॥
तुम्हें....

क्या तुमको उपहार चढ़ाऊँ, भव-भव से मैं हार गया।
हृदय हार मैं तुम्हें बनाऊँ, तुमने भव से तार दिया॥
जब-जब मुझको जन्म मिले नव, आप मिले इस दुनियाँ में।
चरणों आऊँ शीश झुकाऊँ, आप अलौकिक दुनियाँ में॥
तुम्हें....

वीतराग सर्वज्ञ देव तुम, बैठे हो जिन मंदिर में।
भक्त तुम्हारा तुम्हें पुकारे, आन बसो मन मंदिर में॥
मन मंदिर में आन बसो तो, कहीं न भटकूँ दुनियाँ में।
चरणों आऊँ, शीश झुकाऊँ, आप अलौकिक दुनियाँ में॥
तुम्हें....

जिनवाणी जग मैय्या....., माता तू दया.......

जिनवाणी जग मैया, जनम दुःख मेट दो।
जनम दुःख मेंट दो, मरण दुःख मेंट दो ।। 2
समवशरण सा महल तुम्हारा, गणधर जैसा भैया। 2
कुन्द-कुन्द से पुत्र तुम्हारे, तीर्थंकर से सैंया।
जनम दुःख मेंट दो, जिनवाणी जग मैया जनम.....
सात तत्त्व छः द्रव्य बताये, हो उपकारी मैया। 2
जो भी शरण में आया उसकी पार लगा दी नैया।।
जनम दुःख मेंट दो, जिनवाणी जग मैया जनम.....
संकट मोचन नाम तुम्हारा, तुम हो जग की मैय्या। 2
हाथ जोड़कर शीश नवाऊँ, पड़ूँ तुम्हारे पैया।।
जनम दुःख मेंट दो, जिनवाणी जग मैया जनम.....
जनम दुःख मेंट दो, मरण दुःख मेंट दो ।। 2 जिनवाणी.........

(भक्ति) माता तू दया करके.........

माता तू दया करके कर्मों से छुड़ा देना ।
इतनी सी विनय तुमसे चरणों में जगह देना।।

माता आज मैं भटका हूँ, माया के अंधेरे में।
कोई नहीं मेरा है, इस कर्म के रैले में ।
कोई नहीं मेरा है, तुम धीर बंधा देना ।
माता तू दया....... इतनी सी........
जीवन के चौराहे पर, मैं सोच रहा कब से।
जाऊँ तो किधर जाऊँ, वह पूछ रहा मन से।
पथ भूल गया हूँ मैं, तुम राह दिखा देना।
माता तू दया....... इतनी सी........
लाखों को उबारा है, मुझको भी उबारो तुम।
मझधार में है नैया, उसको भी तिरा दो तुम।
मझधार में अटका हूँ, मुझे पार लगा देना ।
माता तू दया....... इतनी सी........

जिनवाणी माता दर्शन....., हे शारदे माँ.....

जिनवाणी माता दर्शन की बलिहारियाँ।-2
प्रथम देव अरहन्त मनाऊँ, गणधर जी को ध्याऊँ।-2
कुन्दकुन्द आचार्य हमारे, तिनको शीश नवाऊँ ।।
हे! जिनवाणी माता..........सरस्वती माता
योनी लाख चौरासी माहिं, घोर महादुख पायो।
ऐसी महिमा सुनकर माता, शरण तुम्हारी आयो।।
हे! जिनवाणी माता..........सरस्वती माता
जाने थाँको शरणा लीनों, अष्ट कर्म क्षय कीनों।
जन्म मरण मिटा के माता, मोक्ष महापद दीनों।।
हे! जिनवाणी माता..........सरस्वती माता
ठाड़े श्रावक अरज करत हैं, हे जिनवाणी माता।
द्वादशाङ्ग चौदह पूरव की, कर दो हमको ज्ञाता।।
हे! जिनवाणी माता दर्शन की बलिहारियाँ।-2
सरस्वती माता दर्शन की बलिहारियाँ।

हे शारदे माँ........

हे शारदे माँ, हे शारदे माँ,
अज्ञानता से हमें तार देना।-2
मुनियों ने समझी गुणियों ने जानी,
शास्त्रों की भाषा आगम की वाणी।
हम भी तो जानें, हम भी तो समझें,
विद्या का फल तो हमें मातु देना ।।
हे शारदे माँ...........
तूँ ज्ञानदायी हमें ज्ञान दे दे,
रत्नत्रयों का हमें दान दे दे।
मन से हमारे मिटा दे अंधेरे,
हमको उजालों का शिव गार देना ।।
हे शारदे माँ...........
तूँ मोक्षदायी है संगीत तुझमें,
हर शब्द तेरा है हर भाव तुझमें।
हम हैं अकेले, हम हैं अधूरे,
तेरी शरण माँ, हमें तार देना ।।
हे शारदे माँ...........

प्रमाण-पत्र

भाव विज्ञान धार्मिक परीक्षा बोर्ड, भोपाल (म.प्र.)

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि संत शिरोमणि आचार्य प्रवर श्री 108 विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित धर्म प्रभावक आचार्यश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज की प्रेरणा तथा आशीर्वाद से प्रारम्भ की गई पाठशालाओं में शुरू किए विषय आगम अनुयोग, जैनागम संस्कार, जीवन संस्कार हैं। सर्वोदय सम्यग्ज्ञान शिक्षण शिविर एवं श्रावक साधना संस्कार शिविर में विद्यार्थी / श्रावक/श्राविका भाग लेते हैं । इन सभी की ज्ञान वृद्धि में प्रेरणा हेतु परीक्षा बोर्ड प्रारम्भ किया गया है।

सभी साधर्मी बन्धुओं से अनुरोध है कि वे शास्त्रों का अध्ययन करें तथा जो भी परीक्षा देना चाहते है वे परीक्षा देकर विधिवत् प्रमाण पत्र प्राप्त कर सकते हैं। प्रमाण पत्र को चार कलर मल्टी कलर में तैयार किया गया है। प्रमाण पत्र को इंटरनेट के माध्यम से भी प्राप्त कर उपयोग में ला सकते हैं। यदि प्रिंटेड प्रमाण पत्र चाहें तो उसकी अनुमानित लागत राशि चेक से भेज सकते हैं अथवा 'भाव विज्ञान' के स्टेट बैंक आफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट / कोर बैकिंग सुविधा के अन्तर्गत SB A/C No. 63016576171 एवं IFS CODE SB IN. 0030005 में नगद राशि सीधे जमा कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति भेजकर मनी रसीद प्राप्त कर सकते हैं।

पोस्ट भेजने का पताः भाव विज्ञान, 114, डी के काटेज, बावड़ियाकलां, दानापानी रेस्टॉरेन्ट के पास, भोपाल-462003 (म.प्र.) सम्पर्क : 9425601161, 9425011357, 9425601832, 7222963457 E-mail : bhav.vigyan@gmail.com

घर बैठे करें ऑनलाइन स्वाध्याय
भाव विज्ञान परीक्षा बोर्ड भोपाल द्वारा आयोजित
जिनागम प्रतियोगिता
धार्मिक पाठशाला
9174843674

आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज का जीवन परिचय

पूर्व नाम	-	पदमचंद जैन
पिता जी	-	श्री शिखरचंद जैन
माता जी	-	श्रीमती मायाबाई जैन
जन्मतिथि	-	11.9.1967, भाद्र शु. अष्टमी
जन्म स्थान	-	फुटेरा कलाँ, जिला- दमोह
व्यापार क्षेत्र	-	पथरिया, जिला- दमोह (म.प्र.) में
शिक्षण	-	बी.ए. (प्रथम वर्ष) सिटी कॉलेज, दमोह (म.प्र.)
ब्रह्मचर्य व्रत	-	19.12.1984, अतिशय क्षेत्र, पनागर (म.प्र.)
सातवीं प्रतिमा	-	1985, सिद्धक्षेत्र, अहारजी
क्षुल्लक दीक्षा	-	8.11.85, सिद्धक्षेत्र, अहारजी
ऐलक दीक्षा	-	10.7.1987, अतिशय क्षेत्र, थूबोनजी
मुनि दीक्षा	-	31.3.1988, सिद्धक्षेत्र, सोनागिरजी, महावीर जयन्ती सन् 1988
दीक्षा गुरु	-	आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज
आचार्यपद	-	25.01.2015 (माघ शुक्ल षष्ठी) को (समाधि पूर्व आचार्यश्री सीमंधरसागर जी द्वारा इंदौर में)
प्रकाशित रचनाएँ	-	धर्म-भावना शतक, जैनागम-संस्कार, तीर्थोदय-काव्य, परमार्थ-साधना, बचपन का संस्कार, सम्यक्-ध्यान शतक, आर्जव-वाणी, पर्युषण-पीयूष, आर्जव-कविताएँ, जिनवर-स्तुति, साम्य-भावना एवं आगम-अनुयोग, महात्मा सूक्ति काव्य, अध्यात्म सर्वोदय काव्य, गुरुगुण महिमा, आत्मोद्धार शतक।
पद्यानुवाद	-	गोमटेशथुदि, जिनागम-संग्रह (सामायिकपाठ, इष्टोपदेश, समाधितन्त्र, द्रव्य-संग्रह), तत्त्वसार एवं प्रश्नोत्तर-रत्नमालिका, भक्तामर स्तोत्र।